श्री जपुजी साहिब

और

श्री सुखमनी साहिब

सुखैन उर्दु नज़म में सटीक

टीकाकार :

खान बहादुर ख्वाजा दिल मुहम्मद

१ ओ अंकार सतिगुर प्रसादि ॥

देवनागरी लिपि में

श्री जपुजी साहिब

और

श्री सुखमनी साहिब

का

सरल उर्दू नज़्म में टीका

-टीकाकार-

खान बहादुर ख्वाज़ा दिल मुहम्मद एम.ए.

सब-रजिस्टरार और रिटायर्ड प्रिंसीपल

इस्लामिया कालेज लाहौर।

-देवनागरी लिपिकार-

ज्ञानी गुरचरन सिंघ, अमृतसर।

प्रकाशक :-

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ

अमृतसर।

ISBN 81-7601-412-5

तीसरी बार मई 2005

भेटा : 80-00

प्रकाशक:

भा. चतर सिंघ जीवन सिंघ

बाज़ार माई सेवां, अमृतसर।

फोन: (0183) 2542346, 2547974, 2557973

फैक्स: (0183) 2557973

E-mail : csjs@vsnl.com

Visit our Website : www.csjs.com

मुद्रक:– जीवन प्रिंटर्ज, अमृतसर। फोन: 2705003

प्रारम्भिक शब्द

श्री गुरु नानक देव जी की परम पावन वाणी श्री जपुजी साहिब और श्री गुरु अर्जुन देव जी की पवित्र वाणी श्री सुखमनी साहिब जी का लाखों प्रेमी हर रोज़ अमृत समय पाठ करके आत्मिक आनन्द प्राप्त करते हैं। इन वाणियों के गूढ़ भावों को प्रकट करने के लिए अनेक विद्वानों ने सरल टीके रचे हैं।

उच्च विद्वान स्वर्गवासी ख़ान बहादुर ख्वाज़ा दिल मुहम्मद जी एम.ए. ने इन पवित्र वाणियों को पढ़ा विचारा, आप को जो इन से आत्मिक आनन्द प्राप्त हुआ, इस के बारे में अपना अनुभव ऐसे लिखते हैं:-

१. जपुजी वह मुकदस[१] अरफानी[२] और रुहानी[३] पाक[४] कलाम है, जिसे लाखों इन्सान सुबह के सुहाने समय में अपने खालक[४] के हज़ूर में तवजुह[५] और शौक से पढ़ते हैं और उस के सामने अपने अजूज[६] का इज़हार करके आबद[७] और माबूद[८] का रिश्ता उसवार[९] करते हैं।

२. सुखमनी साहिब एक मुकदस[१०] नज़म है, जिसे सिक्ख मत्त के पांचवें रहनुमा श्री गुरु अर्जुन देव जी ने तसनीफ किया।...सुखमनी साहिब के अल्फाज़ एक ऐसे आरिफ हकीकी[११] के जज़बात[१२] का मुरकज[१३] हैं, जिसे हर तरफ खुदा ही की ज़ात और उसी का ज़माल[१४] और ज़लाल[१५] नज़र आता है। यह ऐसे दिल की आवाज़ है जो भक्ति और ज्ञान से भरपूर प्रेम और मुहब्बत से सरशार[१६], अपने मालिक और महबूब[१७] की याद में सरमस्त[१८] है और जिसे खुदा के सिवा कोई लगन नहीं।

---

१. पवित्र। २. ब्रह्म ज्ञानमई। ३. आत्मिक। ४. सृजनहार। ५. ध्यान जोड़ कर। ६. नम्रता। ७. भक्त। ८. परमात्मा। ९. दृढ़। १०. पवित्र। ११. ब्रह्मवेत्ता। १२. भावनाएं। १३. संग्रह। १४. सुन्दरता। १५. तेज। १६. परिपूर्ण। १७. प्रीतम। १८. मग्न।

ख्वाज़ा जी ने उपरोक्त दोनों वाणियों का आत्मिक आनन्द लिया और आगे उर्दू पढ़े प्रेमियों के लिए आप ने इन दोनों वाणियों का भावार्थ टीका सरल उर्दू कविता में किया और छपवाया। इस तरज़में की बड़ी प्रशंसा हुई। लाखों प्रेमियों ने इस को पढ़ कर आत्मिक रस लिया।

पंजाब गवर्नमैंट ने ख्वाज़ा साहिब को (देश विभाजन से पहले) एक हज़ार रुपया इस तरज़ में का इनाम दिया था।

उर्दू में इस पुस्तक के छपने पर अनेकों सिक्ख विद्वानों ने आपकी इस अमोलक रचना की भरपूर प्रसंसा की।

अब तक इस तरजमें से उर्दू पढ़े प्रेमी ही लाभ प्राप्त करते रहे हैं। हिन्दी पढ़े पाठकों के लिए इस उर्दू तरज़में को दास ने देवनागरी अक्षरों में लिखा है और कठिन शब्दों के अर्थ नीचे दिए हैं। हिन्दी पाठकों की पुरज़ोर मांग को मुख्य रख कर स. जगजीत सिंघ जी मालिक फर्म भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ जी पुस्तकों वाले, बाज़ार माई सेवां, अमृतसर ने इस को छपवा कर हिन्दी पढ़े पाठकों तक पहुंचाने का उद्यम किया है।

आशा है कि हिन्दी पढ़े पाठक इस रचना से आत्मिक लाभ प्राप्त करेंगे।

मैं सत्कार योग लासानी संशोधक ज्ञानी महिंदर सिंघ जी 'रत्न' का अति धन्यवादी हूं, जिन्होंने इस पुस्तक को शोधने की कृपालता की है।

अजीत नगर,
अमृतसर।
३०-४-८३

दास-
ज्ञानी गुरचरन सिंघ
देवनागरी लिपिकार।

जपु जी साहिब

१ओ अंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु

एकओंकार खुदा है वाहिद[१], सच्चा जिस का नाम।
कर्त्ता धर्ता दुनियां का, बेडर बे-लाग[२] मुदाम[३]।

अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

मौत से बाला[४], पाक जन्म से[५], काइम अपने आप[६]।
अपने गुर की रहिमत[७] से, तू नाम उसी का जाप।

॥ जपु ॥

इस वाणी का नाम 'जपु' है।

आदि सचु जुगादि सचु ॥

सच्चा रोजि अजल[८] से पहले, सच्चा रोजि अजल[८] भी वुह।

है भी सचु नानक होसी भी सचु॥ १ ॥

सच्च है वुह आज भी 'नानक', सच्चा होगा कल भी वुह[९]।

---

१. एक इकल्ला प्रभु सारे व्याप रहा है। २. निरवैर। ३. सदीवी। ४. मौत से ऊंचा। ५. जन्म मरण से रहित ६. अपने आप से आप पैदा हुआ है। (सैभं सुते सरूप) ७. कृपा। ८. रचना काल। ९. सत सरुप। ९. ओंकार अनादि, अनंत, भूत, भविष्य, और वर्तमान हर समय काइम है।

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥

सोच कीए कब सोच में आए, सोच ले लाखों बार करें।

चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥

चुप रहने से मन कब चुप हो, चुपके ध्यान हजार करें।

भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥

भूखे रह कर भूख न जाए, बांध क गो, कुल दुनियां लाएं।

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥

लाख हजार करें चतुराई, एक भी साथ न लेकर जाऐं।

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥

झूठ का परदा चाक हो किउं कर[१], सच वाले बच जाएं हम।

हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥ १ ॥

हुकमि रजा पर चलना 'नानक', साथ यह लिखा लाए हम ॥ १ ॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥

हुक्म से बन बन जाएं शकलें, हुक्म के भेद न खोले जाएं।

हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥

हुक्म से तन में रुहें[२] आएं, हुक्म से शान बढ़ाई पाएं।

हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥

हुक्म से इज्ज़त, हुक्म से दौलत हुक्म का लिखा सुख दुख पाएं।

इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥

हुक्म से इक पर बखशिश[३] हो, इक हुक्म से चक्कर खाते जाएं।

---

१. झूठ का पर्दा कैसे खत्म हो। २. आत्माएं। ३. मेहर।

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥

हुक्म खुदा में दुनियां सारी हुक्म से बाहर कोई न जाए॥

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥ २ ॥

हुक्म खुदा जो समझ 'नानक, अपनी 'हुं, मैं[१]' आप मिटाए॥ २॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥

गाऐ कौन खुदा की कुदरत, ताब[२] यह किस इन्सान में है।

गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥

गाए कौन खुदा की रहिमत[३], माहिर कौन निशान[४] में है।

गावै को गुण वडिआईआ चार ॥

गाए कौन खुदा की अजमत[५] आलीशान वकार[६] है उसका।

गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥

गाए कौन खुदा की हिकमत, मुश्किल सोच विचार है उसका।

गावै को साजि करे तनु खेह ॥

गाए कौन उसे जो तन को, जीनत[७] दे कर खाक खाक[८] बनाए।

गावै को जीअ लै फिरि देह ॥

गाए कौन उसे जो पैदा करके मारे और जिलाए।

गावै को जापै दिसै दूरि ॥

गाए कौन उसे जो हमसे, पास भी है और दूर भी है।

गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥

---

१. हउमै, हस्ती, होंद। २.हिम्मत, ताकत। ३. कृपा। ४. चिन्ह।
५. महिमा, बजुर्गी। ६. प्रतिष्ठा। ७. शोभा, रौनक। ८. मिट्टी।

गाए कौन उसे जो हाजर[१], नाजर[२] पाक हजूर भी है।

कथना कथी न आवै तोटि ॥

खत्म न होंगी उस की बातें सारा हाल ध्यान[३] न हो।

कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥

वसफ[४] करोड़ों, गायें करोड़ों, पूरी लेकिन शान न हो।

देदा दे लैदे थकि पाहि ॥

लेने वाले थक जाते हैं, दाता देता जाता है।

जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥

जुग जुग में हर खाने वाला, उसकी निअमत[५] खाता है।

हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥

हुक्म से अपने हाकम ने, दुनियां की राह दिखाई है।

नानक विगसै वेपरवाहु ॥ ३ ॥

खुद आनन्द[६] रहे वुह 'नानक, कैसी बेपरवाही है॥ ३॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥

सच्चा है वह मालिक सच्चा, सच्चा प्यारा नाम है उस का।
बेहद उलफत[७] बोली उस की, बेहद प्रेम-कलाम[८] है उस का।

आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥

दुनियां मांगे दाता बख्ख, जो मांगे हर बार मिले।

फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥

---

१. सब जगह मौजूद। २. सब दृष्टि। ३. वर्णन। ४. गुण, सिफतां। ५. उत्तम वस्तुएं। ६. प्रसन्न। ७. प्यारी। ८. प्यारा बचन।

पेश करें दरबार में क्या तोहफा[१], जिस से दीदार मिले।

मुहो कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु॥

मुंह से बात कहे क्या बंदा, जिससे मालिक प्यार करे।

अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु॥

नूर के तड़क[२] सच नाम अर, शान से सोच विचार मिल॥

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु॥

खिलयत पाएं फर्मो से[३], रहिमत से मुक्ति द्वार आए[४]॥

नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु॥ ४ ॥

सब कुछ आप वह सच्चा रब है, 'नानक' मन में ऐसा पाएं॥ ४॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ॥

कौन करे बुत काइम[५] उस का, कौन बनाने वाला है।

आपे आपि निरंजनु सोइ॥

आप से आप निरंजन[६] है वुह, इस माया से वाला[७] है।

जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु॥

जो पूजे हो मान[८] उसी का, पूजा मान का जीना[९] है।

नानक गावीऐ गुणी निधानु॥

हमद[१०] भी कर उसकी 'नानक' जो सब वसफों[११] गंजीना[१२] है।

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ॥

हमद भी कर तूं हमद भी सुन, जब मन में प्रेम बसायेगा।

---

१. उत्तम भेंट। २. अमृत वेला। ३. कर्मों से मनुष्य, शरीर मिलता है। ४. ईश्वर की कृपा से मुक्ति से मुक्ति प्राप्त होती है। ५. स्थापित करें। ६. माया से रहित। ७. ऊंचा। ८. इज्ज़त। ९. शोभा। १०. स्तुति। ११. सिफ्तां। १२. खजाना।

दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥

सब तेरे दुख दूर हटा कर, सब के घर ले जायेगा।

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥

गुर की बातें नाद[1] समझ ले गुर की बातें वेद समझ।
गुरमुख में वुह आप समाया, गुरमुख का यह भेद समझ।

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥

ईश्वर विष्णु ब्रह्मा तीनों मजहर[2] गुर की कुदरत के।
सरस्वती लक्ष्मी, पार्वती सब, नाम है गुर की कुवत[3] के।

जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥

जानुं भी गर उसकी बातें, किउ कर खोल सुनाऊं मैं। किउ कर बात सुनाउं उसकी, लफज कहां से लाऊं मैं।

गुरा इक देहि बुझाई ॥

अै गुर मुझ को ज्ञात अता[4] कर, एक अहद[5] को पाऊं मैं।

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ५ ॥

सभ दुनियां का एक ही दाता, उस को भूल न जाऊं मैं॥ ५॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥

तीर्थ का इश्नान यही है, अपने रब को भाऊं[6] मैं। रब को आप न भाऊं मैं, तो तीर्थ खाक नहाऊं मैं।

जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥

---

१. शब्द। २. प्रगटाव। ३. शक्ति। ४. बख्श देह। ५. एक मात्र ईश्वर। ६. अच्छा लगा।

जो जो मखलूकात[१] हुई, सब मैंने देखी भाली है। अच्छे कर्म न हों जब पल्ले, हाथ जजा[२] से खाली है।

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥

हीरे, लाल, जवाहर सब, दानश[३] में अपने पाए तू। गुर की एक हिदायत[४] सुन कर, काम में जब ले आए तू।

गुरा इक देहि बुझाई ॥

अै गुर मुझ को ज्ञान अता कर[५] एक अहद[६] को पाऊं मैं।

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ६ ॥

सब दुनियां का एक ही दाता, उस को भूल न जाऊं मैं॥ ६ ॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥

चार जुगों के अरसे जितनी, उमर जो पाए दुनियां में। उससे भी दहु चन्द[७] अगर हो, जीता जाए दुनियां में।

नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥

हर सू[८] तौ अकालीमों[९] पर, दुनियां में उसका नाम चले। आप चलें तो अरदल[१०] में, साथ उस के खलक[११] तमाम चले।

चंगा नाउ रखाइकै जसु कीरति जगि लेइ ॥

उसका नाम भी ऊंचा हो, और शुहरत[१२] भी हरजाई[१३] हो। नामवरी[१२] के साथ ही उसने, शोभा सब में पाई हो।

जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥

जिस पर रब का मेहर न हो, जो चशम करम[१४] से दूर रहे।

---

१. सृष्टि। २. पुण्यफल। ३. बुद्धि। ४. शिक्षा। ५. बख्श, देह। ६. एक मात्र ईश्वर। ७. दस गुना। ८. चारों और। ९. नौ खंड पृथ्वी। १०. अधीन होकर। ११. दुनियां। १२. मशहूरी। १३. चारों और। १४. कृपा, दृष्टि।

बात न उसकी पूछे कोई, रांदह[१] हो मकहूर[२] रहे।

कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे॥

कीड़ों में इक काढ़े जैसा, उस को लोग बनाएंगे।
जो खुद पापी दोषी है, वुह उसका दोष लगायेंगे।

नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे॥

'नानक' वुह रब ऐसा है, जो निर्गुण को गुण देता है।
गुणवाला इंसान हमेशां, उससे सब गुण लेता है।

तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे॥ ७॥

कोई न सूझे अैसा पूरे जो उसके एहसान करे।
कोई न सूझे ऐसा, जो उस दाता को गुणवान करे॥ ७॥

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ॥

नाम सुनने से सिद्धों, पीरों, सुर, नाथों को शान मिले।

सुणिऐ धरति धवल आकास॥

नाम सुनने से धरती, धवल, आकाश को भी पहचान मिले।

सुणिऐ दीप लोअ पाताल॥

नाम सुनने से जानें खितों[३], दुनिआउं, पातालों को।

सुणिऐ पोहि न सकै कालु॥

नाम सुनने से दूर करें हम, मौत के सब जंजालों को।

नानक भगता सदा विगासु॥

'नानक' भक्ति वाले दाइम[४] खुशियां खूब मनाते हैं।

---

१. त्यागा हुआ। २. प्रकोप में पड़ा। ३. प्रदेश। ४. चिरस्थाई, सर्वकालिका, हमेशा रहने वाला।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ८ ॥

नाम प्रभु का सुनने से दुख पाप सभी कट जाते हैं ॥ ८ ॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥

नाम सुनने से ईश्वर ब्रह्मा, इंद्र जैसा रुतबा[1] पाएं।

सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥

नाम सुनने से नीच कमीने सब में खूब सराहे[2] जाएं।

सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥

नाम सुनने से रास्ता पाएं, योग और तन के भेदों का।

सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥

राज[3] खुले सब समृतयों का, शास्तरों का वेदों का।

नानक भगता सदा विगासु ॥

नानक भक्ति वाले दाइम[4] खुशीयां खूब मनाते हैं।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ९ ॥

नाम प्रभु का सुनने से, दुख पाप सभी कट जाते हैं। ९ ॥

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥

नाम खुदा का सुन सुन कर, पाएं सबर[5] और ज्ञान मिले।

सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥

नाम खुदा का सुन सुन कर अठसठ[6] तीर्थ[7] का स्नान मिले।

सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥

१.पदवी। २. सलाहे जाते हैं। ३. भेत। ४. हमेशा। ५. संतोष। ६. ६८ तीर्थ। ७. पवितर अस्थान।

नाम खुदा का पढ़ सुन कर, इन्सान की इज्ज़त शान भी हो।

सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥

नाम खुदा का सुन कर हासल, आसानी से ध्यान भी हो।

नानक भगता सदा विगासु ॥

'नानक' भक्ति वाले दाइम[१] खुशियां खूब मनाते हैं।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

नाम खुदा का सुनने से, दुःख पाप सभी कट जाते हैं।

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥

नाम को सुन कर नेकी के, दरिआऊं में पैदल राह मिले।

सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥

नाम को सुन कर शेख बने और पीर बने और शाह बने।

सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥

नाम खुदा का सुनने से, अन्धे को उसकी राह मिले।

सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥

नाम खुदा का सुनने से, बेथाह की हमको थाह मिले[३]।

नानक भगता सदा विगासु ॥

नानक भक्ति वाले दाइम[४] खुशियां खूब मनाते है।

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ११ ॥

'नाम खुदा का सुनने से, दुःख पाप सभी कट जाते हैं ॥११॥

---

१. सदीवी। २. रास्ता। ३. संसार सागर की थाह मिलती है। ४. सदीव काल।

मंने की गति कही न जाइ॥

मन से जो मानेगा रब को, उस की हालत कौन बताए॥

जे को कहै पिछै पछुताइ॥

जो कहना भी चाहे उसको, वह भी आखिर को पछताए।

कागदि कलम न लिखणहारु॥

कैसा कागज़ और कलम से, कौन सा लिखने वाला है।

मंने का बहि करनि वीचारु॥

मन से जो मानेगा रब को, तारीफों से वाला[१] है।

ऐसा नामु निरंजनु होइ॥

ऐसा नाम निरंजन का है, कोई जो मन से जानेगा।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥१२॥

कोई कोई जानेगा, और कोई कोई मानेगा[२] ॥ १२ ॥

मंनै सुरति होवै मनि बुधि॥

मन से जो मानेगा उस को, सोच समझ वेदा[३] रहे।

मंनै सगल भवण की सुधि॥

मन से जो मानेगा[४] उस पर, रोशन सब संसार रहे।

मंनै मुहि चोटा ना खाइ॥

मन से उसको जो माने, वह मुंह पर चोट न खाएगा।

मंनै जम कै साथि न जाइ॥

---

१. ऊंचा। २. निरंजन अकाल पुरख की अपार महिमा का लिखना या वर्णन करना मनुष्य के वश नहीं। कोई भगत ही ऐसा भगवान होता है जो मान कर उस को पहचानता है। ३. जागृत। ४. सच्चे मन जो मानेगा।

मन से उसको जो मानेगा, यम[१] के साथ न जाऐगा।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

ऐसा नाम निरंजन का है, कोई जो मन से जानेगा।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३ ॥

कोई कोई जानेगा, और कोई कोई मानेगा ॥ १३ ॥

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥

मन से जो मानेगा, उसके रास्ते में कुछ रोक न आए।

मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥

मन से जो मानेगा, ऊंची शान और इज्ज़त लेकर जायेगा।

मंनै मगु न चलै पंथु ॥

मन से उस को जो मानेगा, वह गुमराही[२] से बचता जाये।

मंनै धरम सेती सनबंधु ॥

मन से उसको जो मानेगा, वह धर्म से पक्का नाता[३] पाए।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

ऐसा नाम निरंजन का है, कोई जो मन से जानेगा।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १४ ॥

कोई कोई जानेगा, और कोई कोई मानेगा ॥ १४ ॥

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥

मन से जो मानेगा उस पर, दर मुक्ति[४] के खुलते जाएं।

---

१. यमदूत साथ नहीं जाएगा। २. भूलन भटकन से बच जायेगा। ३. रिश्ता। ४. मुक्त द्वार (ज्ञान)

मंनै परवारै साधारु ॥

मन से जो मानेगा उस के परिवार वाले मुक्ति पाएं।

मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥

माने से गुरु पार लगे सब, चेलों को भी पार लगाएं।

मंनै नानक भवहि न भिख ॥

मन से जो माने सो 'नानक' भीख[१] के चक्कर से बच जाए।

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

ऐसा नाम निरंजन का है, कोई जो मन से जानेगा।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १५ ॥

कोई कोई जानेगा, और कोई कोई मानेगा॥ १५॥

पंच परवाण पंच परधानु ॥

जो मकबूल खुदा[२] के हैं, परवान भी हैं, प्रधान भी हैं।

पंचे पावहि दरगहि मानु ॥

जो खुदा के हैं, दरगाह में पाते शान[३] भी है।

पंचे सोहहि दरि राजानु ॥

जो मकबूल खुदा के हैं, वह राज-सभा का मान बढ़ाऐं।

पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥

जो मकबूल खुदा के हैं, इक गुरु पर अपना ध्यान जमाए।

जे को कहै करै वीचारु ॥

लाख कहे इन्सान मगर, कुदरत की थाह न पायेंगा।

---

१. भिक्षा। २. परमेश्वर के प्यारे। ३. सत्कार, इज्ज़त।

करते कै करणै नाही सुमारु ॥

खालक[१] की खलकत[२] का उस को, अंत शुमार न आएगा।

धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥

जिस के सींगों पर है धरती, धर्म दया का पूत है यह।

संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥

सबर से कायम रहती है, इक तोल है यह, इक सूत[३] है यह।

जे को बुझै होवै सचिआरु ॥

जो इस बात को समझा है, वह सच्चा है वह ज्ञानी है।

धवलै उपरि केता भारु ॥

बैल उठाए सींघ पे इतना बोझ, अजीब हैरानी है।

धरती होरु परै होरु होरु ॥

दूर जमीं से और जमीनें, उन से आगे और जहां[४]।

तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥

उन के नीचे जोर है किस का, काइम है किस तौर वहां।

जीअ जाति रंगा के नाव ॥

गूना गूनी[५] खलकत सारी, रंगा रंग इकसाम[६] कभी।

सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥

लिखे लिखने वालों ने, बेरोक कलम से नाम सभी।

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥

---

१. सिरजनहार। २. सृष्टि। ३. मर्यादा। ४. लोक दुनियां। ५. भांति भांति की। ६. किस्में।

कौन भला लिख सकता है, यह गिनती हो मरकूम[१] कहा।

लेखा लिखिआ केता होइ ॥

इस गिनती की गिनती, गिनती वालों को मालूम कहां।

केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥

कितनी तेरी ताकत है, क्या सुन्दर रूप सुहाना है।

केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥

कितनी दात और रोजी बख्शी, किसने उसको जाना है।

कीता पसाउ एको कवाउ ॥

हरफ[२] कहां जब एक ही तू ने फैले आलम[३] सारे हैं।

तिस ते होए लख दरीआउ ॥

हरफ कहां जब एक ही तने, फूटे लाखों धारे हैं।

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

मुझ में कब ये कुदरत है, मैं तेरा सोच विचार करूं।

वारिआ न जावा एक वार ॥

मैं इस लायक कज[४] हूं, तुझ पर जान फिदा[५] इक बार करुं।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

कार वो अच्छा है जिस को, समझें अच्छा कार तू हो।

तू सदा सलामति निरंकार ॥ १६ ॥

तेरी जात सलामत दाइम[६] पाक है निरंकार[७] तू ही ॥ १६ ॥

१. कहाँ लिखी जा सकती है। २. शब्द ('कुन' शब्द से संसार उत्पन हुआ)। ३. सृष्टियाँ। ४. समर्था। ५. कुर्बान। ६. सदीवी। ७. निरंकार, भाव-जिसकी कोई शक्ल न हो।

असंख जप असंख भाउ॥

संखों[१] ही जप करते हैं और संखों इश्क मुहब्बत भी।

असंख पूजा असंख तप ताउ॥

संखों पूजा करते हैं, और संखों लोग रिआजत[२] भी।

असंख गरंथ मुखि वेद पाठ॥

संखों लोग ग्रंथों और वेदों का पाठ सुनाते हैं।

असंख जोग मनि रहहि उदास॥

संखों जिन के मन में उदासी, बन में योग कमाते हैं।

असंख भगत गुण गिआन वीचार॥

संखों ही गुण तेरे सोचें, भगत वोह ज्ञानी होते हैं।

असंख सती असंख दातार॥

संखों सतगुण[३] वाले हैं, और संखों दानी होते हैं।

असंख सूर मुह भख सार॥

संखों शेर बहादुर हैं, तलवार जो मुंह पर खाते हैं।

असंख मोनि लिव लाइ तार॥

संखों चुप गुप रहि रहि कर, बस तुझ में ध्यान लगाते हैं।

कुदरति कवण कहा वीचारु॥

मुझ में कब यह कुदरत[४] है, मैं तेरा सोच विचार करुं।

वारिआ न जावा एक वार॥

मैं इस लाइक कहाँ हूं, तुझ पर जान फिदा इक बार करुं।

---

१. अनेकों, बे-गिणत। २. तपस्या। ३. अच्छे गुणों वाला। ४. समर्था।

जो तुधु भावै साई भली कार॥

कार वो ही अच्छा है जिस को, समझे अच्छा कार तू ही।

तू सदा सलामति निरंकार॥ १७॥

तेरी जात सलामत दाइम, पाक है निरंकार तू ही॥ १७॥

असंख मूरख अंध घोर॥

संखों मन के अंधे हैं, और मूर्ख मन के खाम बहुत।

असंख चोर हरामखोर॥

संखों चोरी करते हैं, और खाएं माल हराम बहुत।

असंख अमर करि जाहि जोर॥

संखों जाबर जोर के बल पर, अपना हुक्म चलाते हैं।

असंख गलवढ हतिआ कमाहि॥

संखों गर्दन काटे मूजी, जालम खून बहाते हैं।

असंख पापी पापु करि जाहि॥

संखों ऐसे पापी हैं, जो पाप कमाते जाते हैं।

असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि॥

संखों ऐसे झूठे हैं, जो झूठी बात लगाते हैं।

असंख मलेछ मलु भखि खाहि॥

संखों हैं नापाक नजिस[१] जो गंदी चीजें खाते हैं।

असंख निंदक सिरि करहि भारु॥

संखों गैबत[२] करते हैं, गर्दन पर बोझ[३] उठाते हैं।

---

१. गंदे। २. निंदा। ३. निंदा का भार।

नानकु नीचु कहै वीचारु॥

'नानक' आजिज[1] कहता है, जितना भी सोच विचार करुं।

वारिआ न जावा एक वार॥

मैं इस लायक कब हूं, तुझ पर जान फिदा[2] इक बार करूं।

जो तुधु भावै साई भली कार॥

कार वोही अच्छा है जिस को समझे अच्छा कार तू ही।

तू सदा सलामति निरंकार॥ १८॥

तेरी जात सलामत दाइम, पाक है निरंकार तू ही॥ १८॥

असंख नाव असंख थाव॥

संखों तेरे नाम भी हैं, और संखों ही अस्थान भी हैं।

अगंम अगंम असंख लोअ॥

जिन तक जाना नामुमकिन[3] है, संखों और जहान भी हैं।

असंख कहहि सिरि भारु होइ॥

संखों कहना यह भी अपने, सर पर बोझ उठाना है।

अखरी नामु अखरी सालाह॥

हरफों से ही नाम बना, हरफों से हमद[4] सुनाना है।

अखरी गिआनु गीत गुण गाह

हरफों ही से ज्ञान बताएं, गीत गुणों के गाते हैं।

अखरी लिखणु बोलणु बाणि

हरफों ही से बोल बने, जो लिखे बोले जाते हैं।

---

१. दास। २. कुर्बान। ३. असम्भव। ४. उस्तति।

अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥

हरफों ही से माथे पर, संजोग भी पहले लिखा है।

जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥

लेकिन लिखने वाले के, माथे पर किस ने लिखा है।

जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥

वैसा वैसा मिलता है, वह जैसा जैसा कहता है।
मिलता है जो कहता है, जो कहता है मिल रहता है।

जेता कीता तेता नाउ ॥

जितनी मखलूकात[1] हुई, खालक[2] का उतना नाम हुआ।

विणु नावै नाही को थाउ ॥

नाम जहां मौजूद नहीं, वह बोलो कौन मुकाम[3] हुआ।

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

कौन सी मुझ में कुदरत है, मैं तेरा सोच विचार करूं।

वारिआ न जावा एक वार ॥

मैं इस लाइक कब हूं, तुझ पर जान फिदा इक बार करूं।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

कार वोही अच्छा है जिस को समझे अच्छा कार तू ही।

तू सदा सलामति निरंकार ॥ १९ ॥

तेरी जात सलामत दाइम, पाक[4] है निरंकार तू ही ॥ १९ ॥

---

१. सृष्टि। २. प्रमेश्वर। ३. टिकाना। ४. पवित्र।

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥

हाथ भरें या पैर भरें, या तन से चिमटे खाक कभी।

पाणी धोतै उतरसु खेह ॥

पानी से जब धो डालें, हो खाक से फौरन साफ सभी।

मूत पलीती कपड़ु होइ ॥

मैल नजासत[१] लगने से, नापाक जो कपड़ा होता है।

दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥

दूर पलीदी[२] हो जाए, तू साबन से जब धोता है।

भरीऐ मति पापा कै संगि ॥

ऐसे ही जब मन हो मैला, पाप की गंदी बातों से।

ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥

नाम खुदा की उलफत[३] से, वह पाप सभी धुल जायेंगे।

पुंनी पापी आखणु नाहि ॥

कहने से हो नेक कहां, कहने से हो बदकार[४] कहां।

करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥

काम तू जो जो करता है, सब जाए लिखा साथ वहां।

आपे बीजि आपे ही खाहु ॥

आप ही बोए[५] आप ही काटे, बोता है सो खाता है।

नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ २० ॥

हुक्म खुदा से आए 'नानक हुक्म खुदा से जाता है ॥ २० ॥

---

१. गंदगी। २. अपवित्र। ३. ईश्वरी प्रेम। ४. बुरा। ५. बीजे।

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥

तीरथ जाए जुहद[1] कमाए, खूब दया पुन दान करे।

जे को पावै तिल का मानु ॥

लेकिन फल तिल जितना पाए, जिस पर मान गुमान करे।

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥

बंदा सुन सुन कर जो मानेख प्रेम से दिल में ध्यान धरे।

अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥

अपने मन के तीरथ में वह, मल मल कर स्नान करे।

सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥

तू वसफों का वालो मालक[2], गुण का मुझ में नाम नहीं।

विणु गुण कीते भगति न होइ ॥

जब तक वसफ[3] न हों कुछ पले, भक्ति से कुछ काम नहीं।

सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥

माया शब्द और ब्रह्माओं का, खालक खैर अंदेश खुदा।

सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥

तू सत चित आनन्द है सुन्दर, तुझ को हो प्रणाम सदा।

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥

कौन सा वह वक्त जमाना, कौन सा दिन तारीख वह थी।

कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥

मौसम और महीना क्या था, नींव रखी जब दुनीयां की।

---

१. तप। २. हे गुणों के स्वामी ! सारे गुण तेरे ही प्रकाश रहें हैं।
३. शुभ गुण।

वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु॥

पंडत तक्त लगन गर पाते, लिखते साफ पुराण में वह।

वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु॥

काजी जानते साइत[१] तो, लिख देने सब कुरान में वह।

थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई॥

दिन तारीख, महीना, मौसम जोगी को मालूम कहां।

जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई॥

पाने तो वह खालक जानें, जिससे है आबाद जहाँ[२]।

किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा॥

किउं कर बोलूं हमद[३] करुं, या शरह करुं या जानू मैं।

नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा॥

'नानक' कहने को सब कह दे, सब चढ़ चढ़ कर सिआने हैं।

वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै॥

नाम बड़ा और शान बड़ी, जो चाहे सो हो जाता है।

नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै॥ २१॥

'नानक' जो अहंकारी[४] हो, कब आगे इज्ज़त पाता है।

पाताला पाताल लख आगासा आगास॥

लाखों हैं पाताल यहां, पातालों के पाताल भी हैं।

फैले लाखों आकाशों पर, आकाशों के जाल भी हैं।

---

१. समय, वक्त। २. सृष्टि कब और कैसे बनी। इस को बताने वाला कोई नहीं। इसकी सृष्टि करता ही जानता है। ३. उस्तति। ४. घमण्डी।

ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात॥

अंत न पाइया ढूंढ थके हम, वेद यही इक बात बताएं।

सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु॥

सब अठारह हजार किताबें, असल इक जात तेरी बताएं।

लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु॥

लिखने वाले मिट जाते हैं, शरह[१] न लिखी जाए कभी।

नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु॥ २२॥

'नानक' कहि रब सब से आली[२] जाने अपनी शान वही॥ २२॥

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ॥

करते हैं तौसीफ[३] खुदा की, लेकिन है आगाह[४] कहां।

नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि॥

नदियां नाले जाएं समुंद्र, लेकिन पाएं थाह[५] कहां।

समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु॥

पर्बत जितनी दौलत हो, और हो सुलताल[६] समुन्दर का।

कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि॥ २३॥

उस चींटी[७] के तोल[८] नहीं, हो जिस के मन में याद खुदा।

अंतु न सिफती कहणि न अंतु॥

अंत नहीं कुछ वसफों[९] का, कुछ तेरी सना[१०] का अंत नहीं।

अंतु न करणै देणि न अंतु॥

---

१. प्रभु का हुक्म। २. ऊंचा। ३. सिफत, प्रशंसा। ४. जान। ५.अंत। ६. बादशाह। ७. कीड़ी। ८. बराबर। ९. सिफतां, गुणों। १०. तारीफ।

अंत नहीं कुछ कुदरत का, कुछ तेरी अता[१] का अंत नहीं।

अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु॥

अंत नहीं आवाजों का, नज़ारों का कुछ अंत नहीं।

अंतु न जापै किआ मनि मंतु॥

अंत नहीं कुछ भेदों का, इसरारों[२] का कुछ अंत नहीं।

अंतु न जापै कीता आकारु॥

अंत नहीं कुछ खलकत का संसार का तेरे अत नहीं।

अंतु न जापै पारावारु॥

पार का तेरे अंत नहीं, और वार का तेरे अंत नहीं।

अंत कारणि केते बिललाहि॥

तेरा अंत समझने का, बेअंत पढ़े चिल्लाते हैं।

ता के अंत न पाए जाहि॥

लाख यत्न करते हैं लेकिन, अंत न तेरा पाते हैं।

एहु अंतु न जाणै कोइ॥

तेरा अंत न कोई जाने, तेरी थाह[३] न पाई है।

बहुता कहीऐ बहुता होइ॥

जितना जितना कहते जाएं, उतनी और बड़ाई है।

वडा साहिबु ऊचा थाउ॥

जाने कौन बड़ाई तेरी, ऊंचा पाक मुकाम[४] तेरा।

ऊचे उपरि ऊचा नाउ॥

१. देन, दात। २. रहस्य। ३. अन्त। ४. पवित्र टिकाना।

ऊंचों से भी ऊंचों से है, ऊंचा या रब नाम तेरा।

एवडु ऊचा होवै कोइ ॥

इतना ऊंचा कौन भला जो, उस ऊंचे को जानेगा।

तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥

सब ऊचों से ऊंचा हो, जब ऊंचों को पहचानेगा।

जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥

जाने आप बढ़ाई अपनी, समझे अपनी अजमत[1] को।

नानक नदरी करमी दाति ॥ २४ ॥

चशमि-कर्म[2] से 'नानक बखशिश हो और रहिमत[3] हो ॥ २४ ॥

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥

कितनी उस की बखशिश है, यह किस से न लिखी जाती है।

वडा दाता तिलु न तमाइ ॥

आलो है वह दाता, उस को, हिरस[4] तमा[5] कब आती है।

केते मंगहि जोध अपार ॥

कितने हैं बलवान बहादुर, भीख जो उससे पाते हैं।

केतिआ गणत नही वीचारु ॥

जो भिखमंगे उस के दर के, गिनती में कब आते हैं।

केते खपि तुटहि वेकार ॥

कितने वह बदकिस्मत हैं, जो पापी हैं बदकार भी हैं।

---

१. महत्व, बजुर्गी, बड़ाई। २. कृपा दृष्टि। ३. मेहर। ४. लोभ। ५. लालच।

घुल घुल कर वुह बदीओं में, इस जीने से बेजार[१] भी हैं।

केते लै लै मुकरु पाहि ॥

कितने उस से लेने वाले, साफ मुकरते जाते हैं।

केते मूरख खाही खाहि ॥

कितने मूर्ख पेटू हैं, जो अलम-गलम[२] खाते हैं।

केतिआ दूख भूख सद मार ॥

कितने दाइम[३] भूखे मर कर, दुःख से जान गंवाते हैं।

एहि भि दाति तेरी दातार ॥

दाता यह भी दाद[४] है तेरी, सब कुछ तुझ से पाते हैं।

बंदि खलासी भाणै होइ ॥

बंदिश[५] तेरी मर्जी है, आज़ादी तेरी मर्जी है।

होरु आखि न सकै कोइ ॥

किस की ताकत कान कहे, यह मर्जी मेरी मर्जी है।

जे को खाइकु आखणि पाइ ॥

मूर्ख तेरी बातों में, जो कोई नुक्स[६] बताता है।

ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥

जब वह मुंह की खाता है, तब होश उसे आ जाता है।

आपे जाणै आपे देइ ॥

आप ही सब कुछ जाने दाता, आप ही देता रहता है।

आखहि सि भि केई केइ ॥

---

१. दुखी। २. भख, अभख। ३. हमेशा। ४. बखशीश, दात। ५. बन्धन। ६ ऐब।

बात यह अपने मन से लेकिन, कोई कोई कहता है।

जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥

जिसको बखशे हमद[१] की ताकत, वह बंदा जीजाह[२] हुआ।

नानक पातिसाही पातिसाहु ॥ २५ ॥

'नानक' वह राजों का राजा, वह शाहों का शाह हुआ ॥ २५ ॥

अमुल गुण अमुल वापार ॥

गुण भी हैं अनमोल[३] तेरे, अनमोल तेरा व्यापार भी हैं।

अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥

व्यापारी अनमोल तेरे, अनमोल तेरा भण्डार[४] भी है।

अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥

आते हैं अनमोल यहां, ले जाते हैं अनमोल यहां।

अमुल भाइ अमुला समाहि ॥

भाउ भी है अनमोल समां[५] भी, पाते हैं अनमोल यहाँ।

अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥

धर्म भी है अनमोल तेरा, अनमोल तेरा दीबान भी है।

अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥

बाट भी है अनमोल तेरे, अनमोल तेरी मीजान[६] भी है।

अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥

बखशीश भी है अनमोल तेरी, अनमोल है मुहर निशान तेरा।

---

१. उस्तति। २. ऊंची पदवी वाला। ३. जिसका कोई मूल्य न पा सके। ४. खजाना। ५. दृश्य। ६. जोड़।

अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥

रहम करम अनमोल तेरे, अनमोल सदा फरमान तेरा।

अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥

तू कितना अनमोल है या रब, तेरी बातें कौन बताए।

आखि आखि रहे लिव लाइ ॥

तेरी बातें कह-कह कर सब दुनियां दुनियां तुझ पर ध्यान लगाए।

आखहि वेद पाठ पुराण ॥

कहते हैं तेरी ही बातें, वेदों और पुराणों में।

आखहि पड़े करहि वखिआण ॥

जिकर है तेरी शानों का, वाअजों[१] में और बयानों[२] में।

आखहि बरमे आखहि इंद ॥

हमद[३] करे ब्रह्मा भी तेरी, इंद्र भी तारीफ करें।

आखहि गोपी तै गोविंद ॥

गुन गाए हर गोपी भी, गोविन्द तेरी तौसीफ[३] करें।

आखहि ईसर आखहि सिध ॥

हमद[३] कहे ईश्वर[४] भी, सिध[५] भी तेरी शान बताऐं।

आखहि केते कीते बुध ॥

जितने बोध[६] बनाए तूने, सारे तेरी महिमां गाऐं।

आखहि दानव आखहि देव ॥

---

१. उपदेशों में। २. कथनों में। ३. उस्तति। ४. शिव। ५. सिद्ध जन (जैन)। ६. बुध।

देव तेरे गुण गाते हैं, जनात[1] भी तेरी शान बताएं।

आखहि सुरि नर मुनि जन सेव॥

सेवक भगत मुनि सब पूजें, तेरी हमद मलाइक[2] गाऐं।

केते आखहि आखणि पाहि॥

तेरी महिमां करने वाले, कितने कितने आते हैं।

केते कहि कहि उठि उठि जाहि॥

कितने लोग शनाखवां[3] हैं जो कह कह कर उठ जाते हैं।

एते कीते होरि करेहि॥

तेरी जितनी दुनीआएं हैं, उतने हों गर और जहां।

ता आखि न सकहि केई केइ॥

वसफ तेरे सब मिल मिल कर गिन सकती है मखलूक कहां।

जेवडु भावै तेवडु होइ॥

जितनी चाहे शान बढ़ाई, उतनी शान बढ़ाई हो।

नानक जाणै साचा सोइ॥

'नानक' साहिब सच्चा जाने, अपनी आप बढ़ाई को।

जे को आखै बोलु विगाड़ु॥

शान में उसकी गुस्ताखी[4], यह काम तो है बदकारी[5] का।

ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु॥ २६॥

ऐसा शख्स गंवार नहीं, वह है सरदार गंवारों का॥ २६॥

---

१. दानव। २. मालक। ३. गुण गाने वाला। ४. बेअदबी। ५. बुरे।

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥

वह दर[1] कैसा, वह घर[2] कैसा, जिस में बैठा काम चलाए॥

वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥

संखों नाद और बाजे उस में, कितनी दुनियां साज बजाए।

केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥

कितने राग और रागनिआं हैं, कितने रागी राग सुनाएं।

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥

गाऐं पानी, आग, हवा और धरमु राजा दर पर गाएं।

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥

चित्र और गुप्त भी गाएं जिन का, लिखा धर्म विचारे आप।

गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥

गाऐं ईश्वर ब्रह्मा देवी, जिन का रूप संवारे आप।

गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥

गाऐ तख्त पे बैठे इंद्र, दर पर देव तुम्हारे गाऐं।

गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥

गाऐ सिद्ध समाधि में और, सोच में साधु सारे गाऐं।

गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥

गाऐ जत सत वाले साबर[3], ताकत वाले वीर[4] भी गाऐं।

गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥

गाऐ पंडित, गाऐ ऋषि, जुग जुग के वेद जो पढ़ते जाऐं।

---

१. दरवाजा। २. अस्थान, टिकाना। ३. संतोषी। ४. बहादुर।

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले॥

चरख[१], जिमीं, पातालों में सब, गाऐं हूरे[२] मन मोहन।

गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले॥

गाऐं अठसठ तीर्थ[३] भी, और तेरे हीरे लाल रत्न।

गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे॥

गायें जगी बीर बहादुर, चारों काने[४] गाती हैं।

गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे॥

तेरे थामें खित मडल और दुनीआयें गाती हैं।

सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले॥

गायें भगत प्रेमी सब, जो तेरे मन को भाते हैं।

होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे॥

गायें कितने और भी 'नानक' याद कहां सब आते हैं।

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई॥

सच्चा हरदम साहिब सच्चा, नाम उसका सच्चाई है।

है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई॥

है और हो भी, जाए न गुम हो, रचना जिस ने रचाई है।

रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई॥

गूना गूनी[५] जिस की माया, रंगा रंग सजाई है।

करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई॥

---

१. आकाश। २. अप्सरा। ३. तीर्थ। ४. चार प्रकार की उत्पतियां (अंडज, जेरज, सेसज, उतभुज)। ५. विचित्र। कई प्रकार की।

आप बनाए, आप हो देख, कितनी शान बढ़ाई है।

जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई॥

जो चाहे सो करता है, कुछ चलता किस का कहना है।

सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ २७ ॥

शाहों के उस शाह की 'नानक' खास रजा[१] पर रहना है॥ २७॥

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति॥

मुंदरे[२] सरम[३] कनाइत[४] के हों पत[५] की तेरी झोली हो।
राख भभूत के बदले तन पर, ध्यान की खाकी झोली हो।

खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति॥

तन को पाक कंवारी जैसा, मौत की कफनों डाले तूं।
लेकर सिदक यकीन[६] का डंडा, शक को मार निकाले तूं।

आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु॥

सब फिरकों को एक समझ ले, आई पंथी[७] रीत है यह।
मन को तूने जीत लिया, तो सारे जग की रीत है यह।

आदेसु तिसै आदेसु॥

उस को है आदेश[८] सदा, आदेश सदा, आदेश सदा।

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु॥ २८॥

अबल[९], पाक[१०], अनादि[११], अबदी[१२], जुग-३ में इक भेस सदा॥

१. भाणा। २. कनां विच पाण वालीआं जोगीआं दीआं मुंदरां। ३. मेहनत। ४. संतोष। ५. इज्ज़त। ६. विश्वास। ७. जोगीओं का एक बड़ा फिरका। ८. नमस्कार। ९. आरम्भ से। १०. पवित्र। ११. जिसके आदि का कोई पता न हो। १२. अखण्ड (आरम्भ सदा एक रूप)

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥

ज्ञान को अपना भोजन कर ले, रहम तेरा भण्डारी हो।
हर मन में जो नाद बजे, वह नाद तेरी किलकारी हो।

आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥

नाथे हैप सब नाथ में जिस की, नाथ वही हो नाथ तेरा।
दौलत जोर करामत उन के, साथी से क्या साथ तेरा।

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥

वसल[१] और हिजर[२] यही दोनों, दुनियां का काम चलाते हैं।
किस्मत में जो लिखे हैं, वह भाय हमें मिल जाते हैं।

आदेसु तिसै आदेसु ॥

उस को है आदेश सदा, आदेश सदा आदेश सदा।

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ २९ ॥

अवल, पाक, अनादि, अवधि, जुग जुग में इक भेष सदा। २९।

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥

कहते है जब माया माई[३] पास खुदा के आई है।
देवता उस तीन[४] जने, तीनों के हाथ खुदाई है।

इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥

इक संसार बनाता है, और इक रोजी[५] पहुंचाता है।
इक जांचे इअमाल[६] जहां के, वह दीबान[७] लगाता है।

जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥

---

१. संयोग। २. वियोग। ३. माया रुपी इस दुनियां की माता। ४. तीन देवतेः-ब्रह्मा, विषणु, महेश। ५. रिजक। ६. अमल। ७. सभा।

लेकिन सच पूछो तो दुनियां, हुक्म खुदा से चलती है।
जैसे जैसे हुक्म करे, यह वैसे वैसे चलती है।

ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥

वह उन सब को देखे भाले, सब का हरदम ध्यान करे।
आप रहे आँखों से ओझल[1] आकिल[2] को हैरान करे।

आदेसु तिसै आदेसु ॥

उसको है आदेख सदा, आदेश सदा, आदेश सदा।

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३० ॥

अवल, पाक अनादि अबदी, जुग जुग मैं इक भेस सदा ॥ ३० ॥

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥

हम आलम[3] में तख्त उसी का, हर जुग में भण्डार[4] भरे।

जो किछु पाइआ सु एका वार ॥

जब ही वह भण्डार भरे, भण्डार तमाम इक बार भरे।

करि करि वेखै सिरजणहारु ॥

आप बनाए आप ही देखे, सब का सिरुजनहार है वह।

नानक सचे की साची कार ॥

'नानक' सच्चे काम सब उस के, हां सच्ची सगकार है वह।

आदेसु तिसै आदेसु ॥

उस को है आदेश सदा, आदेश सदा, आदेश सदा।

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३१ ॥

---

१. ओहले। २. वह सब को देखता है, उस को कोई नहीं देखता। यही आश्चर्य है। ३. दुनिया। ४. जखीरा, गुदाम।

अवल, पाक, अनामि अबदी, जुग जुग में इक भेष सदा॥ ३१॥

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस॥

एक के बदले लाख जबानें, मुँह में मेरे आयें अगर।
इक इक की फिर बीस बनें, यह बीस गुना हो जायें अगर।

लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस॥

लाखों बार उन लाखों पर, जब नाम खुदा का लाऊं मैं।

एतु राहि पति पवड़ीअ चड़ीऐ होइ इकीस॥

इस रिश्ते यह जीना[१] चढ़ कर, वसल[२] खुदा से पाऊं मैं।

सुणि गला आकास की कीटा आई रीस॥

'नानक' सुन कर अरश[३] की बातें, कीडों को भी आए रीस।

नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस॥ ३२॥

रहिमत[४] से खुद मिलता हैं वह बकी झूठ, बिसवे बीस[५]॥ ३२॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु॥

कहने पर जब जोर चले, चुप रहने पर कब जोर चले।

जोरु न मंगणि देणि न जोरु॥

देने पर कब जोर चले, और लेने पर कब जोर चले।

जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु॥

जीने पर कब जोर चले, मर जाने पर कब जोर चले।

जोरु न राजि मालि मनि सोरु॥

जर[६] मनसूर[७] और राज हकूमत, पाने पर कब जोर चले।

---

१. पौड़ी। २. मेल। ३. आकाश। ४. बख्शिश। ५. सोलह आने उस की कृपा से ही वह हमें मिलता है। बाकी सब बातें झूठी हैं। ६. दौलत। ७. शाही हुक्म।

जोरु न सुरती गिआनि वीचारि॥

सुरती[१] पर क्या दाअवा ज्ञान और ध्यान पर किसका जोर चले।

जोरु न जुगती छुटै संसारु॥

दुनियां से छुटकारा हो, अरफान[२] पे किसका जोर चले।

जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ॥

जोर हो जिसके बाजू[३] में, वह देखें अपना जोर लगी।

नानक उतमु नीचु न कोइ॥ ३३॥

जोर से उत्तम कौन है 'नानक' जोर में नीचा कौन भला॥ ३३॥

राती रुती थिती वार॥

उस मालक ने रात बनाई, मौसम भी तैयार किया।
चांद को तिथ तारीख बनाई, पैदा दिन और वार किए।

पवण पाणी अगनी पाताल॥

आग, हवा और पानी है, पाताल जमीं के अन्दर है।

तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल॥

धरम सरा[४] इन सब के अन्दर, यह धरती का मन्दिर है।

तिसु विचि जीअ जुगति के रंग॥

खलक है गूना गूनी[५], उस के, कामों का कुछ अंत नहीं।

तिन के नाम अनेक अनंत॥

रंगों का कुछ अंत नहीं, और नामों का कुछ अंत नहीं।

करमी करमी होइ वीचारु॥

१.सुरत, २. ज्ञान। ३.बाहा। ४. धर्मशाला। ५.भांति-भांति की।

जैसे करम कमाऐंगे, सब वैसे ही फल पायेंगे।

सचा आपि सचा दरबारु ॥

रब्ब सच्चा दरबार भी सच्चा, अजर[१] वहां मिल जाएंगे।

तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥

सजते हैं मकबूल[२] वहां, उन सब की इज्ज़त शान मिले।

नदरी करमि पवै नीसाणु ॥

रहिमत की हो जिन पर नज़र, उन सब को खास निशान मिले।

कच पकाई ओथै पाइ ॥

कच्चे पक्के परखे जायें, जब दरगाह में आयेंगे।

नानक गइआ जापै जाइ ॥ ३४ ॥

'नानक' रब के पास पहुंच कर, सब पहचाने जायेंगे॥ ३४॥

धरम खंड का एहो धरमु ॥

मंजिल यह थी धर्म की मंजिल, जिस का धर्म बताया है।

गिआन खंड का आखहु करमु ॥

हाल अब ज्ञान की मंजिल का, कुछ आगे खोल सुनाया है।

केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥

पानी आग हवाएं कितनो, कितने कितने कृष्ण महेश।

केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥

कितने कितने ब्रह्मा है, जो ढालें शक्लें रंगत भेस।

केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥

---

१. प्रतिफल, कर्म। २. प्रभु के दर प्रवान भगत।

कितनी ही इअमाल[१] की दुनियां, मेरु[२] धरु[३] उपदेश यहां।

केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस॥

कितने इन्द्र, चांद और सूरज, कितने मंडल देश जहां।

केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस॥

कितने देवी भेष के अन्दर, कितने सिद्ध बुध नाथ गुणी।

केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद॥

कितने सागर, लाल, जवाहर, कितने दानव देव मुनि।

केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद॥

कितनी कानें और जुबानें, कितने गुजरे शाह जिमीं।

केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु॥ ३५॥

कितने ज्ञान सेवक 'नानक' जिनका अंत शुमार नहीं॥ ३५॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु॥

यह थी ज्ञान, की मंजिल, जो नूरानी[४] है, अरफानी[५] है।

तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु॥

ज्ञान के उस में नगमें[६] है, सौ लाख खुशी रुहानी[७] है।

सरम खंड की बाणी रूपु॥

श्रम[८] की मंजिल वह है, जिसमें सुन्दर रूप मिले।

तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु॥

जो शै इस में घड़ते हैं[९], उस शै को रूप अनूप मिले।

---

१. अमल, कर्म। २. मेरु (धरती का मध)। ३. धरव (प्रदेश) या धर्म जैसे। ४. प्रकाशमयी। ५. ज्ञानमयी। ६. मीत। ७. आध्यात्मिक । ८. परिश्रम, मेहनत। ९. घड़ी जाती है।

ता कीआ गला कथीआ ना जाहि

जो कुछ उस में होता हैं, वह कहने में कब आता है।

जे को कहै पिछै पछुताइ

जो भी उसको कहता है, वह आखिर को पछताता है।

तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि

होश, समझ, मन, बुद्धि, उनकी, शक्ल सुधा जाती हैं।

तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥ ३६ ॥

वलीओं[1] और फरिश्तों को भी, अकल संवारी जाती है॥ ३६॥

करम खंड की बाणी जोरु ॥

कर्म की मंजिल वह मंजिल है, जोर की है हर बात जहां।

तिथै होरु न कोई होरु ॥

उस में और न पहुंचे कोई, गैर का उस में दखल कहां।

तिथै जोध महाबल सूर ॥

उस मंजिल में पहुंचेगे, शह-जोर वबला[2] मनसूर है जो।

तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥

राम की जिन में कुवत[3] है, इस कुवत से भरपूर है जो।

तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥

भगत यहां मन सीते हैं, सीताओं रुपी अजमत[4] से।

ता के रूप न कथने जाहि ॥

जिन का रूप बयान न हो, है जेब जिन्हें हर जीनत[5] से।

---

१. ईश्वर भगत। २. जेतू, विजई। ३. शक्ति। ४. महिमा। ५. शोभा।

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि॥

मौत न उन को मार सके, और ठग कर भी ले जाए कौन।

जिन कै रामु वसै मन माहि॥

जिन के मन में राम बसे, फिर दुःख उन को पहुंचाए कौन।

तिथै भगत वसहि के लोअ॥

इस मंजिल में सब दुनियां के, नेक भगत सब खुरसद[१] रहे।

करहि अनंदु सचा मनि सोइ॥

सच्चे रब्ब से प्रेम लगा कर, शाद[२] रहें, आनन्द रहे।

सच खंडि वसै निरंकारु॥

सच की मंजिल वह मंजिल है, जिस में वह निरंकार[३] बसे।

करि करि वेखै नदरि निहाल॥

आप बना कर आप ही देखे, रहिमत[४] से खुशहाल करे।

तिथै खंड मंडल वरभंड॥

सच की मंजिल में हैं लाखों, खिते, मंडल और जहां।

जे को कथै त अंत न अंत॥

क्यूँ कर सब का जिक्र करें हम, उस का अंत शुमार कहाँ।

तिथै लोअ लोअ आकार॥

शक्लों है बेअंत यहां, संसारों पर संसार भी हैं।

जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार॥

जैसे जैसे हुक्म मिले, सब करते वैसे कार भी हैं।

---

१. प्रसन्न। २. खुश। ३. आकार रहित, प्रभु। ४. बखशिश।

वेखै विगसै करि वीचारु ॥

जो देखे आनन्द रहे उस ध्यान से लुत्फ[१] उठाता है।

नानक कथना करड़ा सारु ॥ ३७ ॥

'नानक' जो इजहार[२] करे, लोहे की चाब चबाता है[३] ॥ ३७ ॥

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥

भठी लेकर तकवे[४] की, तू इस तक लाल[५] सुनार बना।

अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥

अक्ल को अपनी कर ले ईंधन[६], आँच[७] जरा भड़काता जा।

भउ खला अगनि तप ताउ ॥

खाल[८] खुदा के खौफ की लेकर, तप का ताप तपाता जा।
रख कर प्रेम कुठाली मन की, आँच[९] जरा भड़काता जा।

भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥

लाफानी[१०] है असल हकीकत[११], उस को लेकर ढाल यहां।

घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥

घड़ ले सच्चे नाम की मुहरें[१२], रख सच्ची टकसाल[१३] यहां।

जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥

मिहर की जिस पर खास नज़र हो, कायम यह टकसाल करे।

नानक नदरी नदरि निहाल ॥ ३८ ॥

मेहर की जिस पर खास नजर हो, 'नानक' आप निहाल करे ॥ ३८ ॥

---

१. आनन्द। २. कथन करे। ३. लोहे के चने चबाता है। भाव उस का वर्णन करना बहुत कठिन है। ४. टेक या भरोसा। ५. धीरज या दृढ़ता। ६. बालन। ७. हथियार। ८. धौकनी। ९. आग। १०. अविनाशी। ११. सत सरूप। १२. शब्द, नाम। १३. सिक्का ढालने की जगह।

सलोकु॥

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु॥
पानी बाप, हवा है मुरशिद[१], आली[२] धरती मां।
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु॥
दाई रात, खिलावा[३] दिन है, खेलें खेल जहां।
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि॥
नेक और बद इअमाल[४] को जांचे, धर्मी राज हजूर।
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि॥
सब अपने इअमाल से पाएं, रुतबे[५] पास और दूर॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि॥
नाम पर जो जो ध्यान लगाऐं, मेहनत खूब कमाऐं।
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि॥ १॥
'नानक' मुंह पर नूर[६] हो उनके, साथी मुक्ति[७] पाऐं।

* * *

१.गुरु। २. ऊंची। ३. खिडावा। ४. अच्छे और बुरे कर्म, अमल। ५. पदवियां। ६. प्रकाश। ७. नजात।

वाह गुरु

यह कविता खवाजा दिल मुहम्मद साहिब एम. ए. ने ११ जनवरी १९१६ को लिखी और 'लाइल गजट' लाहौर के सप्तसी नंबर में प्रकाशित की।

--o--

पंजाब के जागे भाग मिला जब नानक सा आगाह गुरु[१]।
अै वाह गुरु अगाह गुरु दिलखवाह गुरू जीजाह[२] गुरु।
जब लेकर हक[३] की राह गुरु बोल उठे 'इशक अल्लाह' गुरु।
आकाश पै जाहर[४] नूर[५] हुआ और चमके बन के माह[६] गुरु।
अरफान[७] की किरनें नूरानी[८] फैलाते नानक शाह गुरु।
सब सीस निवाह अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरु।

इक माथे टीका वहदत[९] का नीचे मस्ताना चोला है।
फिर जुल्फों ने इक मस्ती का बाजार खूतन[१०] में खोला है।
जो बात कही सो कंद[११] भरी हर कौल[१२] में अमृत घोला है।
क्या रूप अनूप मुजैयन[१३] है मूह कैसा भोला भाला है।
इस प्यारे मूंह से दाता के गुण गाते नानक शाह गुरु।
सब सीस निवाह अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरु।

१.आगू। २. ऊंची पदवी वाला। प्रतिष्ठित। ३. सच्चाई। ४. प्रगट। ५. प्रकाश। ६. चन्द्रमा। ७. ब्रह्मा ज्ञान। ८. प्रकाशमयी। ९. एकता। १०. चीन का एक शहर, जहां की कस्तूरी मशहूर है। ११. मिशरी जैसी मीठी। १२. बचन। १३. सजीला।

इस शमा[१] से हो जिस दिल को लगन उस दिल में नूर उजाला[२] हो।
जो चांद के गिरदा गिरद फिरे दिल उस का रोशन बाला[३] हो।
इन सच्ची सच्ची बातों को, जो खूब समझने वाला हो।
गर चेला हो मरदाना हो और बोल भी उसका भाला हो।
थे उन के धन धन भाग, जिन्हें मिल जाते नानक शाह गुरु।
सब सीस निवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरु।

फुरमाते आप ब्राह्मण को हरि[४] आगे सीस झुका बाबा।
क्यों हाथ नबाई मूरत[५] को तू पूजे है बतला बाबा।
क्या सूतक पातक छूत जनेऊ क्या मुण्डन होम कथा बाबा।
वह पूछे कर्मों धर्मों को जाती की नहीं परवाह बाबा।
सब झूठे झूठे कामों कों छुड़वाते नानक शाह गुरु।
सब सीस निवाह अरदास करों और हरदम बोलो वाह गुरु।

चल मिहरो-वफा की मसजिद मै यह मुसलिम को समझाते थे।
मिहराब बना वजहुलाह[६] का और इशक अमाम बनाते थे।
फिर लोभ तकबर झूठ खुदी सब अैब[७] उस से छुड़वाते थे।
तौहीद[८] ही के गुन गाते थे और सीधी राह दिखाते थे।
क्या सच्ची सच्ची बातों को समझाते नानक शाह गुरू।
सब सीस निवाह अरदास करो ओर हरदम बोलो वाह गुरु।

१. मोमबत्ती। २. उज्जवल प्रकाश। ३. ऊंचा। ४. प्रभु। ५. प्रत्थर की मूर्ति। ६. ईश्वर सरूप। ७. औगुण। ८. एक ब्रह्मा।

दिल साफ हो जिसका, दैरो-हरम[1] की दुबिधा को वुह छेड़े किऊं।
हो जिसकी मंजिल दूर अभी ले बैठे ये उलझेड़े क्यों।
जब रस्ता साफ नुनाइआँ[2] हो मंझदार में डाले बेड़े क्यों।
खुद आप चुका दे झगड़ों को ये आ कर मौत निबेड़े क्यों।
क्या अच्छी अच्छी बातें सब फुरमाते नानक शाह गुरु।
सब सीस निवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरु।

क्या हिन्दु है क्या मुस्लिम है, सब खालक[3] के गुण गाते हैं।
फिर शेख व ब्राह्माण आ आ कर, क्यों झगड़े मुफ्त उठाते हैं।
हम नाम उसी का लेते हैं, हम उसको सीस झुकाते हैं।
सतनाम है वुह, निरवैर है वुह हम उस से प्रीत लगाते हैं।
थे राह उसी जग दाता की दिखलाते नानक शाह गुरु।
सब सीस निवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरु।

हैं जितने हक अगाह[4] गुरु सब नानक के मतवाले हैं।
उन सब को समझो पाक वली, वुह दुनियां के उजिआले हैं।
हरि नाम का सिमरन करते हैं और सारे अलाह वाले हैं।
जो मस्त हैं प्रीतम दर्शन में, और पीते प्रेम प्याले हैं।
यह प्रेम प्याले उन सब को पिलवाते नानक शाह गुरु।
सब सीस निवा अरदास करो, और हरदम बोलो वाह गुरु।

१. मंदिर-काबा। २. प्रत्यक्ष। ३. परमात्मा। ४. सच को जानने वाले।

दस शमें हो इक महिफल में, वह जोत झलक तो एक ही है।
दस गूंचे[१] रंग बरंग खिलें, आवाज चटक तो एक ही है।
दस गौहर[२] हों इकमाल[३] में गौहर[४] की दमक तो एक ही है।
दस संत मिलें दस रूपों में सीने की फड़क[५] तो एक ही है।
हर रंग में मिलने वालों को मिल जाते नानक शाह गुरु।
सब सीस निवा अरदास करो, और हरदम बोलो वाह गुरु।

अै दिल हैं जितने पाक बली और संत गुरु अवतार हुए।
सब नाम उसी का लेते थे, हर धिआन में वुह सरशार[६] हुए।
उन सब के मन का चैन और सुख वह आप ही एक ओंकार हुए।
इस वास्ते उन की किरपा से, लाखों के बेड़े पार हुए।
है खेवनहारे वलीओं में, हक माते[७] नानक शाह गुरु।
सब सीस निवा अरदास करो, और हरदम बोलो वाह गुरु।

--o--

१. कलियां। २. मोती। ३. हार। ४. मोती। हृदय की धड़कन। ६. मस्त भरपूर। ७. सच के मतवाले।

सदाइ-इशक

(एक पंजाबी कविता)

रचित - खवाजा दिल मुहम्मद साहिब एम.ए.

जो 'लाइल गजट' लाहौर में १३ नवम्बर १९१३ को छपी।

—o—

जिस दे नूर मुनवर[१] कीता, चन्न सूरज दे सीने नूं।
ओसे अपना रूप दिखाया, नानक दे आईने[२] नूं।
जिस ने कपल वसता[३] अन्दर, राज छुडाया गौतम नूं।
नानक दे मन सुट चिंगारी, फूक जलाया सींने नूं।
मत्थे टिका वहदत[४] वाला, गल चोला मस्ताना ऐ।
दिल ते, अलफ अलख ना लिखिआ, खोदण जिवें नगीने नूं।
हर विच जलवा[५] वेखण उस दा, अख जिनां दी रोशन ए।
सीने अन्दर मूल न रखण, वैर हरम दे कीने नूं।
ओहो दीवा इशके वाला, रोशन उपर तूर होइआ।
ओसे नूर मुनवर कीता, मके नाल मदीने नूं।

---

१. प्रकाशमान। २. हृदय रूपी शीशे को। ३. कपिल वस्तु। ४. एकता। ५. प्रकाश, नजारा।

चित जिना वल यार दे कीता, मूंह उन्हां दा मुंडना की।
मिकनातीस ना कुतबों फिरदा, फेरी लख नगीने नूं।
चन्न चकोर न वेखे जेकर, नैणाँ ताईं चैन न आए।
आशक नूं जद दीद[१] न होवे, साड़ घते इस जीवन नूं।

नानक वांगू ढूंडे जिहड़ा, इसके दे गंजीने[२] नूं।
दिल दे टुकड़े भोजन उस नूं, खून जिगर दा पीने नूं।
औखी घाटी उशके[३] वाली, सबर बिनां कुझ चारा ना।
हल फिरन जे सै सै सिर ते, जुबिश न जमीने नूं।
राजि-इलाही[४] दिल विच डूंघा, लभना अैपर औखा ए।
नाग तमां[५] दा दिल विच बैठा, कुण्डल मार दफीने नूं।
तालिब बणना मुश्किल डाढा, एथे लोड़ सफाई दी।
पुट सुटी अै यार दिलें थी, पहिले खोट कमीने[६] नूं।
अै दिल सानूं इशके वाली, गल सुखाली दिसे ना।
घुमण घेरीयां अन्दर चलिआ, कढी ओं यार सफीने नूं।

---

१. दर्शन। २. खजाने को। ३. प्रेम की। ४. परमात्मा का भेद। ५. सोभ रूपी सांप। ६. बुराईयां।

सुखमनी साहिब

गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥

सलोकु ॥

१ओ अंकार सतिगुर प्रसादि ॥

१. आदि गुरए नमह ॥

२. जुगादि गुरए नमह ॥

३. सतिगुरए नमह ॥

४. स्री गुरदेवए नमह ॥ १ ॥

१. अवल गुर को बंदगी[1]।
२. जुग जुग को प्रणाम[1]।
३. सतिगुर को आदाब[1] है।
४. श्री गुरुदेव सलाम[1] ॥ १ ॥

असटपदी ॥

१. सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥

२. कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥

१. रब[2] की याद किए जा बंदे, याद किए सुख पाएगा।
२. याद किए जा तन मन के, सब झगड़े रोग मिटायेगा।

---

१. नमस्कार। २. प्रभु।

३. सिमरउ जासु विसंभर एकै॥
४. नामु जपत अगनत अनेकै॥
५. वेद पुरान सिंम्रिति सुधाखर॥
६. कीने राम नाम इक आख्यर॥
७. किनका एक जिसु जीअ बसावै॥
८. ता की महिमा गनी न आवै॥
९. कांखी एकै दरस तुहारो॥
१०. नानक उन संगि मोहि उधारो॥ १॥
११. सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु॥
१२. भगत जना कै मनि बिस्राम॥ रहाउ॥

३. रब बाहिद[१] को याद किए जा सब का जो रखवाला है।
४. जपते हैं अनगिनत[२] उसे अनगिनती[२] नामों वाला है।
५. वेदों, पुरानों, स्मृतियों को, पढ़ कर खूब विचारा है।
६. सब का अंत इक हरफ[३] मिला, जो नाम खुदा का प्यारा है।
७. पल भर भी जो अपने मन में, प्यारे रब का नाम बसाए।
८. ऐसा रुतबा[४] पाऐगा वह, जिसकी शान कही न जाए।
९. जो तेरे दीदार के आशक, शौक है जिन को दर्शन का।
१०. दात उन की संगत में, 'नानक' का बेड़ा पार लगा॥ १॥
११. सुख का अमृत सुखमनी, सुख, अमृत रब नाम।
१२. भक्तों के मन पायेंगे, नाम लिए आराम॥ रहाउ॥

---

१. एक ईश्वर। २. बेअन्त। ३. एक अल्फ, ओइम। ४. पदवी।

१. प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥

२. प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥

३. प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥

४. प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥

५. प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥

६. प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥

७. प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥

८. प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥

९. प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥

१०. सरब निधान नानक हरि रंगि ॥ २ ॥

१. रब की याद किए जा बन्दे, फिर न जन्म का चक्कर[१] खाए।
२. रब की याद किए जा बन्दे, मौत का सारा दुःख मिट जाए।
३. रब की याद किए जा बन्दे, मरने की हो उलझन दूर।
४. रब की याद किए जा बन्दे, रद बलायं, दुश्मन दूर।
५. रब की याद किए जा बन्दे, गायब हर दुशवारी[२] हो।
६. रब की याद किए जा बन्दे, रात और दिन बेदारी[३] हो।
७. रब की याद किएं जा बन्दे, खौफ न तुझ पर छाएगा।
८. रब की याद किए जा बन्दे, दुःख सारा मिट जाएगा।
९. रब की याद जबी हो 'नानक', जब साधों का संग[४] मिले।
१०. सच्चा हो जब प्रेम खुदा से, फिर दौलत हर रंग मिले॥ २॥

१. आवागमन। २. मुश्किल। ३. जागृति। ४. संगत, साथ।

१. प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥

२. प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥

३. प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥

४. प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥

५. प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥

६. प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी

७. प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥

८. प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥

९. से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥

१०. नानक ता कै लगाउ पाए ॥ ३ ॥

१. रब की याद किए जा बन्दे, माल कमाल[१] खजाने पाए।
२. रब की याद किए जा बन्दे, दानिश[२] ज्ञान और ध्यान भी आए।
३. रब की याद किए जा बन्दे, जप तप पूजा पाठ हैं यह।
४. रब की याद किए जा बन्दे, खास दूई[३] की काट है यह।
५. रब की याद किए जा बन्दे, तीर्थ का इशनान है यह।
६. रब की याद किए जा बन्दे, रब के घर में मान[४] है यह।
७. रब की याद किए जा बन्दे, शाकर[५] तू हो जाऐगा।
८. रब की याद किए जा बन्दे, जीने का फल पायेगा।
९. रब की याद करेंगे वह, तौफीक[६] जो रब से पाते हैं।
१०. नानक' रब के प्यारों के हम, कदमों से लग जाते हैं॥ ३॥

---

१. सिद्धि। २. बुद्धि। ३. द्वैत भाव। ४. इज्ज़त। ५. संतोषी। ६. समर्था।

१. प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥

२. प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥

३. प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥

४. प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥

५. प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥

६. प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥

७. प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥

८. अंम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥

९. प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥

१०. नानक जन का दासनि दसना ॥ ४ ॥

१.रब की याद किए जा बन्दे, कार हैं ऊंचा कार यही।
२. रब की याद किए जा बन्दे, कर दे बेड़ा पार यही।
३. रब की याद किए जा बन्दे, दूर हो मन की प्यास सभी।
४. रब की याद किए जा बन्दे, सूझ दूर और पास सभी।
५. रब की याद किए जा बन्दे, मौत का डर मिट जायेगा।
६. रब की याद किए जा बन्दे, खूब मुरादें[1] पायेगा।
७. रब की याद किए जा बन्दे, मैल हो मन का दूर तमाम।
८. रब का नाम है अमृत, जिस से सोना हो भरपूर तमाम।
९. जिन संतों की पाक जबां[2] पर, नाम खुदा का रहता है।
१०. अदना[3] चाकर[4] उनके दर का, नानक खुद को कहता है।४।

१. मनोवाछिंत मांग। २. पवित्र रसना। ३. साधारण। ४. सेवादार।

१. प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते॥

२. प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते॥

३. प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान॥

४. प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान॥

५. प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे॥

६. प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे॥

७. प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी॥

८. प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी॥

९. सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला॥

१०. नानक जन की मंगै रवाला॥ ५ ॥

१. रब की याद करें जो बन्दे, माल खजाने वाले हैं।
२. रब की याद करें जो बन्दे, इज्जत शानों वाले है।
३. रब की याद करें जो बन्दे, दुनियां में परवान हैं वह।
४. रब की याद करें जो बन्दे, पत वाले प्रधान हैं वह।
५. रब की याद करें जो बन्दे, वह फिर कब मुहताज[१] रहें।
६. रब की याद करें जो बन्दे, सब पर उनके राज रहें।
७. रब की याद करें जो बन्दे, सुख में दाइम[२] रहते हैं।
८. रब की याद करें जो बन्दे, दाइम काइम रहते हैं।
९. वह करते हैं याद खुदा को, जिन पर उसकी रहिमत[३] है।
१०. खाक[४] उनके कदमों की माँगें, 'नानक' को यह निअमत[५] है।५।

---

१. मोथाज। २. हमेशा। ३. कृपा। ४. चढ़त धूड़ी। ५. उत्तम पदार्थ।

१. प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥

२. प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥

३. प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥

४. प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥

५. प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥

६. प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥

७. प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥

८. प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥

९. संत क्रिपा ते अनदिनु जागि ॥

१०. नानक सिमरनु पूरै भागि ॥ ६ ॥

१. रब की याद करें जो बन्दे, काम उन का गमखवारी[१] है।
२. रब की याद करें जो बन्दे, जान उन के बलिहारी है।
३. रब की याद करें जो बन्दे, रुख[२] उन का पुरतूर[३] रहे।
४. रब की याद करें जो बन्दे, चैन से मन भरपूर रहे।
५. रब की याद करें जो बन्दे, मन पर उनकी जीत रहे।
६. रब की याद करें जो बन्दे, पाक[४] उन की हर रीत[५] रहे।
७. रब की याद करें जो बन्दे, सुख पाएं, आनन्द पाएं।
८. रब की याद करें जो बन्दे, वह रब से नज़दीकी पायें।
९. संतों की कृपा से उन में, रात और दिन बेदारी[६] है।
१०. खुशकिस्मत है 'नानक' जिन को, याद खुदा की प्यारी है। ६।

---

१. सब से हमदर्दी रखना। २. मुँह। ३. उज्जवल। ४. पवित्र। ५. मर्यादा। ६. जागृति।

१. प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे॥
२. प्रभ कै सिमरनि कबहु ने झूरे॥
३. प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी॥
४. प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी॥
५. प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु॥
६. प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु॥
७. प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार॥
८. सुखु प्रभ सिमरन का अंतु ना पार॥
९. सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ॥
१०. नानक तिन जन सरनी पइआ॥ ७॥

१. रब की याद किए जा बन्दे, पूरे हों सब काम तेरे।
२. रब की याद किए जा बन्दे, चिंता से आराम मिले।
३. रब की याद किए जा बन्दे, दाता के गुण गाए तू।
४. रब की याद किए जा बन्दे, रब में सहिज[१] समाए तू।
५. रब की याद किए जा बन्दे, पक्का आसन[२] पायेगा।
६. रब की याद किए जा बन्दे, दिल का कंवल खिल जायेगा।
७. रब की याद किए जा बन्दे, गैब३ से तू झंकार सुने।
८. रब की याद किए जा बन्दे, तुझ को सुख बेअन्त मिले।
९. रब की याद करे वह बन्दे, जिन पर रब की रहिमत है।
१०. 'नानक' मांगे उनका साया[४], उनका साया निअमत है।

---

१. सुत सिद्ध। २. टिकाना, स्थान। ३. अदृश्य। ४. शरण।

१. हरि सिमरनि करि भगत प्रगटाए ॥
२. हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥
३. हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥
४. हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥
५. हर सिमरनि धारी सभ धरना ॥
६. सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥
७. हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥
८. हरि सिमरनि महि आपि निरंकारा ॥
९. करि किरपा जिस आपि बुझाइआ ॥
१०. नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥ ८ ॥१ ॥

१. रब की याद किए से कुल, संतों का नूर[१] जहूर[२] हुआ।
२. रब की याद किए से जाहिर, सब वेदों का नूर[३] हुआ।
३. रब की याद किए से बन्दे, दाता, सिध, जती कहलाएं।
४. रब की याद किए से हरसू[४] नीच भी जग में शोहरत[५] पाएं।
५. रब की याद किए से धरती, काइम दाइम रहती है।
६. याद कर उसकी जिसको दुनिया, सब का कारण कहती है।
७. नाम खुदा का लेने से यह, सारी मखलूकात[६] हुई।
८. याद में रब की हाजिर नाज़िर, आप खुदा की जात[७] हुई।
९. जिन पर लुत्फ[८] खुदा का, 'नानक' जिन पर उसकी रहिमत है।
१०. गुर से पाए नाम खुदा का, नाम खुदा का निअमत है। ८। १।

१. प्रकाश। २. प्रगट। ३. प्रकाश। ४. हर तरफ। ५. मशहूरी। ६. सृष्टि। ७. ईश्वर सरूप। ८. आनन्द।

सलोकु ॥

१. दीन दरद दुख भंजना
घटि घटि नाथ अनाथ ॥
२. सरणि तुमारी आइओ
नानक के प्रभ साथ ॥ १ ॥

१. तू आजिज[1] मसकीन[2] का
सब दुःख दर्द मिटाए।
तू हर दिल में खुद बसे,
२. सब में आप समाए।
सब नाथों का नाथ[3] तू,
तेरा कोई न नाथ।
या रब तेरा आसरा,
दे नानक का साथ॥ १॥

१. बेसहारा। २. दीन दुखी। ३. मालक।

असटपदी॥

१. जह मात पिता सुत मीत न भाई॥
२. मन ऊहा नाम तेरै संगि सहाई॥
३. जह महा भइआन दूत जम दलै॥
४. तह केवल नामु संगि तेरै चलै॥
५. जह मुसकल होवै अति भारी॥
६. हरि को नामु खिन माहि उधारी॥
७. अनिक पुनह चरन करत नही तरै॥
८. हरि को नामु कोटि पाप परहरै॥
९. गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे॥
१०. नानक पावहु सूख घनेरे॥ १ ॥

१. जब मां, बाप, न बेटा, भाई, संगी यार न नाती[१] हो।
२. काम का उस दिन साथ हो तो, नाम खुदा का साथी हो।
३. मौत का जब खूंखार फरिश्ता[२], तेरे तन को दलता है।
४. साथ तेरे फिर चलता है, तो नाम खुदा का चलता है।
५. भारी कोई मुश्किल आ कर, जब तुझको हैरान करे।
६. पल में नाम खुदा का तेरी, हर मुश्किल आसान[३] करे।
७. लाख करे तू मूर्ति पूजा, कौन तुझे मंजूर करे।
८. पल में नाम खुदा का तेरे, पाप करोड़ों दूर करे।
९. अै दिल गुर के मुँह से सुन कर, नाम खुदा का लेता जा।
१०. नाम खुदा का लेकर 'नानक' राहत[४] दिल की देता जा। १।

---

१. रिश्तेदार। २. भयानक यम। ३. आसान। ४. शांति।

१. सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥

२. हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥

३. लाख करोरी बंधुन परै ॥

४. हरि का नामु जपत निसतरै ॥

५. अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥

६. हरि का नामु जपत आघावै ॥

७. जिह मारगि इहु जात इकेला ॥

८. तह हरि नाम संगि होत सुहेला ॥

९. ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥

१०. नानक गुरमुखि परमगति पाईऐ ॥ २ ॥

१. दुनिया भर का राजा भी, दुःख पाता है, दुःख सहता है।
२. नाम खुदा का लेने वाला, सुख के अन्दर रहता है।
३. लाखों और करोड़ों बंधन, जकड़े और फसाऐंगे।
४. नाम खुदा का लेने से वह, सब के सब खुल जाऐंगें।
५. इस माया के रंगा रंगी[१], ऐश[२] बुझाएं प्यास कहाँ।
६. नाम खुदा का लेने से रहती है प्यास, तरास[३] कहाँ।
७. जिस रास्ते पर आखिर को तू, आप अकेला जाता है।
८. नाम खुदा का साथ चले, जो मन तेरा बहलाता है।
९. नाम खुदा का ऐसा है, तू उस पर ध्यान जमाए जा।
१०. सुन कर बात गुरु की 'नानक' आला-मंजिल[४] पाएजा। २।

---

१. रंग-बिरंगे, लुभावने। २. सुख के सामान। ३. दुःख, डर। ४. ऊंची अवस्था।

१. छूटत नही कोटि लख बाही ॥

२. नामु जपत तह पारि पराही ॥

३. अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥

४. हरि का नामु ततकाल उधारै ॥

५. अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥

६. नामु जपत पावै बिस्राम ॥

७. हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥

८. हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥

९. ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥

१०. नानक पाईऐ साध कै संगि ॥ ३ ॥

१. लाखों बाजू[१] होने पर भी, कब तेरा छुटकारा है।
२. नाम लिए जा, नाम लिए जा, इस से पार उतारा है।
३. सौ सौ मुश्किल भारी भी, गर[२] तेरी राह में आएगी।
४. याद खुदा की फौरन तेरा, बेड़ा पार लगाएगी।
५. सौ सौ जूनें भोगे बंदा, जाता है, फिर आता है।
६. जपता है जब नाम खुदा का, चैन संकू[३] फिर पाता है।
७. मैल खुदी[४] का दूर हो, क्योंकर मलमल कर तन[५] धोने से।
८. पाप करोड़ों दूर हों तेरे, याद खुदा की[६] होने से।
९. ऐसा नाम जपे जा ऐ दिल, रब से प्रेम लगाए जा।
१०. संतों की संगत में नानक, नाम खुदा का पाए जा। ३।

---

१. बाहां। २. यदि। ३. सुख शांति। ४. अहंकार। ५. शरीर। ६. परमात्मा की याद।

१. जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥
२. हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥
३. जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥
४. हरि का नामु संगि उजीआरा ॥
५. जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥
६. हरि का नामु तह नालि पछानू ॥
७. जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥
८. तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥
९. जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥
१०. तह नानक हरि हरि अंम्रितु बरखै ॥ ४ ॥

१. रास्ता, दूर का रास्ता, जिस पर, कोस नहीं और मील नहीं।
२. रब का नाम हो तोसह[१] उस में, जाती साथ इक खील नहीं।
३. रास्ता, दूर का रास्ता, जिस पर धुन्द, गुबार, अंधेरा है।
४. हाथ में हो गर नाम की मशाल[२], रोशन रास्ता तेरा है।
५. रास्ता, दूर का रास्ता, जिस पर कोई न तुझको जानेगा।
६. जानेगा तो नाम खुदा का, जानेगा पहचानेगा।
७. रास्ता, दूर का रास्ता, जिस पर तेज़ तपश दुःख देती है।
८. छाउ खुदा के नाम की तुझको, साए[३] में अपने लेती है।
९. रास्ता, दूर का रास्ता, जिस पर 'नानक' प्यास सताती है।
१०. एक खुदा के नाम की बदली, वां[४] अमृत बरसाती है ॥ ४ ॥

१. रास्ते का भोजन। २. मशाल (रौशनी)। ३. आसरा। ओट। ४. ओथे।

१. भगत जना की बरतनि नामु ॥
२. संत जना कै मनि बिस्रामु ॥
३. हरि का नामु दास की ओट ॥
४. हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥
५. हरि जसु करत संत दिनु राति ॥
६. हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥
७. हरि जन कै हरि नाम निधानु ॥
८. पारब्रहमि जन कीनो दान ॥
९. मन तन रंगि रते रंग एकै ॥
१०. नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥ ५ ॥

१. भगत वही हैं नाम खुदा का, जपने से हैं काम जिन्हें।
२. संत वही है नाम खुदा का, देता है आराम जिन्हे।
३. रब के जितने दास हैं उन को, रब का नाम सहारा है।
४. नाम ने लाखों बंदों को, दुनिया से पार उतारा है।
५. रात हो, दिन हो, संत हमेशां दाता के गुण गाते हैं।
६. नाम का दारू१ देकर साधु, सारे रोग गंवाते हैं।
७. रब वालों को नाम ही रब का, दौलत है, गंजीना[१] है।
८. पाक खुदा ने उसको बख्शा, अपना खास खजीना[२] है।
९. जिस के तन मन वहदत[३] के, इक रंग में रंगे जाते हैं।
१०. वह रुहानी-इलम[४] की 'नानक', हक[५] से निअकत पाते हैं।५।

१. औषधि। २. खजाना। ३. एक परमात्मा। ४. आत्मज्ञान। ५. प्रभु।

१. हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति॥
२. हरि कै नाम जन कउ त्रिपति भुगति॥
३. हरि का नामु जन का रूप रंगु॥
४. हरि नामु जपत कब परै न भंगु॥
५. हरि का नामु जन की वडिआई॥
६. हरि कै नामि जन सोभा पाई॥
७. हरि का नामु जन कउ भोग जोग॥
८. हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु॥
९. जनु राता हरि नाम की सेवा॥
१०. नानक पूजै हरि हरि देवा॥ ६ ॥

१. नाम खुदा का बंदों को, मुक्ति का राह दिखाता है।
२. नाम खुदा का लेने से ही, सब्र संकू[१] मिल जाता है।
३. रब वालों का नाम से बेहतर[२], रूप नहीं और रंग नहीं।
४. नाम खुदा का जपने से फिर, रंग में होती भंग[३] नहीं।
५. नाम खुदा का जपने से, साधों की शान बड़ाई हैं।
६. नाम खुदा का जपने से, संतों ने शोभा पाई है।
७. नाम खुदा का भोग भी है, और नाम खुदा का योग भी है।
८. नाम खुदा का जपने से सब, जाता रोग बियोग[४] भी है।
९. रंगे हैं जो नाम में रब के, नाम की सेवा करते हैं।
१०. रब के बंदे एक खुदा की, 'नानक' पूजा करते हैं॥ ६॥

---

१. संतोष, शांति। २. अच्छा। ३. खुशियों में विघ्न नहीं पड़ता। ४. विछोड़ा।

१. हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥
२. हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥
३. हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥
४. हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥
५. ओति पोति जन हरि रसि राते ॥
६. सुंन समाधि नाम रस माते ॥
७. आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥
८. हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥
९. हरि की भक्ति मुकति बहु करे ॥
१०. नानक जन संगि केते तरे ॥ ७ ॥

१. नाम खुदा का रब वालों को, दौलत मान खजीना[१] है।
२. आप खुदा ने बख्शा उन को, नाम का यह गंजीना[१] है।
३. नाम हो वह गढ़ कोट[२] हैं जिस में, रब वाले सब रहते हैं।
४. शान न हो जो शान खुदा की, शान उसे कब कहते हैं।
५. रब के प्यारे बन्दों के, रंगीले ताने बाने हैं।
६. ध्यान के माते नाम के रस को, पी पी कर मस्ताने हैं।
७. रब के बन्दे आठ पहिर बस, नाम उसी का लेते हैं।
८. भगतों के गुण रौशन[३] हैं, कब उन को छिपने देते हैं।
९. रब की भक्ति मुक्ति कर दे, लाखों और हजारों की।
१०. 'नानक' कितने पार लगाए, संगत हक[४] के प्यारों की॥ ७॥

---

१. खजाना। २. किला। ३. प्रगट। ४. परमात्मा के प्यारों की।

१. पारजातु इहु हरि को नाम॥

२. कामधेन हरि हरि गुण गाम॥

३. सब ते ऊतम हरि की कथा॥

४. नामु सुनत दरद दुख लथा॥

५. नाम की महिमा संत रिद वसै॥

६. संत प्रतापि दुरतु सभु नसै॥

७. संत का संगु वडभागी पाई ऐ॥

८. संत की सेवा नामु धिआईऐ॥

९. नाम तुलि कछु अवर न होइ॥

१०. नानक गुरमुखि नामु पावै जन कोइ॥ ८॥ २॥

१. पेड़-बहिशती[1] पाइआ है, गर नाम खुदा का पाइआ है।
२. कामधेन[2] की निअमत हैं, गर नाम खुदा का गाइआ है।
३. करते जाओ बात खुदा की, इससे अच्छी बात कहां।
४. नाम खुदा का सुनने से, दुःख दर्द कहां, आफात[3] कहां।
५. नाम की इज्जत नाम की शौकत, संत के मन में बसती है।
६. जलवा हो जब संतों का, फिर पापों की क्या हसती है।
७. संगत जिस को संतों की, खुश किस्मत वह इन्सान रहे।
८. सेवा जब हो संतों की, तब नाम में हरदम ध्यान रहे।
९. तोल[4] खुदा के नाम की जग में, कौन सी निअमत मिलती है।
१०. किसी-२ को गुर से 'नानक' नाम की दौलत मिलती है।

१. पारजात या कलपतरु (वृक्ष)। २. कामधेनु गऊ। ३. दुःख, तकलीफ। ४. बराबर।

सलोकु ॥

१. बहु सासत्र बहु सिम्रिती
पेखे सरब ढढोलि ॥
२. पूजसि नाही हरि हरे
नानक नाम अमोल ॥ १ ॥

१. सब स्मृतियां[१] शास्त्र[२]
नानक लीए टटोल ॥
२. तोल[३] न उसके आ सकें
नाम उस का अनमोल[४] ॥

---

१. २८ स्मृतियां। २. ७ शास्त्र। ३. बराबर। ४. जिसकी कोई कीमत न डाल सके।

असटपदी ॥

१. जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥

२. खट सासत्र सिम्रिति वखिआन ॥

३. जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥

४. सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥

५. अनिक प्रकार कीएं बहु जतना ॥

६. पुंन दान होमे बहु रतना ॥

७. सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥

८. वरत नेम करै बहु भाती ॥

९. नही तुलि राम नाम बीचार ॥

१०. नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥ १ ॥

१. जप भी कर ले, तप भी कर ले, ज्ञान और ध्यान जमाए जा।
२. स्मृतियों छे शास्त्रों की, बाणी खोल सुनाए जा।
३. योग कर्म और क्रिया कर ले, धर्म भी पूरा तेरा हो।
४. त्याग दे सब कुछ दुनिया का, जंगल में तेरा फेरा हो।
५. रंगा रंगी ढंग किए जा, करता जा दिन रात यत्न।
६. काम भी कर पुन दान हवन के, देता जा खैरात[१] रत्न।
७. काट के अपने तन के टुकड़े, दान हवन भी करता जा।
८. बरत किए जा, नेम किए जा, भरने सारे भरता जा।
९. तोल[२] खुदा के नाम न होगा, फिर भी तेरा कार सभी।
१०. गुर के मुँह से सुनकर 'नानक' जप ले नाम[३] इकबार कभी।१।

१. दान। २. बराबर। ३. वाहिगुरु का नाम सिमरन।

१. नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै ॥

२. महा उदास तपीसरु थीवै ॥

३. अगनि माहि होमत परान ॥

४. कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥

५. निउली करम करै बहु आसन ॥

६. जैन मारग संजम अति साधन ॥

७. निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥

८. तउ भी हउमै मैल न जावै ॥

९. हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥

१०. नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥ २ ॥

१. फिर ले नौं अकलीमों[१] में, उम्र भी लम्बी पाए जा।
२. आली तारक[२] और तपस्वी, बनकर जुहद[३] कमाए जा।
३. जीते जी तू आग में जल जा, जान अपनी कुर्बान भी कर।
४. सोना दे दे, घोड़ा दे दे, भूमि धन का दान भी कर।
५. नेबली करम[४] भी हासिल कर ले, आसन लाख बदलता जा।
६. साधन संजम करता जा, और जैनी मार्ग चलता जा।
७. तन के टुकड़े-२ कर के, जोड़ पे जोड़ कटाए जा।
८. फिर भी मन का मैल न उतरे, मान गुमान[५] ना जाए जा।
९. इस के तुल[६] की चीज नहीं कुछ, नाम खुदा का प्यारा है।
१०. गुर से सुन कर नाम लिए जा, 'नानक' तब छुटकारा है।२।

१. नौं खण्ड पृथ्वी, सारी दुनिया। २. त्यागी। ३. तप। ४. निउली करम नेती धोती आदि योग की क्रिया। ५. अहंकार ६. बराबर।

१. मन कामना तीरथ देह छुटै ॥

२. गरब गुमान न मन ते हुटै ॥

३. सोच करै दिनसु अरु राति ॥

४. मन की मैल न तन ते जाति ॥

५. इसु देही कउ बहु साधना करै ॥

६. मन ते कबहु न बिखिआ टरै ॥

७. जलि धोवै बहु देह अनीति ॥

८. सुध कहा होइ काची भीति ॥

९. मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥

१०. नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥ ३ ॥

१. तीर्थ में भी जान जो निकले, मन की खाहिश दूर न हो।
२. तेरे मान गुमान न छटें, मन से दूर गरूर[१] न हो।
३. करके तू दिन रात सफाई, नेकी लाख कमाए जा।
४. लाख यत्न कर तन से तेरे, मन का मैल[२] न जायेगा।
५. अपने तन को कष्ट दिए जा, लाखों साधन करता जा।
६. गन्दे जजबे दूर न होंगे, मन के भरने भरता जा।
७. फानी[३] तन को मल कर धो ले, पाक[४] मगर यह खाक न हो।
८. धोने से दीवार[५] यह कच्ची, उजली साफ और पाक न हो।
९.ऊंचा नाम खुदा का अै दिल, जिसकी महिमा गाते हैं।
१०. नाम खुदा का लेकर 'नानक' पापी मुक्ति पाते हैं॥ ३॥

---

१. अहंकार। २. भावनाएं। ३. नाशवान। ४. पवित्र, शुद्ध। ५. कंध।

१. बहुत सिआणप जम का भउ बिआपै ॥

२. अनिक जतन करि त्रिसन ना ध्रापै ॥

३. भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥

४. कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥

५. छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥

६. मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥

७. अवर करतूति सगली जम डानै ॥

८. गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥

९. हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥

१०. नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥ ४ ॥

१. जितना सिआना[1] बंदा होगा, उतना मौत डराएगी।
२. करता जाए लाख यत्न कब कोशिश प्यास बुझाएगी।
३. मन की आग न ठण्डी होगी, भेस अनेक बदलता जा।
४. दरगाह में मकबूल न होगा, लाखों चालें चलता जा।
५. जन्नत[3] हो या दोजिख[4] ही, फिर कब मिलता छुटकारा है।
६. जाल बिछा कर माया ने, जब मोह का छापा मारा है।
७. मौत तेरी करतूत से तुझ को, कल मुजरिम[5] गरदानगी[6]।
८. मौत अगर कुछ मांगेगी तो, नाम खुदा का मानेगी।
९. नाम खुदा का लेने से, सुख आता है दुःख जाता है।
१०. 'नानक' किस आसानी से, यह नाम जबां[7] पर आता है॥ ४॥

---

१. चतुर। २. परवान, मनजूर। ३. स्वर्ग। ४. नर्क। ५. अपराधी। ६. बनाएगी। ७. जीभ। रसना।

१. चारि पदारथ जे को मागै॥

२. साध जना की सेवा लागै॥

३. जे को आपुना दुखु मिटावै॥

४. हरि हरि नाम रिदै सद गावै॥

५. जे को अपुनी सोभा लोरै॥

६. साधसंगि इह हउमै छोरै॥

७. जे को जनम मरण ते डरै॥

८. साध जना की सरनी परै॥

९. जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा॥

१०. नानक ता कै बलि बलि जासा॥ ५॥

१. चार मुरादें[1] असली है वह, चारों हों मतलूब[2] जिसे।
२. उस बन्दे पर वाजिब[3] है, साधों की सेवा खुब करे।
३. जिसके मन में खाहिश हो, सब अपने रोग मिटाने की।
४. चाहिए उस को फिकर हमेशां, नाम खुदा का गाने की।
५. दुनिया में बा-इज़्ज़त[4] रहिणा, जो बन्दा मनजूर करे।
६. साधों की संगत में रह कर, मान खुदी[5] का दूर करे।
७. चिंता जीने मरने की, वर[6], मन को रोज सताती है।
८. साधों के साए[7] में आ कर, सब चिंता मिट जाती है।
९. रब के दर्शन के मतवाले, प्यासे जो दीदार[8] के हैं।
१०. 'नानक' ऐसे बन्दों पर, कुर्बान हूं मैं, कुर्बान हूं मैं॥ ५॥

---

१. चार पदार्थ - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। २. इच्छा। ३. उचित। ४. इज्जत से। ५. अहंकार। ६. अगर। ७. शरण। ८. दर्शन।

१. सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥
२. साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥
३. आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
४. सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥
५. जा का मनु होइ सगल की रीना ॥
६. हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥
७. मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
८. पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥
९. सुख दुख जन सम द्रिसटेता ॥
१०. नानक पाप पुंन नही लेपा ॥ ६ ॥

१. सब लोकों में पत वाला[१], प्रधान[२] वही कहलाता है।
२. जो साधों की संगत पाकर, मान गुमान[३] मिटाता है।
३. जो बन्दा हर इक से खुद को, नीचा गिनने वाला है।
४. उसको सब से ऊंचा समझो, आली[४] है, वह बाला[५] है।
५. जो बन्दा खुद अपने मन को, सब की खाक बनाता है।
६. नाम खुदा का अपने मन के, अन्दर रौशन पाता है।
७. जो बन्दा खुद अपने मन से, कर ले दूर बुराई को।
८. सब दुनिया को साजन[६] माने, समझे यार खुदाई को।
९. सुख से जो खुरसंद[७] न हो, और गम से जो गमनाक[८] न हो।
१०. पाप और पुन की आलाइश[९] से, 'नानक' वह किउ पाक न हो॥ ६॥

---

१. इज्जत वाला। २. श्रेष्ठमुखी। ३. अहंकार। ४. उत्तम। ५. ऊंचा। ६. सज्जन। ७. खुश, मस्त। ८. दुखी। ९. गंदगी।

१. निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥

२. निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥

३. निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥

४. सगल घटा कउ देवहु दानु ॥

५. करन करावनहार सुआमी ॥

६. सगल घटा के अंतरजामी ॥

७. अपनी गति मिति जानहु आपे ॥

८. आपन संगि आपि प्रभ राते ॥

९. तुम्‍री उसतति तुम ते होइ ॥

१०. नानक अवरु न जानसि कोइ ॥ ७ ॥

१. जर[1] से जो बेजर[2] है उस का, माल खजाना नाम तेरा।
२. घर से जो बेघर है उस का, ठौर ठिकाना नाम तेरा।
३. जिसका कोई मान नहीं, उस बेमाइया[3] का मान है तू।
४. सब दुनिया लेती है तुझ से, सब को देता दान है तू।
५. हर के रज का कारण है तू, सब का आप स्वामी[4] हैं।
६. सब के दिल के हाल से वाकिफ[5], तू ही अंतर्यामी हैं।
७. अपने हाल और अपनी हद को, कालक जाने खूब तू ही।
८. अपना है मरगूब[6] तू ही, और अपना है महिबूब तू ही।
९. तेरी हमद[8] तुझी से होगी, बन्दे का इमकान[9] नहीं।
१०. 'नानक' और न जाने कोई औरों की पहिचान नहीं। ७।

१. धन। २. धनहीन। ३. निमाणे। ४. मालक। ५. जानकार। ६. मनपसन्द। ७. प्यारा। ८. उस्तत। ९. समर्था

१. सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥

२. हरि को नाम जपि निरमल करमु ॥

३. सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥

४. साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥

५. सगल उदम महि उदम भला ॥

६. हरि का नाम जपहु जीअ सदा ॥

७. सगल बानी महि अंम्रित बानी ॥

८. हरि को जस सुनि रसन बखानी ॥

९. सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥

१०. नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥ ८ ॥ ३ ॥

१. नाम खुदा का जपते रहिना, धर्म है आली[1] धर्मों में।
२. नाम खुदा का जपते रहना, कर्म है आली[1] कर्मों में।
३. काम यही है सब से आली[1] खूब अमल में लाता जा।
४. साधों की संगत में रह कर, मन की मैल हटाता जा।
५. उद्यम है यह अच्छा उद्यम, नाम खुदा का जपता जा।
६. नाम खुदा का जप ले हरदम, नाम खुदा का जपता जा।
७. हर बाणी से अमृत बाणी, मालक के गुण गाना है।
८. गुर से हमद[2] खुदा की सुन कर, नाम जबां पर लाना है।
९. दुनिया के अस्थानों में, जो शान[3] वुही अस्थान[4] रहे।
१०. जिस में जाकर नानक दिल में, हरदम रब का ध्यान रहे। ८। ३।

---

१. उत्तम श्रेष्ट। २. जस। ३. शान वाला। ४. टिकाना।

सलोकु॥

१. निरगुणीआर इआनिआ
सो प्रभु सदा समालि॥
२. जिनि कीआ तिसु चीति रखु
नानक निबही नालि॥ १ ॥

१. बेगुण मूर्ख, भूल मत,
कौन है तेरा नाथ[१]।
२. 'नानक' उस को याद रख,
खालक[२] देगा[२] साथ॥ १॥

१. यह याद कर कि तेरा मालक कौन है? २. सिरजनहार।

असटपदी ॥

१. रमईया के गुन चेति परानी ॥

२. कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥

३. जिनि तूं साजि सवारि सीगारिया ॥

४. गरभ अगनि महि जिनहि उबारिया ॥

५. बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥

६. भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥

७. बिरधि भइया ऊपरि साक सैन ॥

८. मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥

९. इहु निरगुन गुन कछु न बूझै ॥

१०. बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥ १ ॥

१. फानी[१] बंदे सोच जरा, तौफीक[२] तू अपने खालक की।

२. देख तू क्या बन बैठा है, और पहले क्या थी असल तेरी।

३. किस ने तुझ को पाला पोसा, रूप अनूप सजाया है।

४. पेट में मां की गर्मी में, तन तेरा आप बनाया है।

५. किस ने तुझ को बालकपन में, मीठा मीठा दूध दिया।

६. जोबन भरकर भोजन बख्शा, चैन[३] दिया बाहोश[४] किया।

७. रिश्तेदार बनाए जो, पीरी[५] में देखें भालेंगे।

८. घर में बैठे तेरे मुँह में, लुकमा[६] ला कर डालेंगे।

९. ओ निर्गुण[७] अहिसास नहीं कुछ, तुझ को उन अहिसानों का।

१०. नानक आप वह बख्शे तो हो, बेड़ा पार इन्सानों का ॥ १ ॥

---

१. नाशवान। २. समर्था, ताकत। ३. सुख। ४. बुद्धिवान। ५. बुढ़ापे में। ६. खाणा। ७. अक्रितवण।

१. जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥

२. सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥

३. जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥

४. सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥

५. जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥

६. सगल समग्री संगि साथि बसा ॥

७. दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥

८. तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥

९. ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥

१०. नानक काढ़ि लेहु प्रभ आपे ॥ २ ॥

१. जिस दाता की रहिमत[1] से, धरती पर सुख से रहिता है।
२. यार बरादर[2] बीबी[3] बच्चे, उन में हंसता बसता है।
३. जिस दाता की रहिमत से तू, ठण्डे पानी पीता है।
४. ताप आग अनमोल, यहाँ, मनमस्त हवा में जीता है।
५. जिस दाता की रहिमत से सुख ऐश मिले, आराम मिले।
६. जिसकी रहिमत से, हरहाजत[4], सुबह मिले, और शाम मिले।
७. हाथ दिए हैं पांव दिए हैं, आँखें कान जबान भी दी।
८. छोड़ के उसको क्यों भाई है, तुझको उलफत[5] गैरों की।
९. मूर्ख और अन्धा हो खुद को, इन अैबों[6] में डालेगा।
१०. 'नानक' रहिमत वाला मालक, उस को आ निकालेगा॥ २॥

---

१. कृपा। २. भाई। ३. स्त्री। ४. जरुरत। ५. प्यार, मुहब्बत। ६. गुनाहों।

१. आदि अंति जो राखनहारु ॥

२. तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥

३. जा की सेवा नव निधि पावै ॥

४. ता सिउ मूड़ा मनु नहीं लावै ॥

५. जो ठाकुर सद सदा हजूरे ॥

६. ता कउ अंधा जानत दूरे ॥

७. जा की टहल पावै दरगह मानु ॥

८. तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥

९. सदा सदा इहु भूलनहारु ॥

१०. नानक राखनहारु अपारु ॥ ३ ॥

१. वाली[1] है वह अवल भी, वह आखिर में भी वाली[1] है।
२. जिसको उससे प्रीत नहीं, वह सोच समझ से खाली है।
३. जिस सेवा करने से, हम नौं गंजीने[2] पाते हैं।
४. मूर्ख और नादान, नहीं मन उस के साथ लगाते हैं।
५. मालिक हाजिर नाजिर है वह, हरदम पास हजूरी है[3]।
६. अन्धा दूर जो समझे उस को, हक से उसकी दूरी है[4]।
७. जिसकी सेवा करने से, दरगह में रब की मान मिले।
८. मूर्ख उस को भूलेंगे, कब जानेंगे अनजान उसे।
९. भूल में है इन्सान हमेशां, गफलत करने वाला है।
१०. 'नानक' वह बेअन्त खुदा ही, हर इक का रखवाला है। ३ ॥

१.राखनहार मालक। २. नौ निधां, नौ खजाने। ३. ईश्वर हर समय हर जगह मौज़ूद है। ४. उस प्रभु को दूर समझने वाला सच से दूर है।

१. रतन तिआगि कउडी संगि रचै॥

२. साचु छोडि झूठ संगि मचै॥

३. जो छडना सु असथिरु करि मानै॥

४. जो होवनु सो दूरि परानै॥

५. छोडि जाइ तिस का स्रमु करै॥

६. संगि सहाई तिसु परहरै॥

७. चंदन लेपु उतारै धोइ॥

८. गरधन प्रीति भसम संगि होइ॥

९. अंध कूप महि पतित बिकराल॥

१०. नानक काढि लेहु प्रभ दइआल॥ ४॥

१. फैंक ले लालों हीरों को, कौड़ी पर जान गंवाता है।
२. हक१ से भागे, सच को त्यागे, खुश खुश झूठ कमाता है।
३. छोड़ के जिस को जाना है, वह दाइम२ उस को कहता है।
४. उस को भूले जाता है, जो आखिर होकर रहता है।
५. कष्ट उठाए उस की खातिर, छोड़ के जिस को जाना है।
६. उस संगी को दूर हटाए, जो आखिर काम आना है।
७. चंदन लेप जो मल मल कर, धो धो कर दूर हटाता है।
८. खरमस्ती३ में मिट्टी और, कीचड़ में प्रीत लगाता है।
९. 'नानक' एक तारीक कुएं४ में, उस ने खुद को डाला है।
१०. बाहर तू ही निकाले उस को, तू रब रहिमत माला है। ४।

१. हकीकत, असलीअत। २. सदीवी। ३. खोते दी मौज मस्ती। ४. अंधा कुआं। अज्ञान अंधेरे में।

१. करतूति पसू की मानस जाति ॥
२. लोक पचारा करै दिनु रांति ॥
३. बाहारि भेख अंतरि मलु माइआ ॥
४. छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥
५. बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥
६. अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥
७. अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥
८. गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥
९. जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥
१०. नानक ते जन सहजि समाति ॥ ५ ॥

१. सवांग भरे इन्सानों के, करतूत मगर हैवानों[1] के।
२. छलता है दिन रात जहां को, काम करे शैतानों के।
३. भेस बनाए उजला उजला, मन में मैली माया है।
४. छिपते हैं करतूत कहां, गो उसने लाख छिपाया है।
५. ज्ञान कमाए, ध्यान लगाए, तीर्थ का इशनान करे।
६. लोभ का कुत्ता मन में बैठा, भौंके और हलकान करे।
७. हिरस[2] के शोले दिल में भड़कें, अंग बिसूत रमाई है।
८. गहिरा सागर पार हो कब, गर्दन में सिल[3] लटकाई है।
९. जिस के मन में रब ने आ कर, डेरा आप जमाया है।
१०. चैन है उस बन्दे के मन में, 'नानक' सहिज[4] समाइआ है। ५।

१. पशुओं। २. लोभ, हवस। ३. पत्थर। ४. सहजि अवस्था ऊंची अवस्था।

१. सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥

२. करु गहि लेह ओड़ि निबहावै ॥

३. कहा बुझारति बूझै डोरा ॥

४. निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥

५. कहा बिसनपद गावै गुंग ॥

६. जतन करै तउ भी सुर भंग ॥

७. कह पिंगुल परबत पर भवन ॥

८. नही होत ऊहा उसु गवन ॥

९. करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥

१०. नानक तुमरी किरपा तरै ॥ ६ ॥

१. अन्धा हो तो किउं कर वुह, सुन सुन कर रसता पाएगा।
२. हाथ पकड़ कर ले जा उस को, तब मंजिल[1] को जायेगा।
३. बहिरा हो तो कानों से, किस तौर पहेली[2] बूझेगा।
४. रात की उससे बात कहो, तो दिन ही उसको सुझेगा।
५. गूंगा हो तो कब वह मुंह से, राग तराने गाएगा।
६. कोशिश भी वह लाख करे, बेसुर का शोर मचाएगा।
७. लुंजे[3] में तौफीक[4] नहीं, पर्वत पर सैर मनाने की।
८. हिम्मत उस में आए कहां से, टीलों पर चढ़ जाने की।
९. रहिमत वाले मालक यह आजिज[5], इक अरज[6] सुनाता है।
१०. 'नानक' पर हो रहिमत[7] तेरी, पार तभी यह जाता है॥ ६॥

१. टिकाना। २. बुझारत। ३. लंगड़ा, पिंगला। ४. समर्था। ५. निआसरा, दीन। ६. बेनती। ७. कृपा, बख्शश।

१. संगि सहाई सु आवै न चीति ॥
२. जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥
३. बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै ॥
४. अनद केल माइआ रंगि रसै ॥
५. द्रिड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥
६. काल न आवै मूढ़े चीति ॥
७. बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥
८. झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥
९. इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥
१०. नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥ ७ ॥

१. याद नहीं अफसोस उसे, वह साथी जो इमदाद[१] करे।
२. उस से प्रीत लगाता है, जो दुश्मन हो बेदाद[२] करे।
३. रेत से जो तामीर[३] हुआ, उस घर में उसकी बसती है।
४. माइआ में आनन्द करे, रस रंग की उस को मस्ती है।
५. फानी[४] को यह बाकी[५] समझे फानी की पहिचान नहीं।
६. मस्त है मन की मौजों में, कुछ मौत का उसको ध्यान नहीं।
७. बैर, अदावत, शहिदत[६] गुस्सा, इस दुनिया से प्यार भी है।
८. भारी लोभ और झूठ दगा, इन चीजों से बिउहार भी है।
९. इस सूरत से पापों ही में, उस ने भोगे लाख जनम।
१०. 'नानक' की है अरज बचा ले, या रब करके मिहकरम[७] ॥ ७ ॥

१. सहायता। २. अत्याचार। ३. बनया। ४. नाशवान। ५. सदीवी, पक्का। ६. इन्द्रियों का वेग। ७. कृपा।

१. तू ठाकर तुम पहि अरदास॥

२. जीउ पिंड सभ तेरी रासि॥

३. तुम मात पिता हम बारिक तेरे॥

४. तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे॥

५. कोइ न जानै तुमरा अंत॥

६. ऊचे ते ऊचा भगवंत॥

७. सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी॥

८. तुम ते होइ सु आगिआकारी॥

९. तुमरी गति मिति तुम ही जानी॥

१०. नानक दास सदा कुरबानी॥ ८॥ ४॥

१. तू मालिक तू खालिक मेरा, तुझ पर मैं अरदास[1] करुं।
२. तन मन सब कुछ तेरी माया, पेश[2] मैं सारी रास[3] करुं।
३. तू मां बाप हमारा है, हम बच्चे बाले तेरे हैं।
४. हासिल तेरी रहिमत से, सुख चैन हमें बहुतेरे हैं।
५. तेरा अंत न कोई जाने, रुतबा तेरा न्यारा है।
६. ऊंचा है तू हर ऊंचे से, तू भगवान हमारा है।
७. तार में अपने आप परोई, तूने जग की माला है।
८. हुक्म जो तुझसे मिलता है, वह होकर रहने वाला है।
९. अपनी हद और अपनी हालत, तुझ पर रौशन सारी है।
१०. 'नानक' तेरा दास है या रब, तुझ पर ये बलिहारी है। ८। ४।

---

१. बेनती। २. हाजर। ३. धन दौलत। ४. दर्जा। ५. कुर्बान।

सलोकु ॥

१. देनहारु प्रभ छोडि कै
लागहि आन सुआइ ॥
२. नानक कहू न सीझई
बिनु नावै पति जाइ ॥१ ॥

१. दाता का दर छोड़ कर,
गैर[१] को जो अपनाए[२]।
२. 'नानक' कब मकबूल[३] हो,
नाम तजे, पत[४] जाए ॥ १ ॥

१. दूसरों को। २. सनमाने। ३. प्रवान। ४. इज्जत।

असटपदी ॥

१. दस बसतू लै पाछै पावै ॥
२. ऐक बसतू कारनि बिखोटि गवावै ॥
३. एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥
४. तउ मूड़ा कहु कहा करेह ॥
५. जिस ठाकुर सिउ नाही चारा ॥
६. ना कउ कीजै सद नमसकारा ॥
७. जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥
८. सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥
९. जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥
१०. सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥१ ॥

१. दस दस चीजें रब से लेकर, उन के ढेर लगाता है।
२. एक से जब इन्कार हुआ, फिर क्यों इन्सान१ गंवाता है।
३. दस चीजें भी छीने२ तुझ को, एक से भी इन्कारी हो।
४. मूर्ख बोल करे क्या तू, जोर नहीं तूं जारी३ हो।
५. जिस मालिक पर जोर नहीं तसलीम४ उसे तसलीम४ उसे।
६. वह मर्जी का मालिक है, ताजीम५ उसे ताजीम उसे।
७. मीठा जिसको नाम खुदा का, मन उस का मसरूर६ रहे।
८. मन उसका मसरूर रहे, वह खुशियों से भरपूर रहे।
९. उस मालिक ने जिस बन्दे से, हुक्म अपना मनवाया है।
१०. 'नानक' उसको घाटा क्या है, जो मांगा सो पाया है।

---

१. निश्चय, श्रद्धा। २. छीन ले। ३. लाचार। ४. प्रवान करना। ५. आदर, सत्कार। ६. खुश, प्रसन्न।

१. अगनत साहु अपनी दे रासि ॥
२. खात पीत बरतै अनद उलासि ॥
३. अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥
४. अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥
५. अपनी परतीति आप ही खोवै ॥
६. बहुरि उस का बिसवासु न होवै ॥
७. जिसकी बसतु तिसु आगै राखै ॥
८. प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥
९. उस ते चउगुन करै निहाल ॥
१०. नानक साहिब सदा दइआलु ॥२ ॥

१. शाह से बंदा माल और दौलत, बेगिनती के पाता है।
२. खाता है कुछ पीता है, कुछ बरने[१] अैश मनाता है।
३. शाह अमानत अपनी से, कुछ वापस जब ले जाता है।
४. मन जाहिल[२] फिर रुठ[३] के उस से, गुस्से में क्यों आता है।
५. अपनी करतूतों से मूर्ख, अपनी साख[४] गंवाता है।
६. शाह को सब उठ जाए भरोसा, भेद भ्रम खुल जाता है।
७. जिस मालिक की दौलत है, रख उस मालिक के आगे तू।
८. मान कहा सर आँखों पर[५], क्यों हुक्म से उनके भागे तू।
९. राजी होकर मालिक तुझ को, चार गुना[६] खुशहाल करे।
१०. रहिमत वाला साहिब हरदम, 'नानक' माला माल करे॥ २॥

१. इस्तेमाल करता हैं। २. मूर्ख, अज्ञानी। ३. रूठ कर, गुस्से होकर। ४. एतबार, भरोसा। ५. सिर माथे पर। ६. चौगुना।

१. अनिक भाति माइआ के हेत॥

२. सरपर होवत जानु अनेत॥

३. बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै॥

४. ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै॥

५. जो दीसै सो चालनहार॥

६. लपटि रहिओ तह अंध अंधारु॥

७. बटाऊ सिउ जो लावै नेह॥

८. ता कउ हाथि न आवै केह॥

९. मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई॥

१०. करि किरपा नानक आपि लए लाई॥३॥

१. माया[१] रंगा रंगी निआरी, जी तेरा परचाती है।
२. पक्की बात समझ ले बंदे, आती है यह जाती है।
३. पेड़[२] का साइया[३] भाइआ है, तू उस से प्रीत लगाता है।
४. जब वह साइया[३] जाता है, तो पीछे क्यों पछताता है।
५. जो कुछ देख रहा है तू, यह सब कुछ जाने वाला है।
६. मन का अंधा लिपटे उन से, वह उनका मतवाला[४] है।
७. राही[५] से जो प्रीत लगाए, वह आखिर को रोता है।
८. खाक न उसके हाथ लगे, दिल देता है सो खोता[६] है।
९. प्रीत करे जो नाम से रब के मन मेरे सुख पाता है।
१०. 'नानक' अपनी कृपा से वह अपने साथ मिलाता है।

---

१. दुनियावी पदार्थ। २. वृक्ष, दरखत। ३. छांव। ४. प्रेमी हुआ है। मोहित हो गया। ५. मुसाफर। ६. गंवाता है।

१. मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ ॥

२. मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥

३. मिथिआ राज जोबन धन माल ॥

४. मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥

५. मिथिआ रथ हसती असव बसत्रा ॥

६. मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥

७. मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥

८. मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥

९. असथि भक्ति साध की सरन ॥

१०. नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥ ४ ॥

१. तन और धन और बच्चे वाले, फानी[१] हैं सब फानी हैं।
२. माया खुदी[२] तकबर[३] वाले, फानी हैं सब फानी हैं।
३. जोबन राज जवानी दौलत, फानी हैं सब फानी हैं।
४. काम क्रोध और गुस्सा शहिदत[४], फानी हैं सब फानी हैं।
५. रथ पुशाकें घोड़े हाथी, फानी हैं सब फानी हैं।
६. जर[५] का प्रेम और हंसते साथी, फानी हैं सब फानी हैं।
७. मोह फरेब तकबर निखवत[६] फानी हैं सब फानी हैं।
८. तेरे मान गुमान और शौकत, फानी हैं सब फानी हैं।
९. साधों के साए में भगनी, काइम[७] है पाविंदह[८] हैं।
१०. मालिक के चरनों में 'नानक' नाम की जप कर जिंदा हैं। ४।

१. नाशवान। २. अहंकारी। ३. घमण्ड। ४. कामवासना। ५. धन।

१. मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥
२. मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥
३. मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥
४. मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥
५. मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥
६. मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥
७. मिथिआ तन नही परउपकारा ॥
८. मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥
९. बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥
१०. सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥ ५ ॥

१. कान सुने जो गैर की गैबत[१], फानी[२] है वह फानी है।
२. हाथ[३] जो छीने, गैर की दौलत, फानी[२] है वह फानी है।
३. आंख जो घूरे गैर की औरत, फानी[२] है वह फानी है।
४. जीभ जो ले भोजन की लजत[४], फानी[२] है वह फानी है।
५. पाउ जो शर[५] को भागा जाए, फानी[२] है वह फानी है।
६. मन जो गैर के धन पे आए, फानी[२] है वह फानी है।
७. कोई न हो जिस तन से नेकी, फानी[२] है वह फानी है।
८. नाक को सूंघे बास[६] बदी[७] की, फानी[२] है वह फानी है।
९. जब तक मन में ज्ञान न हो, हर चीज़ जहां की फानी है।
१०. 'नानक' रब का नाम लीए, फल देता तन इन्सानी है। ५।

---

१. निंदा। २. नाश हो जाने वाला। ३. छीनना, लूटमार। ४. स्वाद। ५. बुराई की ओर। ६. वासना, बुराई। ८. दुनिया।

१. बिरथी साकत की आरजा ॥

२. साच बिना कह होवत सूचा ॥

३. बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥

४. मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥

५. बिन सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ ॥

६. मेघ बिन जिउ खेती जाइ ॥

७. गोबिंद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥

८. जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥

९. धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥

१०. नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥ ६ ॥

१. जाएं अकारथ[१] रब से मुनकिर[२], काफर[३] कुफर[४] कमाएंगे।
२. सच से जब तक काम न लेंगे, पाक[५] कहां हो जाऐंगे।
३. जाऐ अकारथ नाम से जो, खाली हैं दिल के अंधे हैं।
४. उन के मुंह से आए अफूनत[६], बन्दे गंदे मंदे हैं।
५. जाए अकारथ जीना, जिन में कहीं दिन रात न हो।
६. सूख के जल जाएगी खेती, जब उस पर बरसात न हो।
७. भाड़ में जाऐं काम जहां के, जिन में रब का नाम नहीं।
८. भाड़ में जाए सूम की दौलत, जिससे कुछ आराम नहीं।
९. मन में जिनके नाम खुदा का, उनकी किस्मत न्यारी है।
१०. 'नानक' दिल कुर्बान है उन पर, जान मेरी बलिहारी है। ६।

---

१. निष्फल, व्यर्थ। २. नास्तिक। ३. अधर्मी। ४. अधर्म। ५. पवित्र, धर्मी। ६. दुर्गन्ध। ७. भट्ठ में पढ़ें।

१. रहत अवर कछु अवर कमावत ॥
२. मनि नही प्रीति मुखह गंढ लावत ॥
३. जाननहार प्रभु परबीन ॥
४. बाहरि भेख न काहू भीन ॥
५. अवर उपदेसै आपि न करै ॥
६. आवत जावत जनमै मरै ॥
७. जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥
८. तिस की सीख तरै संसारु ॥
९. जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥
१०. नानक उन जन चरन पराता ॥ ७ ॥

१. फर्ज उसका और, मगर वह काम सभ उलटे करता जाए।
२. दिल में उसके प्रेम नहीं गो, उलफत[1] के दम भरता जाए।
३. जाननहार खुदा के आगे, भेद खुलेगा अैबों[2] का।
४. भेस न उस का काम आएगा, भेद खुलेगा अैबों[2] का।
५. और को जो उपदेश करे, खुद काम न वैसे करता है।
६. आता है वह जाता है, वह जीता है, वह मरता है।
७. जिस के मन में बसने वाला, आप वह निरंकार हुआ।
८. उस के पाक[3] उपदेशों से, दुनिया का बेड़ा पार हुआ।
९. बंदे जो मकबूल[4] तेरे हैं, दाता तुझ को जानेंगे।
१०. पाउं पर उन के सीस झुका कर, 'नानक' उनको मानेंगे।

---

१. प्रेम, प्यार। २. कुकर्मों का। ३. पवित्र। ४. प्रवान।

१. करउ बेनती पारब्रह्मु सभु जानै ॥

२. अपना कीआ आपहि मानै ॥

३. आपहि आप आपि करत निबेरा ॥

४. किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥

५. उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥

६. सभु कछु जानै आतम की रहत ॥

७. जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥

८. थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥

९. सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥

१०. निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५ ॥

१. अरज गुजारुं रब आली से आप ही सब कुछ जाने वुह।
२. सब को पैदा करने वाला, मान हमारा माने वुह।
३. जो चाहे खुद आप निबेड़े, गैरों[1] से वुह काम न ले।
४. एक को दूर सुझाई दे, और एक को पास सुझाई दे।
५. जात बड़ी और पाक है उस की, सभ तरकीबों चालों से।
६. वाकिफ हैं वुह दिल के मखफी[2] हालों और ख्यालों से।
७. अपने साथ मिला ले उसको जो, उस के मन भाया है।
८. हाजर है वुह नाजर है वुह, वुह जुग में आप समाया है।
९. उसका सेवक हो जाता है, जिस पर उसकी रहिमत[3] है।
१०. पल-पल नाम लिए जा नानक नाम ही उसका निअमत[4] है।८।५।

१. किसी और से। २. गुप्त। ३. बखशिश। ४. उत्तम वस्तु।

सलोकु ॥

१. काम क्रोध अरु लोभ मोह,
बिनसि जाइ अहंमेव ॥
२. नानक प्रभ सरणागती
करि प्रसादु गुरदेव ॥ १ ॥

१. काम क्रोध और लोभ मोह,
जाऐ मान गुमान[१]।
२. रहिमत[२] हो गुरदेव की,
'नानक' पाए ईमान॥ १॥

१. अहंकार। २. किरपा।

असटपदी ॥

१. जिह प्रसादि छतीह अंम्रित खाहि ॥
२. तिसु ठाकुर कउ रख मन माहि ॥
३. जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥
४. तिस कउ सिमरत परमगति पावहि ॥
५. जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥
६. तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥
७. जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥
८. आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥
९. जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥
१०. नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१ ॥

१. जिस दाता की रहिमत[1] से, छतीस[2] तू अमृत खाता है।
२. उस मालिक को याद किए जा, भूल उसे क्यों जाता है।
३. जिस दाता की रहिमत से तू अतर फुलेल लगाता है।
४. नाम उसी का जपने से, मुक्ती का रसता पाता है।
५. जिस दाता की रहिमत से, जा रहता है सुखमंदर तूं।
६. उस का धिआन कीए जा मन में, नाम बसाए अन्दर तूं।
७. जिस दाता की रहिमत से, तू कुनबे[3] में आराम करे।
८. लाजिम[4] है फिर आठ पहर, तू याद उसी का नाम करे।
९. जिस दाता की रहिमत से, तन मन का तुझको अैग[5] मिले।
१०. 'नानक है वुह ध्यान के काबिल[6], हरदम कर ले याद उसे।१।

१. किरपा। २.३६ प्रकार के। ३. परिवार। ४. जरूरी। ५. आराम। ६. योग।

१. जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि ॥

२. तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥

३. जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥

४. मन आठ पहर ताका जसु गावीजै ॥

५. जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥

६. मुखि ताको जसु रसन बखानै ॥

७. जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥

८. मन सदा धिआइ केवल पारब्रह्म ॥

९. प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥

१०. नानक पति सेती घरि जावहि ॥२ ॥

१. जिस दाता की रहिमत से, तू रेशम पहिना करता है।
२. छोड़ के उसकी उलफत को, किऊं गैरों का दम भरता है।
३. जिस दाता की रहिमत से तू सोए सुख की सेजों पर।
४. गाए जा गुन गाए जा, अै दिल[1] तू उठ के आठ पहिर।
५. जिस दाता की रहिमत से, तू पाए इज्जत शान सदा।
६.मूह से और जबां से अपनी, कर ले उसकी हमद[2] सना[3]।
७. जिस दाता की रहिमत से, तू धरम पे अपने काइम हो।
८. खालस धिआन उस पाक खुदा का[4] चाहिए मन में दाइम[5] हो।
९. नाम प्रभू का जपने से, दरगह में इज्जत पाएगा।
१०. नानक फिर बाइजत[6] होकर, तू अपने घर जाएगा। २।

---

१. प्रेम। २. उस्तति। ३. गुणगाइन। ४. पवित्र प्रभू का। ५. सदीवी ६. इज्जत वाला।

१. जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥

२. लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥

३. जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥

४. मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥

५. जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके॥

६. मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ताकै ॥

७. जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥

८. मन सासि सासि सिमरहु प्रभ उचे ॥

९. जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥

१०. नानक ता की भक्ति करेह ॥३ ॥

१. जिस दाता की रहिमत से, बेरोग सुनहिरी काइआ पाए।
२. लाजिम है उस प्यारे रब पर, प्रेम से अपना धिआन जमाए।
३. जिस दाता की रहिमत से, तेरी इज्जत कायम रहती है।
४. उसकी हमद सना करने से, राहत[2] दाइम[3] रहती है।
५. जिस दाता की रहिमत से, हर अैब तेरा मसतूर[4] रहे।
६. आ जा उसके साए[5] में, किउं रब आली से दूर रहे।
७. जिस दाता की रहिमत से, तू खलक में हसती आली[6] है।
८. अै मेरे मन याद से उसको, सास तेरा किउं खाली है।
९. जिस दाता की रहिमत से, यह तन तुझको नायाब[7] मिला।
१०. उस की भगती कर ले 'नानक' उसकी भगती करता जा। ३।

---

१. इज्जत। २. आराम, शांति। ३. हमेशा। ४. छिपा। ५. शरन। ६. सब जीवों में उत्तम। ७. अमोलक।

१. जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै॥

२. मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै॥

३. जिह प्रसादि अस्व हसत असवारी॥

४. मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी॥

५. जिह प्रसादि बाग मिलख धना॥

६. राखु परोइ प्रभु अपुने मना॥

७. जिनि तेरी मन बनत बनाई॥

८. ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई॥

९. तिसहि धिआइ जो एकु अलखै॥

१०. ईहा ऊहा नानक तेरी रखै॥४॥

१. जिस दाता की रहिमत से, तू गहिने पहने फिरता है।
२. ऐ मन मेरे याद कर उस को, क्यों मस्ती में घिरता है।
३. जिस दाता की रहिमत से, चढ़ने को घोड़े हाथी पाऐ।
४. ऐ मने मेरे लाजिम[१] है, उस रबारां[२] को भूल न जाए।
५. जिस दाता की रहिमत से, तू दौलत बाग जमीनें पाऐ।
६. अे देल उसका नाम प्रो कर, सुन्दर मन का हार बनाए।
७. जो दाता अै मन मेरे, यह तेरा ढांचा[३] आबाद करे।
८. लाजिम है जब उठें बैठें, हरदम उसको याद करें।
९. एक अलख[४] को याद किए जा, जो बाला से बाला[५] है।
१०. अब भी वुह रखवाला नानक आगे भी रखवाला है।४।

---

१. जरुरी। २. ईश्वर, सिरजनहार। ३. सरीर। ४. प्रमात्मा। ५. ऊंचे से ऊंचा।

१. जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान॥

२. मन आठ पहर करि तिस का धिआन॥

३. जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥

४. तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी॥

५. जिस प्रसादि तेरा सुंदर रूपु॥

६. सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु॥

७. जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति॥

८. सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति॥

९. जिह प्रसादि तेरी पति रहै॥

१०. गुर प्रसादि नानक जसु कहै॥ ५ ॥

१. जिस दाता की रहिमत से, तू कसरत[1] से पुन्न दान करे।
२. आठ पहिर लाजिम है अै दिल, उस दाता का धिआन करे।
३. जिस दाता की रहिमत से, तू अच्छे करम कमाता है।
४. कर ले याद उस रब को हरदम, भूल उसे किउं जाता है।
५. जिस दाता की रहिमत से, यह सुंदर रूप जवानी है।
६. उस दाता को याद कीए जा, मालिक वुह लासानी[2] है।
७. जिस दाता की रहिमत से, तू हासिल ऊंची जात करे।
८. लाजिम है फिर उस दाता को, याद सदा दिन रात करे।
९. जिस दाता की रहिमत से, दुनीआं में इजत पाए तू।
१०. 'नानक' गुर की रहिमत से, उस दाता के गुन गाए तू।५।

---

१. बहुत ज्यादा। २. बेजोड़।

१. जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥
२. जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥
३. जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना ॥
४. जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥
५. जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥
६. जिह प्रसादि सम्पूरन फलहि ॥
७. जिह प्रसादि परमगति पावहि ॥
८. जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥
९. एसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥
१०. गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६ ॥

१. जिस दाता की रहिमत से, सुनता है नगमें[१] प्यारे तू।
२. जिस दाता की रहिमत से, दिलकश[२] देखें नजारे[३] तू।
३.जिस दाता की रहिमत से, तू अमृित जैसी बात करें।
४. जिस दाता की रहिमत से, सुख सहजि यहां दिन रात करें।
५. जिस दाता की रहिमत से, हर काम में तेरा हाथ चले।
६. जिस दाता की रहिमत से, तू जग में फूले और फले।
७. जिस दाता की रहिमत से, तू आली-मुकती[४] पाता है।
८. जिस दाता की रहिमत से, तू सुख आनंद मनाता है।
९. छोड़ के अैसे दाता को, किउं गैर[५] को ढूंडें बोल जरा।
१०. 'नानक' गुर की बखशिश से, तू मन की आँखें खोल जरा। ६।

१. मनोहर गीत, प्रेम-तराने। २. मनमोहणे। ३. द्रिश। ४. ऊंची अवसथा।
५. प्रभू के बिना किसी और को।

१. जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥

२. तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥

३. जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥

४. रे मन मेरे मूढ़ तू ता कउ जापु ॥

५. जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥

६. तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥

७. जिह प्रसादि तूँ पावहि साचु ॥

८. रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥

९. जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥

१०. नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७ ॥

१. जिस दाता की रहिमत से, संसार में इज्जत पाए तू।
२. उस दाता को याद किए जा, उस को भूल न जाए तू।
३. जिस दाता की रहिमत से, यह शान और शौकत मिलती है।
४. ओ मन मूर्ख याद कर उसको, याद में इज्जत मिलती है।
५. जिस दाता की रहमत से हर, ख्वाहिश[१] तेरी पूरी हो।
६. हाजर नाजर जान उसे हर लहिजा पाक[२] हजूरी हो।
७. जिस दाता की रहमत से तू सच की दौलत पाएगा।
८. अै मन मेरे रच जा उस में प्रेम से निअमत[३] पाऐगा।
९. जिस दाता की रहिमत से, दुनिया का पार उतारा है।
१०. जपता है नाम उसका 'नानक' नाम उसी का प्यारा है।७।

---

१. इच्छा। २. पवित्र। ३. उत्तम पदार्थ।

१. आपि जपाए जपै सो नाउ॥

२. आपि गावाए सु हरि गुन गाउ॥

३. प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु॥

४. प्रभू दइआ ते कमल बिगासु॥

५. प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ॥

६. प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ॥

७. सरब निधान प्रभ तेरी मइआ॥

८. आपहु कछू न किनहू लइआ॥

९. जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ॥

१०. नानक इन कै कछू न हाथ॥ ८॥ ६॥

१. नाम खुदा का जपता है, तौफीक[१] जो उस से पाता है।
२. जिस पर रहिमत होती है, वह दाता के गुण गाता है।
३. रब की रहिमत जिस पर होगी, नूर[२] उसे मिल जाएगा।
४. रब की रहिमत जिस पर होगी, साफ कमल[३] खिल जाएगा।
५. रब की रहिमत हो तो मन में, बसता है हरि[४] आन वुही।
६. रब की रहिमत जिस जर होगी, आकिल[५] है इन्सान वही।
७. माल खजाने बख्शिश तेरी, तू ही सब का दाता है।
८. दाता आप न बखशे जब तक, कौन जहां कुछ पाता है।
९. मालिक जो जो हुक्म करे, वह करना काम हमारा है।
१०. 'नानक' के कुछ हाथ नहीं, बल जोर उसी का सारा है। ८।

१. समर्था। २. प्रकाश। ३. हृदय। ४. परमात्मा। ५. अकलमंद।

सलोकु ॥

१. अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥
जो जो कहै सु मुकता होइ ॥
२. सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥
साध जना की अचरज कथा ॥१ ॥

१. रब की आली जात[1] है,
जिस की थाह[2] न आए।
जो जो उस का नाम ले,
नाम से मुक्ति पाए।
२. 'नानक' की यह अरज[3] है,
सुन ले मेरे मीत।
बात निराली साध की,
कर साधों से प्रीत ॥ १ ॥

---

१. ऊंची जात। २. अंत। ३. बेनती, प्रार्थना।

असटपदी ॥

१. साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥
२. साध संगि मलु सगली खोत ॥
३. साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥
४. साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥
५. साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥
६. साध संगि सभु होत निबेरा ॥
७. साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥
८. साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥
९. साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥
१०. नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१ ॥

१. साध की संगत कर ले बन्दे, चेहरा हो पुर नूर[१] तेरा।
२. साध की संगत कर ले बन्दे, मैल हो मन का दूर तेरा।
३. साध की संगत कर ले बन्दे, जाएगा सब मान गरुर[२]।
४. साध की संगत कर ले बन्दे, ज्ञान का हो सब नूर जहूर।
५. साध की संगत कर ले बन्दे, कुरब[३] खुदा का पाएगा।
६. साध की संगत कर ले बन्दे, सब धंधा मिट जायेगा।
७. साध की संगत कर ले बन्दे, नाम खुदा का हीरा पाए।
८. साध की संगत कर ले बन्दे, एक खुदा पर जान लड़ाए।
९. किस फानी[४] को कुबत[५] है, जो साधों की तारीफ[६] करे।
१०. 'नानक' रब की हमद[७] करे, जो साधों की तौसीफ[८] करे ॥१ ॥

---

१. प्रकाशवान, उजला। २. अहंकार। ३. लड़ना। ४. नाशवान। ५. ताकत। ६. उसतति। ७. वडिआई। ८. गुणगान।

१. साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥

२. साध कै संगि सदा परफुलै ॥

३. साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥

४. साध संगि अंम्रित रसु भुंचा ॥

५. साध संगि होइ सभ की रेन ॥

६. साध कै संगि मनोहर बैन ॥

७. साध कै संगि न कतहूं धावै ॥

८. साध संगि असथिति मनु पावै ॥

९. साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥

१०. साध संगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२ ॥

१. साध की संगत कर ले बन्दे, अन देखा[१] रब पाएगा।
२. साध की संगत कर ले बन्दे, फूल के फलता जाएगा।
३. साध की संगत कर ले बन्दे, पांचों जजबों[२] पर हो बस।
४. साध की संगत कर ले बन्दे, नाम का पाए अमृत रस।
५. साध की संगत कर ले बन्दे, बन कर सब की खाक[३] रहे।
६. साध की संगत कर ले बन्दे, बातें सुंदर पाक[४] रहे।
७. साध की संगत कर ले बन्दे, मन फिर क्यों अवारा[५] हो।
८. साध की संगत कर ले बन्दे, काइम मन का पारा हो।
९. साध की संगत कर ले बन्दे, माया मन से दूर रहे।
१०. साध की संगत कर ले 'नानक' रब तुम से मसरुर[६] रहे।

---

१. अदृश्य। २. पाँच इन्द्रियां या पाँच दोष - काम क्रोध आदि। ३. धूड़ी। ४. पवित्र। ५. भटकने वाला। ६. प्रसन्न।

१. साध संगि दुसमन सभि मीत॥

२. साधु कै संगि महा पुनीत॥

३. साध संगि किस सिउ नही बैरु॥

४. साध कै संगि न बीगा पैरु॥

५. साध कै संगि नाही को मंदा॥

६. साध संगि जाने परमानंदा॥

७. साध कै संगि नाही हउ तापु॥

८. साध कै संगि तजै सभु आपु॥

९. आपे जानै साध बडाई॥

१०. नानक साध प्रभू बनिआई॥३॥

१. साध की संगत कर ले बन्दे, दुश्मन भी हो यार तमाम।
२. साध की संगत कर ले बन्दे, आला हों करदार[1] तमाम।
३. साध की संगत कर ले बन्दे, पास न आए बैर कभी।
४. साध की संगत कर ले बन्दे, जाऐं न टेढ़े पैर कभी।
५. साध की संगत कर ले बन्दे, बद[2] न किसी को पाएगा।
६. साध की संगत कर ले बन्दे, अबदी-चैन[3] मनाएगा।
७. साध की संगत कर ले बन्दे, तप न खुदी की[4] आएगी।
८. साध की संगत कर ले बन्दे, खुदराई[5] भज जाएगी।
९. आप खुदा ही जाने जो, संतों की शान बड़ाई है।
१०. 'नानक' साधों और खुदा, इन दोनों की बन आई[6] है।३।

---

१. आचरण। २. बूरा। ३. परम अनंद। ४. हउमै की आग। ५. मनमुखता। ६. प्यार होता है।

१. साध कै संगि न कबहू धावै ॥
२. साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥
३. साध संगि बसतु अगोचर लहै ॥
४. साधू कै संगि अजरु सहै ॥
५. साधु कै संगि बसै थानि ऊचै ॥
६. साधु कै संगि महलि पहूचै ॥
७. साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥
८. साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥
९. साध कै संगि पाए नाम निधान ॥
१०. नानक साधू कै कुरबान ॥४ ॥

१. साध की संगत कर ले बंदे, मन की भटकन जाएगी।
२. साध की संगत कर ले बंदे, हरदम राहत[१] आएगी।
३. साध की संगत कर ले बंदे, बातन[२] का सब भेद खुले।
४. साध की संगत कर ले बंदे, अनसहिनी[३] आसान सहे।
५. साध की संगत कर ले बंदे, आला मंजिल[४] पाएगा।
६. साध की संगत कर ले बंदे, रब के घर में जाएगा।
७. साध की संगत कर ले बंदे, पुखता[५] फिर ईमान[६] रहे।
८. साध की संगत कर ले बंदे, खालस रब में ध्यान रहे।
९. साध की संगत कर ले बंदे, नाम की दौलत जर[७]।
१०. 'नानक' मैं कुरबान गिआ, इन साधों पर, इन संतों पर। ४।

---

१. शांति। २. गुप्त। ३. असहि। ४. ऊंची अवस्था। ५. पक्का, दृढ़। ६. धर्म। ७. धन।

१. साध कै संगि सभ कुल उधारै॥

२. साध संगि साजन मीत कुटंब निसतारै॥

३. साधू कै संगि सो धनु पावै॥

४. जिसु धन ते सभु को वरसावै॥

५. साध संगि धरमराइ करे सेवा॥

६. साध कै संगि सोभा सुर देवा॥

७. साधू कै संगि पाप पलाइन॥

८. साध संगि अंम्रित गुन गाइन॥

९. साध कै संगि स्रब थान गंमि॥

१०. नानक साध कै संगि सफल जनंम॥५॥

१. साध की संगत करने से, कुल कुनबे[१] का हो बेड़ा पार।
२. साध की संगत करने से, बच जाए कबीला साजन यार।
३. साध की संगत करने से, तू ऐसी दौलत पाएगा।
४. जिस दौलत से औरों पर भी, तू रहिमत बरसाएगा।
५. साध की संगत करने से, खुद सेवा धर्मी राज[२] करे।
६. साध की संगत करने से, इन्द्र भी तुझ को सोभा दे।
७. साध की संगत करने से, सभ पाप तेरे झड़ जाते हैं।
८. साध की संगत करने से, हम अमृत से गुण गाते हैं।
९. साध की संगत करने से, हर मनजल को जा लेता है।
१०. साध की संगत करने से, 'नानक' जीना फल देता है[३]।५।

---

१. सारे परिवार। २. धर्मराज। ३. जीवन सफल हो जाता है।

१. साध कै संगि नही कछु घाल॥
२. दरसनु भेटत होत निहाल॥
३. साध कै संगि कलूखत हरै॥
४. साध कै संगि नरक परहरै॥
५. साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला॥
६. साध संगि बिछुरत हरि मेला ॥
७. जो इछै सोई फलु पावै॥
८. साध कै संगि न बिरथा जावै॥
९. पारब्रहमु साध रिद बसै॥
१०. नानक उधरै साध सुनि रसै॥६ ॥

१. साध की संगत करने से, सब कष्ट मुसीबत दूर रहे।
२. साध के दर्शन होने से, इन्सान सदा मसरूर[1] रहे।
३. साध की संगत करने से, सब दाग और धबे धोए जाऐं[2]।
४. साध की संगत करने से, हम दोजख[3] से छुटकारा पाऐं।
५. साध की संगत करने से, सुख दोनों जग[4] में पाते हैं।
६. साध की संगत करने से, जो विछुड़े हैं मिल जाते हैं।
७. साध की संगत करने से, जो चाहेगा फल पाएगा।
८. साध की संगत करने से, इन्सान न खाली जाएगा।
९. साध के मन मन्दिर के अन्दर, आली रब का नाम रहे।
१०. साध की मीठी बात से 'नानक', नेक तेरा अंजाम[5] रहे।

१. प्रसन्न, खुश। २. सब औगुण नाश हो जाते हैं। ३. नरक। ४. लोक ते प्रलोक। ५. अन्त।

१. साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥

२. साध संगि हरि के गुन गाउ ॥

३. साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥

४. साध संगि सरपर निसतरै ॥

५. साध कै संगि लगै प्रभ मीठा ॥

६. साधु कै संगि घटि घटि डीठा ॥

७. साध संगि भए आगिआकारी ॥

८. साध संगि गति भई हमारी ॥

९. साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥

१०. नानक साध भेटे संजोग ॥ ७ ॥

१. साध की संगत करने से, रब नाम सदा सुन पाओगे।
२. साध की संगत करने से, उस दाता के गुण गाओगे।
३. साध की संगत करने से, हम नाम खुदा का भूल न जाएं।
४. साध की संगत करने से, इन्सान यकीनन[1] मुक्ति पाएं।
५. साध की संगत करने से, हो मीठा रब का नाम सदा।
६. साध की संगत करने से, हर दिल में देखें नूर खुदा[2]।
७. साध की संगत करने से, हम सब फरमाबरदार[3] हुए।
८. साध की संगत करने से, सब बेड़े अपने पार हुए।
९. साध की संगत करने से, जो रोग भी हों मिट जाएंगे।
१०. 'नानक' अच्छे भागों वाले, साध की संगत पाएंगे॥ ७॥

---

१. निश्चय नाल। २. प्रभु का प्रकाश। ३. आज्ञाकारी।

१. साध की महिमा बेद न जानहि ॥

२. जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥

३. साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥

४. साध की उपमा रही भरपूरि ॥

५. साध की सोभा का नाही अंत ॥

६. साध की सोभा सदा बेअंत ॥

७. साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥

८. साध की सोभा मूच ते मूची ॥

९. साध की सोभा साध बनि आई ॥

१०. नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥ ७ ॥

१. शान है ऊंची साधों की जो बेद कहां बतलाते हैं।
२. सुन पाते हैं जितना जितना, उतने ही गुण गाते हैं।
३. शान है ऊंची साधों की जो तीन गुणों[१] से दूर रहे।
४. शान है ऊंची साधों की जग जिस से कुल भरपूर रहे।
५. शान है ऊंची साधों की जिस शान अंत अंजाम[२] नहीं।
६. शान है ऊंची साधों की जो होती खत्म तमाम नहीं।
७. शान है ऊंची साधों की जो हर बाला से बाला[३] है।
८. शान है ऊंची साधों की जो हर आला से आला है।
९. शान है ऊंची साधों की जो साधों को रास आई है।
१०. 'नानक' रब और साधों में, कहता कौन जुदाई[४] है ॥·८ ॥

---

१. तीन गुण, सतो गुण, रजो गुण, तमो गुण। २. पारावार। ३. ऊंची से ऊंची। ४. विभिन्नता।

सलोकु ॥

१. मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥

२. अवरु पेखै एकसु बिनु कोइ ॥

३. नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥ १ ॥

१. जिस के मन में सच बहे,
सच्ची जिस की बात।
२. आस न रखे गैर[१] की,
जाने एक ही जात।
रब का उस को ज्ञान है,
गैर न उस को भाए।
३. 'नानक' जिस के वसफ[२] येह,
ब्रह्माज्ञानी[३] कहिलाए॥ १।

१. बेगाना। २. सिफतां। ३. पूर्ण मनुष्य।

असटपदी ॥

१. ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥
२. जैसे जल महि कमल अलेप ॥
३. ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥
४. जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥
५. ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥
६. जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥
७. ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥
८. जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥
९. ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥
१०. नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१ ॥

१. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, दुनिया से नापाक न हो।
२. जैसे फूल कंवल का जल में, खुश्क रहे, नामनाक[१] न हो।
३. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, वुह दाइम[२] बेदाग[३] रहे।
४. जैसे सूर्य सूख सुखा कर, हर शै पाक और साफ करे।
५. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, सब को देखे एक नजर।
६. यकसां[४] जैसे आए हवा, राजओं और कंगालों पर।
७. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, सबर से हरदम काम वह ले।
८. जैसे धरती को इक खोदे, इक चन्दन का लेप करे।
९. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, गुन वाला गुनवान है वह।
१०. आतिश[५] जैसी फितरत[६] उसकी, 'नानक' पाक इन्सान है वह।

---

१. गिला। २. सदीवी। ३. निवविकार, निर्दोष। ४. एक जैसी। ५. आग।
६. स्वभाव।

१. ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला॥

२. जैसे मैल न लागै जला॥

३. ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु॥

४. जैसे धर ऊपरि आकासु॥

५. ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि॥

६. ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान॥

७. ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा॥

८. मनि अपनै है सभ ते नीचा॥

९. ब्रहम गिआनी से जन भए॥

१०. नानक जिन प्रभु आपि करेइ॥ २॥

१. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, दिल का पाक और साफ है वह।
२. मैल लगे कब पानी को, जब निखरे तो शफाफ[1] है वह।
३. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, उस में नूर[2] समाया है।
४. देखो जैसे धरती पर, आकाश बराबर छाया है।
५. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, दुश्मन दोस्त बराबर हैं।
६. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, उस से दूर खुदी[3] की मैं[4]।
७. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, वह आला से आला है।
८. सब से खुद को नीचा समझे, गो बाला से बाला है।
९. रब का ज्ञान उसी को है, रब जिस को ज्ञानी आप बनाए।
१०. 'नानक' ज्ञान उसी को होगा, मालक जिसको आप सिखाए। २।

---

१. निर्मल। २. रबी प्रकाश। ३. हउमै, अहंकार। ४. शराब, नशा, मस्ती।

१. ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥
२. आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥
३. ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥
४. ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥
५. ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥
६. ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥
७. ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥
८. ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥
९. ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥
१०. नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥ ३ ॥

१. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, खुद को सब की खाक[1] बनाए।
२. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, वह रुहानी[2] लजत[3] पाए।
३. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, सब पर शफक़त[4] करता जाए।
४. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, शर[5] उसके नजदीक न आए।
५. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, एक नजर सब उसको भाऐं।
६. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, नैन उसके अमृत बरसाऐं।
७. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, हर बंधन से मुक्ति पाए।
८. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, वह नेकी के रसते जाए।
९. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, उस का भोजन रब का ज्ञान।
१०. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, 'नानक' उसका रब में ध्यान। ३।

---

१. चरण-धूल। २. आत्मिक। ३. आनंद। ४. मेहरबानी। ५. बदी।

१. ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस॥

२. ब्रहम गिआनी का नही बिनास॥

३. ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा॥

४. ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा॥

५. ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा॥

६. ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा॥

७. ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला॥

८. ब्रहम गिआनी सुफल फला॥

९. ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु॥

१०. नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु॥ ४ ॥

१. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, एक खुदा पर आस लगाए।
२. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, मौत भी उसके पास न आए।
३. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, वह मसकीन तबीअत[1] पाए।
४. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, रहिमो-कर्म[2] पर उमडा आए।
५. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, सब धंधों से यकसू[3] हो।
६. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, उस को मन पर काबू हो।
७. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, उस से हों सब काम भले।
८. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, जग में फूले और फले।
९. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, उस की संगत करदे पार।
१०. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, 'नानक' गुन गाए संसार॥ ४॥

---

१. नम्रता वाला। २. परोपकार। ३. बे-फिकर।

१. ब्रहम गिआनी कै एकै रंग॥

२. ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग॥

३. ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु॥

४. ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु॥

५. ब्रहम गिआनी सदा सद जागत॥

६. ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत॥

७. ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद॥

८. ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद॥

९. ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास॥

१० नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास॥ ५ ॥

१. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, उलफत[1] में यकरंग[2] रहे।
२. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, रब भी उस के संग रहे।
३. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, नाम उस को आधार रहे।
४. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, नाम उस का प्रवार रहे।
५. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, रहिता है बेदार[3] सदा।
६. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, दूर उस से पंदार[4] सदा।
७. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, मन उसका खुरसंद[5] रहे।
८. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, घर उस के आनंद रहे।
९. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, चैन और सुख में बसता जाए।
१०. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, 'नानक' वह कब मिटने पाए।

---

१. प्यार। २. इक रंग। ३. तैयार बर तैयार, जाग्रत। ४. अहंकार। ५. प्रसन्न।

१. ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥

२. ब्रहम गिआनी एक संगि हेता ॥

३. ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत ॥

४. ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥

५. ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥

६. ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥

७ ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाइऐ ॥

८. ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥

९. ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥

१० नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥ ६ ॥

१. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, ब्रह्म ज्ञानी कहलाता है।
२. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, एक से प्रेस लगाता है।
३. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, चिंता उस से दूर रहे।
४. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, पाक[1] उसका दसत[2] रहे।
५. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, जिसको देता वाली[3] है।
६. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, उसकी शान निराली है।
७. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, किस्मत ही से पाएं हम।
८. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, बल बल उसके जाए हम।
९. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, ढूंढे उस को महेश्वर[4] आप।
१०. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, 'नानक' वह परमेश्वर आप।६।

---

१. साफ, पवित्र। २. कार बिहार। ३. परमात्मा। ४. शिव जी।

१. ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥

२. ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥

३. ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥

४. ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥

५. ब्रहम गिआन का कथिआ न जाए अधाखरु ॥

६. ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥

७. ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥

८ ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥

९. ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥

१०. नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥ ७ ॥

१. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, बंदा है अनमोल वही।
२. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, रोशन उस पर हाल सबी।
३. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, जाने उसका भेद खुदा।
४. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, उसको है आदेश[१] सदा।
५. ज्ञानी की तारीफ में हम से, आधा हरफ न लिखा जाए।
६. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, सब का वह ठाकुर[२] कहलाए।
७. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, कौन उसे पहचानेगा।
८. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, ज्ञानी उसको जानेगा।
९. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, अंत न उसका है अंजाम।
१०. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, 'नानक' उसको नित प्रणाम[३]।७।

१. नमस्कार। २. मालक, स्वामी। ३. नमस्कार।

१. ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता॥

२. ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता॥

३. ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता॥

४. ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता॥

५. ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु॥

६. ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु॥

७. ब्रहम गिआनी का सगल अकारु॥

८. ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु॥

९. ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी॥

१०. नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी॥८॥८॥

१. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, जग का करता धरता है।
२. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, जिंदा हैं, कब मरता है।
३. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, सुख मुक्ती का दाता है।
४. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, पूरा काम बनाता है।
५. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, बे-नाथों[१] का नाथ[२] है वह।
६. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, रखता सब पर हाथ है वह।
७. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, खुद सारा संसार है वह।
८. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, आप ही निरंकार है वह।
९. जिस के मन में ज्ञान खुदा का, शान उसकी इरफानी[३] है।
१०. 'नानक' जो ज्ञानी है रब का, हाथ उसके सुलतानी[४] है।८।८।

---

१. बेआसरा। २. स्वामी। ३. ज्ञानमयी। ४. बादशाही।

सलोकु ॥

१. उरि धारै जो अंतरि नामु ॥
२. सरब मै पेखै भगवानु ॥
३. निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥
४. नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१ ॥

१. जिस के मन में बस गया,
प्यारे रब का नाम।
२. सब में जो भगवान का,
देखे नूर[१] तमाम।
३. पल पल रब को याद जो,
कर ले सीस[२] झुकाए।
४. अपरस[३] उस को जानीए,
'नानक' जग तैराए॥ १॥

१. प्रकाश। २. सिर। ३. पवित्र।

असटपदी ॥

१. मिथिआ नाही रसना परस ॥

२. मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥

३. पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥

४. साध की टहल संत संगि हेत ॥

५. करन न सुनै काहू की निंदा ॥

६. सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥

७. गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥

८. मन की बासना मन ते टरै ॥

९. इन्द्री जित पंच दोख ते रहत ॥

१०. नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१ ॥

१. झूठ न आए जिस के लब[१] पर, सच का जिस को जौक[२] रहे।
२. मन में इश्क खुदा का ही, दीदार[३] का हरदम शौक रहे।
३. नाम हरम[४] का रुप न देखे, अपनी आंख बचाए वह।
४. सेवा कर ले साधों की, संतों से प्रेम लगाए वह।
५. कानों की गैबत[५] से रोके, औरों के वह अैब छुपाए।
६. खुद को सब से नीचा समझ, अदना[६] खुद को कहता जाए।
७. गुर की उस पर रहिमत हो, सब बदीआं दूर हटाए वह।
८. दूर करे नफसानी[७] ख्वाहिश, मन को साफ बचाए वह।
९. बच कर पांचों अैबों[८] से, जो नफस[९] को जीते नेक हैं वह।
१०. 'नानक' लाखों इन्सानों से, ऐसा 'अपरस'[१०] एक है वह। १।

---

१. होंठ। २. स्वाद। ३. दर्शन। ४. पराई स्त्री। निंदा। ६. नीवा, तुच्छ। ७. काम वासना। ८. पाँच दोषः-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। ९. काम। १०. पवित्र।

१. बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥
२. बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥
३. करम करत होवै निहकरम ॥
४. तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥
५. काहू फल की इछा नहीं बाछै ॥
६. केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥
७. मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥
८. सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥
९. आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥
१०. नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥ २ ॥

१. 'वैष्णो' उसको जानो जिससे, आप खुदा मसरूर[१] रहे।
२. वैष्णो उसको जानो हरदम, जो माया से दूर रहे।
३. लाग से बचकर करम कमाए[२] करम हमेशा पाक रहे।
४. वैष्णो वह ऐसा है जिस का, धर्म हमेशा पाक रहे।
५. करम कमाए फल को त्यागे, फल का सोक मिटाए वह।
६. रब की खालस भगती कर के, दाता के गुण गाए वह।
७. याद करे तन मन में रब को, जिस ने सब को पाला है।
८. सब पर रहिमत करने वाला, बखशिश करने वाला है।
९. आप भी उस का नाम जपे, औरों को नाम जपाए वह।
१०. 'वैष्णो' उस को समझो 'नानक' आला रुत्बा[३] पाए वह। २।

---

१. प्रसन्न। २. निष्काम कर्म करे। ३. उत्तम पदवी।

१. भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥

२. सगल तिआगै दुसट का संगु ॥

३. मन ते बिनसै सगला भरमु ॥

४. करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥

५. साध संगि पापा मलु खोवै ॥

६. तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥

७. भगवंत की टहल करै नित नीति ॥

८. मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥

९. हरि के चरन हिरदै बसावै ॥

१०. नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥ ३ ॥

१. जिस का नाम 'भगौती' है, भगवान की भक्ति करता है।
२. जिस का नाम भगौती है, हर बद-सुहबत[१] से डरता है।
३. मन में भ्रम न राखे कोई, वहिम गुमान मिटाता है।
४. अपने रब को सब में देखे, उस को सीस झुकाता है।
५. जो सन्तों की संगत से, सब मैल कपट का धोता है।
६. उस का नाम भगौती है, वह अकल में काला[२] होता है।
७. हरदम अपनी भक्ति से, भगवान की सेवा करता है।
८. तन मन से वह अपने रब की, उलफत[३] का दम भरता है।
९. अपने मन के मंदर में, जो हरि[४] के चर्ण बसाता है।
१०. 'नानक' खास भगौती है वह, भगवान को अपने पाता है।

१. बुरी संगत। २. उत्तम। ३. प्रेम। ४. परमात्मा।

१. सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
२. राम नामु आतम महि सोधै ॥
३. राम नाम सारु रसु पीवै ॥
४. उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥
५. हरि की कथा हिरदै बसावै ॥
६. सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥
७. बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥
८. सूखम महि जानै असथूलु ॥
९. चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥
१०. नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥ ४ ॥

१. 'पंडित' उसको समझो तुम, जो मन में जोज[१] जगाता है।
२. प्यारे रब के नाम का, अपने मन में खोज लगाता है।
३. नाम है रब का अमृत रस, वह नाम का अमृत पीता है।
४. उस पंडित के उपदेशों से, सारा आलम[२] जीता है।
५. वह पंडित जो रब की बातें, मन में खूब बसाता है।
६. वह पंडित फिर दुनिया में, कब जून बदल कर आता है।
७. असल हकीकत देखो पुरानों स्मृतियों और वेदों में।
८. जाहिर[३] के बातन[४] में देखे, हक को पाए भेदों में।
९. चारों वरनों[५] को जो पंडित, एक तरह उपदेश करे।
१०. 'नानक' ऐसे पंडित को, आदेस[६] सदा आदेस करे॥ ४॥

१. रबी जोत। २. दुनिया, संसार। ३. प्रगट। ४. गुप्त। ५. चार वरण-ब्राहमण, खत्री, वैश्य और शूद्र। ६. नमस्कार।

१. बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥

२. चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥

३. जो जो जपै तिस की गति होइ ॥

४. साध संगि पावै जनु कोइ ॥

५. करि किरपा अंतरि उरधारै ॥

६. पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥

७. सरब रोग का अउखदु नामु ॥

८. कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥

९. काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥

१०. नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥ ५ ॥

१. बीज का मंत्र[१] नाम है रब का नाम से सब को ज्ञान मिले।
२. चारों वर्णों में जो चाहे, अपने रब का नाम जपे।
३. जो जो नाम यह जपता है, वह मुक्ति द्वारे आता है।
४. कोई किस्मत वाला ही साधों की संगत पाता है।
५. रब की जिस पर कृपा होगी, मन में नाम बसाएगा।
६. वहिशी[२] मूर्ख, भूत कठोर[३] इन सब को पार लगाएगा।
७. नाम खुदा का है इक दारु[४], रोग करे सब दूर यही।
८. अपने रब के गुण गाना, खुशहाली, लुत्फ[५], सरुर[६] यही।
९. उसका और न रसता कोई, पाए न उस को धर्मों में।
१०. नाम खुदा का मिल जाएगा, 'नानक' हो जब कर्मों में[७]। ५।

१. मूल मन्त्र। २. बेहूदा। ३. सख्त। ४. दवाई। ५. आनन्द। ६. मस्ती। ७. किस्मत में।

१. जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु ॥

२. तिस का नामु सति रामदासु ॥

३. आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥

४. दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥

५. सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥

६. सो दासु दरगह परवानु ॥

७. अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥

८. तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥

९. सगल संगि आतम उदासु ॥

१०. ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥ ६ ॥

१. बसता है रब जिसके मन में, हरदम रब के पास हैं वह।
२. पूछो मुझसे जो उसका, राम का सच्चा दास है वह।
३. देखे रुह जहां[१] की हरसू[२], सब में उसको पाता है।
४. रब के जितने दास हैं, उनका दास वह बन जाता है।
५. हासिल जिसको कुरब[३] खुदा का, समझे हरदम पास है वह।
६. इज्जत हो दरगह में उसकी, राम का प्यारा दास है वह।
७. जग का मालक दास पे अपने, जब रहिमत[४] फरमाएगा[५]।
८. उस को सब कुछ सूझेगा, सब भेद उसका खुल जायेगा।
९. सब में रह कर अपने मन को, सब से दूर हटाता है।
१०. 'नानक' समझो राम का सचा, दास वही कहिलाता है॥ ६॥

---

१. दुनिया। २. हर जगह। ३. नज़दीकता। ४. कृपा। ५. करेगा।

१. प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥

२. जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥

३. तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥

४. सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥

५. तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥

६. तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥

७. तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥

८. तैसा रंकु तैसा राजानु ॥

९. जो वरताए साई जुगति ॥

१०. नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥ ७ ॥

१. प्यारे रब का हुक्म जिसे, सौ जान अपनी से प्यारा है।
२. 'जीवन मुक्ति' वही हैं, उस का जीते जी छुटकारा है।
३. सुख दु:ख को यकसां[1] हैं, जिनहार[2] खुशी का शौक नहीं।
४. रहता है आनन्द हमेशां, उस को रोग बियोग[3] नहीं।
५. यकसां[1] समझ दोनों को, वो सोना हो या माटी हो।
६. अमृत ज़ैसी मीठी शै हो, या जहरीली खटी हो।
७. इज्जत हो या जिल्लत[4] हो, इक जैसा सब को जानेगा।
८. राजा हो कंगाल हो वो, दोनों को यकसां[1] मानेगा।
९. अच्छा ही वोह उस को समझ, जो कुछ रब से आता है।
१०. जीवन-मुक्त वही है 'नानक' साफ रिहाई[5] पाता है। ७॥

---

१. एक जैसा। २. कभी भी। ३. विछोड़ा। ४. बेइज्जती। ५. छुटकारा, मुक्ति।

१. पारब्रहम के सगले ठाउ॥

२. जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ॥

३. आपे करन करावन जोगु॥

४. प्रभ भावै सोई फुनि होगु॥

५. पसरिओं आपि होइ अनत तरंग॥

६. लखे न जाहि पारब्रहम के रंग॥

७. जैसी मति देइ तैसा परगास॥

८. पारब्रहम करता अबिनास॥

९. सदा सदा सदा दइआल॥

१०. सिमरि सिमरि नानक भए निहाल॥ ८॥ ९॥

१. हाजर नाजर पाक खुदा, हर समत[1] मुकाम[2] उसी का है।
२. जिस जिस जा[3] में रखे जिस को वैसा नाम उसी का है।
३. आप ही दे तौफीक[4] अमल[5] की, आप वही सब करता है।
४. जो चाहे सो होता है, जो होता है रब करता है।
५. अपना जलवा फैला कर, बेअंत दिखाई मौज तरंग।
६. खेल न उसके समझे कोई, वाह निराले[7] रब के रंग।
७. जैसी अकल किसी को बख्शी, वैसा मन नूरानी[8] है।
८. पाक खुदा वह खालक सब का, बाकी[9] है, लाफानी है।
९. हरदम हरदम हरदम उसको, रहमत वाला पाओगे।
१०. नाम जपो हक-नाम[11] जपो, फिर 'नानक' अंश मनाओगे।८।९।

---

१. दिशा। २. टिकाना। ३. स्थान। ४. शक्ति। ५. कर्म। ६. नुमायश। ७. अजीब। ८. प्रकाश वाला। ९. सदीवी। १०. अविनाशी। ११. सतिनाम।

सलोकु ॥

१. उसतति करहि अनेक जन
अंत न पारावार ॥
२. नानक रचना प्रभ रची
बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१ ॥

१. हमद[१] करें बेअंत उसी की,
जिसका पार न वार[२] ॥
२. 'नानक' रचना रब रचे,
किया बेअंत शुमार[३] ॥ १ ॥

---

१. उस्तति। २. उरार पार। ३. उसकी कोई गिनती नहीं हो सकती।

असटपदी ॥

१. कई कोटि होए पूजारी ॥
२. कई कोटि आचार बिउहारी ॥
३. कई कोटि भए तीरथ वासी ॥
४. कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥
५. कई कोटि बेद के स्रोते ॥
६. कई कोटि तपीसुर होते ॥
७. कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥
८. कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥
९. कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥
१०. नानक करते का अंतु न पावहि ॥ १ ॥

१. लाखों और करोड़ों हैं, जो रब के खास पुजारी हैं।
२. लाखों और करोड़ों ही, आचारी और बिउहारी हैं।
३. लाखों और करोड़ों हैं, जो तीर्थ में जा रहते हैं।
४. लाखों और करोड़ों तारिक[१], कष्ट बनों में सहते हैं।
५. लाखों और करोड़ों ही, वेदों के सुनने वाले है।
६. लाखों और करोड़ों जाहिद[२], जप तप के मतवाले हैं।
७. लाखों और करोड़ों अपने, मन में ध्यान जमाते हैं।
८. लाखों और करोड़ों शायर[३], शैअरों[४] में गुण गाते हैं।
९. लाखों और करोड़ों उस के, नाम निराले[५] लेते जाएं।
१०. 'नानक' उस खाल[५] मालक का, लेकिन कोई अंत न पाएं। १।

१. त्यागी। २. तपस्या। ३. तवी। ४. कविता में ५. कई प्रकार के।

१. कई कोटि भए अभिमानी ॥

२. कई कोटि अंध अगिआनी ॥

३. कई कोटि किरपन कठोर ॥

४. कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥

५. कई कोटि परदरब कउ हिरहि ॥

६. कई कोटि परदूखना करहि ॥

७. कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥

८. कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥

९. जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥

१०. नानक करते की जानै करता रचना ॥ २ ॥

१. लाखों और करोड़ों बन्दे, सरकश[१] और मगरुर[२] हुए।
२. लाखों और करोड़ों अंधे, इलम से जो बेनूर[३] हुए।
३. लाखों और करोड़ों हैं, जो पत्थर दिल कंजूस भी हैं।
४. लाखों और करोड़ों हैं, जो खुश्क भी हैं, मनहूंस[४] भी हैं।
५. लाखों और करोड़ों हैं, जो गैर की चोरी करते हैं।
६. लाखों और करोड़ों हैं, जा झूठी तोहमत[५] धरते हैं।
७. लाखों और करोड़ों को, धुन[६] दौलत माल कमाने की।
८. लाखों और करोड़ों को धुन, मुल्कों मुल्कों जाने की।
९. जिस जिस जा[७] पर जिसको रखे, 'नानक' उस जा[७] रहना है।
१०. अपनी रचना आप ही जाने, खालक[८] का क्या कहना है। २।

---

१. सिर काटने वाला। २. घमण्डी। ३. ज्योति हीन। ४. बुरे। ५. दोष। ६. लगन। ७. जगह। ८. प्रभु।

१. कई कोटि सिध जती जोगी॥

२. कई कोटि राजे रस भोगी॥

३. कई कोटि पंखी सरप उपाए॥

४. कई कोटि पाथर बिरख निपजाए॥

५. कई कोटि पवन पानी बैसंतर॥

६. कई कोटि देस भू मंडल॥

७. कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र॥

८. कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र॥

९. सगल समग्री अपनै सूत्रि धारै॥

१०. नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै॥ ३॥

१. लाखों और करोड़ों बन्दे, सिद्ध जती और जोगी हैं।
२. लाखों और करोड़ों राजे, अैश के बन्दे भोगी हैं।
३. लाखों और करोड़ों पंछी, लाख करोड़ों नाग[1] बनाए।
४. लाखों और करोड़ों पत्थर, लाख करोड़ों पेड़[2] उगाए।
५. लाखों और करोड़ों किस्में, आग, हवा और पानी की।
६. लाखों और करोड़ों सूबे, खित्ते[3] और इकलीमे[4] भी।
७. लाखों और करोड़ों रोशन, तारे सूरज चन्द्र हैं।
८. लाखों और करोड़ों दानव[5], देव और राजे इंद्र हैं।
९. तार में अपने आप परोई, सब दुनिया की माला है।
१०. नानक चाहे जिस जिस को, वो पार लगाने वाला है॥ ३॥

१. सांप। २. दरख्त। ३. प्रदेश। ४. महाँदीप, लोक। ५. दैत्य।

१. कई कोटि राजस तामस सातक॥
२. कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत॥
३. कई कोटि कीएं रतन समुद॥
४. कई कोटि नाना प्रकार जंत॥
५. कई कोटि कीए चिर जीवे॥
६. कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे॥
७. कई कोटि जख्य किंनर पिसाच॥
८. कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच॥
९. सभ ते नेरै सभहू ते दूरि॥
१०. नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि॥ ४॥

१. लाखों और करोड़ों रज गुण तम गुण सत गुण के इन्सान भी।
२. लाख करोड़ों शास्त्र और स्मृतियां वेद पुराण भी हैं।
३. लाख करोड़ों सागर[१] हैं जो, हीरे मोती वाले हैं।
४. लाख करोड़ों जानवर ऐसे, जिन के रूप निराले हैं।
५. लाख करोड़ों हैं ऐसे, जो लम्बी उमरें पाते हैं।
६. लाख करोड़ों टीले पर्वत, सोने के मिल जाते हैं।
७. लाख करोड़ों यख्श और किनर, लाख पिसाच शरीर भी हैं।
८. लाख करोड़ों भूत प्रेत और शेर भी हैं, खिजोर भी हैं।
९. रब इन सब के पास भी है, और रब इन सब से दूर भी है।
१०. 'नानक' सब से दूर भी है, और जग उस से भरपूर भी है॥ ४॥

---

१. समुद्र। २. सूर।

१. कई कोटि पाताल के वासी ॥
२. कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥
३. कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥
४. कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥
५. कई कोटि बैठत ही खाहि ॥
६. कई कोटि घालाहि थकि पाहि ॥
७. कई कोटि कीए धनवंत ॥
८. कई कोटि माइआ महि चिंत ॥
९. जह जह भाणा तह तह राखे ॥
१०. नानक सभु किछ प्रभ के हाथे ॥ ५ ॥

१. लाखों और करोड़ों हैं, पाताल में जिनकी हस्ती है।
२. लाखों और करोड़ों की जन्नत[1], या दोजख[2] बसती है।
३. लाखों और करोड़ों आकर, जीते हैं मर जाते हैं।
४. लाखों और करोड़ों ही, जूनों के चक्कर खाते हैं।
५. लाखों और करोड़ों हैं, जो घर में बैठे खाते हैं।
६. लाखों और करोड़ों जो, बिपता से रिजक[3] कमाते हैं।
७. लाखों और करोड़ों हैं, जो जोर वाले इन्सान बने।
८. लाखों और करोड़ों को, यह चिंता है धनवान[4] बनें।
९. लाखों को जिस जा[5] चाहे राखे, आप ही कर्त्ता धर्त्ता है।
१०. रब के हाथ है सब कुछ 'नानक' जो चाहें सो करता है।५।

---

१. स्वर्ग। २. नरक। ३. रोजी। ४. धन दौलत। ५. जगह।

१. कई कोटि भए बैरागी ॥

२. राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥

३. कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥

४. आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥

५. कई कोटि दरसन प्रभु पिआस ॥

६. तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥

७. कई कोटि मागहि सतसंगु ॥

८. पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥

९. जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥

१०. नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥ ६ ॥

१. लाखों और करोड़ों तारिक[१] दुनिया से मुंह मोड़ चले।
२. रब के नाम से प्रीत लगाई, उस से रिश्ता जोड़ चले।
३. लाखों और करोड़ों बन्दे, रब की खोज लगाते हैं।
४. अपने ही वोह मन के अन्दर, पाक[२] खुदा को पाते हैं।
५. लाखों और करोड़ों हैं, दीदार[३] की जिन को प्यास रहे।
६. वासिल४ हो लाफानी[५] रब से, रब खुद उनके पास रहे।
७. लाखों और करोड़ों बन्दे, चाहते हैं सतसंग मिले।
८. उलफत[६] पाक खुदा से उनको, प्रेम उन्हें हर रंग मिले।
९. जिनसे आप खुदा हो राजी, रोशन भाग उन्हीं के हैं।
१०. 'नानक' वोह है किस्मत वाले, धन धन भाग उन्हीं के हैं। ६।

१. त्यागी। २. पवित्र। ३. दर्शन। ४. लीन। ५. अविनाशी। ६. प्रेम।

१. कई कोटि खाणी अरु खंड ॥
२. कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥
३. कई कोटि होए अवतार ॥
४. कई जुगति कीनो बिसथार ॥
५. कई बार पसरिओ पासार ॥
६. सदा सदा इकु एकंकार ॥
७. कई कोटि कीने बहु भाति ॥
८. प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥
९. ता का अंतु न जानै कोइ ॥
१०. आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥ ७ ॥

१. लाखों और करोड़ों खिते, सरचश्में जांदारों के।
२. लाखों और करोड़ों हिस्से, आकाशों संसारों के।
३. लाखों और करोड़ों ही, अवतार जहां[१] में आए हैं।
४. लाखों और करोड़ों आलम[१], खालक[२] ने फैलाए हैं।
५. दुनिया सारी सिमटे फैले, रोज उजड़ती बसती है।
६. हस्ती एक ओ ओंकार की है, जो काइम[३] दाइम[४] हस्ती है।
७. लाखों और करोड़ों चीजें, रंगा रंग बनाई हैं।
८. रब ही से सब आई हैं, फिर रब में आन समाई हैं।
९. उस की थाह न पाए कोई, उस का अंतु न जानेंगे।
१०. आप से आप[५] हुआ सो रब है, 'नानक' उसको मानेंगे। ७।

१. दुनिया। २. सिरजनहार। ३. थिर। ४. हमेशा। ५. सैभं, सुतै सिध।

१. कई कोटि पारब्रहम के दास॥

२. तिन होवत आतम परगास॥

३. कई कोटि तत के बेते॥

४. सदा निहारहि एको नेत्रे॥

५. कई कोटि नाम रसु पीवहि॥

६. अमर भए सद सद ही जीवहि॥

७. कई कोटि नाम गुन गावहि॥

८. आतम रसि सुखि सहजि समावहि॥

९. अपुने जन कउ सासि सासि समारे॥

१०. नानक ओइ परमेसुर के पिआरे॥ ९॥ १०॥

१. लाखों और करोड़ों है, जो रब के दास जरुर हुए।
२. रूहे उन की रोशन, दिल उनके पुरनूर[१] हुए।
३. लाखों और करोड़ों बन्दे, असल हकीकत[२] जानें वह।
४. एक खुदा की देखें सब में, एक खुदा को मानें वह।
५. लाखों और करोड़ों हैं, जो नाम का अमृत पीते हैं।
६. लाफानी हो जाते हैं और, दाइम जग में जीते हैं।
७. लाखों और करोड़ों हैं हक नाम[३] के जो गुण गाते हैं।
८. रुहानी-आनंद[४] मनाएं, सहिज सहिज सुख पाते हैं।
९. हरदम अपने बन्दों की, वह आप हिफाज़त करता है।
१०. 'नानक' रब के प्यारे हैं, रब उनसे उलफत[६] करता है। ८।१०।

---

१. प्रकाशमयी। २. पर्म सच। ३. सतिनाम। ४. आत्मिक आनन्द। ५. रखवाली। ६. प्रेम प्यार।

सलोकु ॥

१. करण कारण प्रभु एकु है
दूसर नाही कोइ ॥
२. नानक तिसु बलिहारणै
जलि थलि महीअलि सोइ ॥१ ॥

१. कर्त्ता धर्त्ता[1] आप रब,
और कौन करतार।
२. वह जल थल आकाश[2] में,
'नानक' मैं बलिहार ॥ १ ॥

१. करन करावनहार। २. जल थल आकाश में परिपूर्ण।

असटपदी ॥

१. करन करावन करनै जोगु ॥
२. जो तिसु भावै सोई होगु ॥
३. खिन महि थापि उथापनहारा ॥
४. अंतु नहीं किछु पारावारा ॥
५. हुकमे धारि अधर रहावै ॥
६. हुक्मे उपजै हुकमि समावै ॥
७. हुक्मे ऊच नीच बिउहार ॥
८. हुक्मे अनिक रंग परकार ॥
९. करि करि देखै अपनी वडिआई ॥
१०. नानक सभ महि रहिआ समाई ॥ १ ॥

१. हर कारज का कारण रब है उस की कुदरत सारी है।
२. जो कुछ चाहे सो कुछ होगा, हुक्म उसी का जारी है।
३. पल में जोड़े, पल में तोड़े, लगती उसको बार[१] नहीं।
४. कुदरत का कुछ अंत नहीं, कुछ पार नहीं कुछ बार नहीं।
५. उसका हुक्म सहारा सब का, खुद ना सहारा पाता है।
६. हुक्म से आलम[२] पैदा होकर, फिर उस में खो[३] जाता है।
७. हुक्म से ऊच और नीच सभी है, हुक्म से सब बिउपार चले।
८. हुक्म से रंगा रंग नजारे, हुक्म से सब संसार चले।
९. आप बनाए आप ही देखे, कितनी शान बढ़ाई है।
१०. 'नानक' सब में आप समाए, क्या भरपूर खुदाई है॥ १॥

---

१. देर। २. संसार। ३. अंत में उसी में लीन हो जाता है।

१. प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥

२. प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥

३. प्रभ भावै बिनु सास त राखै ॥

४. प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥

५. प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥

६. आपि करै आपन बीचारै ॥

७. दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥

८. खेलै बिगसै अंतरजामी ॥

९. जो भावै सो कार करावै ॥

१०. नानक द्रिसटी अवरु न आवै ॥ २ ॥

१. जब मनजूर खुदा को हो, तब बन्दे मुक्ति पाते हैं।
२. जब मनजूर खुदा को हो, तब पत्थर तैरे जाते हैं।
३. जब मनजूर खुदा को हो, तब मुर्दे जीवन पाते हैं।
४. जब मनजूर खुदा को हो, तब दाता के गुण गाते हैं।
५. जब मनजूर खुदा को हो, तब पापी को भी पार करें।
६. जग की आप बनाए वह, और खुद ही सोच विचार करें।
७. दोनों आलम[1] हाथ में उसके, वह दोनों का स्वामी[2] है।
८. आप ही खेले आप ही खुश हो, आप ही अतंर्यामी[3] से।
९. 'नानक' जो कुछ उसकी मर्जी, बन्दा वह कुछ कार करे।
१०. और नजर कौन आता हैं, सब कार वही करतार करे।

---

१. लोक परलोक। २. मालक। ३. हर एक की खबर रखने वाला।

१. कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥

२. जो तिसु भावै सोई करावै ॥

३. इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥

४. जो तिसु भावै सोई करेइ ॥

५. अनजानत बिखिआ महि रचै ॥

६. जे जानत आपन आप बचै ॥

७. भरमे भूला दह दिसि धावै ॥

८. निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥

९. करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥

१०. नानक ते जन नामि मिलेइ ॥ ३ ॥

१. बोलो, क्या बंदे के बस में, बंदे से क्या होता है।
२. जैसा हो मनज़ूर खुदा को, वैसा वैसा होता है।
३. बस में अगर इन्सान के हो, इक पल में सब कुछ पाए वह।
४. जो कुछ हो मनज़ूर खुदा को, बात अमल में आए वह।
५. जो रब से अनजान रहे, बदीओं[1] में रचता जायेगा।
६. जिस ने रब को जान लिया, पापों से बचता जायेगा।
७.मोह भ्रम में फंसता है, दुविधा में चक्कर खाता है।
८. मन उस का चौगिरद[2] भटक कर, पल में वापस आता है।
९. जिस पर रब की कृपा है, वह भक्ति ही के काम करे।
१०. 'नानक' ऐसा भगत खुदा का, महक[3] खुदा के नाम में हो।

१. बुराईयां। २. चारों ओर। ३. मस्त, लीन।

१. खिन महि नीच कीट कउ राज॥

२. पारब्रहम गरीब निवाज॥

३. जाका द्रिसटी कछू न आवै॥

४. तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै॥

५. जा कउ अपुनी करै बखसीस॥

६. ता का लेखा न गनै जगदीस॥

७. जीउ पिंडु सभ तिस की रासि॥

८. घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास॥

९. अपनी बणत आपि बनाई॥

१०. नानक जीवै देखि बडाई॥ ४ ॥

१.पल में आजिज[1] कीड़े को, वह राज जहां का देता है।
२. आप गरीब निवाज[2] खुदा, बंदों की सुध बुध लेता है।
३. डुबा हो गुमनामी[3] में संसार ना जिस को जाने भी।
४. पल में उसका नाम हो रोशन, सब जग उसको माने भी।
५. जिस पर उसकी बखशिश होगी, जिस पर उसकी रहिमत हो।
६. लेखा उस से कोई न पूछे, कोई न उसको जहिमत[4] हो।
७. तन मन दौलत उस की है, सब शान जहूर[5] उसी का है।
८. हर इक दिल में, हर इक मन में रोशन नूर उसी का है।
९. अपनी सनअत[6] आप बनाए, कर दे खलक खुदाई को।
१०. जीता हूं मैं देख के 'नानक', उस की शान बढ़ाई को। ४।

१. निमाणा। २. दीन रक्षक, दीन दयाल। ३. अप्रसिद्धता। ४. दुःख, कलेष। ५. उत्पति। ६. कारीगरी।

१. इस का बलु नाही इसु हाथ ॥

२. करन करावन सरब को नाथ ॥

३. अगिआकारी बपुरा जीउ ॥

४. जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥

५. कबहू ऊच नीच महि बसै ॥

६. कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥

७. कबहू निंद चिंद बिउहार ॥

८. कबहू ऊभ अकास पइआल ॥

९. कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥

१०. नानक आपि मिलावनहार ॥ ५ ॥

१. बन्दे का मकदूर[१] नहीं, क्या ताकत उस के हाथ में है।
२. मालक सब कुछ करता है, बल जोर सभी उस नाथ में है।
३. ताकत उस के पास कहां, मखलूक[२] बहुत बेचारी है।
४. जो कुछ हो मनज़ूर खुदा को, करती दुनिया सारी है।
५. बन्दा ऊंचा चढ़ता है, या फिर पसती[३] में धंसता है।
६. गाहे४ सोग मनाता है वह, गाहे[४] खुशी से हंसता है।
७. गाहे४ निंदा करता है, और देता है शाबाश कभी।
८. आता है पाताल कभी, और जाता है आकाश कभी।
९. गाह वह सोचे रब की बातें, इलम खुदाई[५] पाता है।
१०. दाता जिस को चाहे 'नानक' अपने साथ मिलाता है॥ ५॥

---

१. कदर, ताकत। २. खलकत। ३. निवान, पतन। ४. कभी। ५. ब्रह्मज्ञान।

१. कबहु निरति करै बहु भाति॥
२. कबहू सोइ रहै दिनु राति॥
३. कबहू महा क्रोध बिकराल॥
४. कबहू सरब की होत रवाल॥
५. कबहू होइ बहै बड राजा॥
६. कबहु भेखारी नीच का साजा॥
७. कबहू अपकीरति महि आवै॥
८. कबहू भला भला कहावै॥
९. जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै॥
१०. गुरु प्रसादि नानक सचु कहै॥ ६॥

१. रंगा रंगी नाच वह नाचे, खुद दिखाए गात कभी।
२. गाफल होकर नींद का माता, सोता है दिन रात कभी।
३. गुस्से में और तैश में आकर, गाहे[1] जोश दिखाता है।
४. गाहे सब के कदमों की, अपने को खाक[2] बनाता है।
५. गाहे वह राजों का राजा, दुनिया में हो जाता है।
६. गाहे बदल कर भद गदा[3] का, चिथड़ों[4] लिपटा आता है।
७. गाहे मिले बदनामी उस को, नजरों से गिर जाए वह।
८. गाहे हो उसकी नेकी रोशन, नेक बड़ा कहलाए वह।
९. जैसा मालक राखे उसको, वैसा ही वह रहता है।
१०. गुर की कृपा ही से 'नानक', सच्ची बातें कहता है। ६।

१. कभी। २. चरण धूल। ३. भिखारी, मंगता। ४. लीरों नाल।

१. कबहू होइ पंडित करे बख्यानु ॥
२. कबहू मोनि धारी लावै धिआनु ॥
३. कबहू तट तीरथ इसनान ॥
४. कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥
५. कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥
६. अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥
७. नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥
८. जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥
९. जो तिसु भावै सोई होइ ॥
१०. नानक दूजा अवरू न कोइ ॥७ ॥

१. गाहे[1] पंडित बन बन कर, उपदेश कथाएं कहता है।
२. गाहे रख कर मौन-बरत[2], वह ध्यान में चुपचाप रहता है।
३. गाहे तीर्थ जा जा कर, तन पाक[3] करे इशनान करे।
४. गाहे सिध और साधू बन कर, जाहिर सब पर ज्ञान करे।
५. गाहे हाथी, गाहे कीड़ा, गाहे पतंगा बनता है।
६. जून अनेक बदल कर देखों, बंदा क्या क्या बनता है।
७. करता है वह रूप नए, बहुरुपी स्वाँग दिखाता है।
८. जैसे उसकी मर्जी हो, रब वैसे नाच नचाता है।
९. जो कुछ हो मनजूर खुदा को, वह कुछ होकर रहता है।
१०. उस बिन और नहीं है कोई, बात यह 'नानक' कहता है। ७।

१. कभी। २. चुप, बरत। ३. पवित्र।

१. कबहू साधसंगति इहु पावै॥

२. उसु असथान ते बहुरि न आवै॥

३. अंतरि होइ गिआन परगासु॥

४. उसु असथान का नही बिनासु॥

५. मन तन नामि रते इक रंगि॥

६. सदा बसहि पारब्रहम कै संगि॥

७. जिउ जल महि जलु आइ खटाना॥

८. तिउ जोती संगि जोति समाना॥

९. मिटि गए गवन पाए बिस्राम॥

१०. नानक प्रभ कै सद कुरबान॥ ८॥ ११॥

१. गाहे साधु की संगत में, वह ऐसा लुत्फ[१] उठाता है।
२. जिस असथान में जा बैठे, कब लौट कर[२] उस से आता है।
३. ज्ञान का मन में नूर वह पाए, ज्ञानी हो नूरानी हो।
४. जिस असथान पे जा बैठे, असथान भी वह लाफानी[३] हो।
५. उस के तन मन रंगे जाएं, नाम का अैसा रंग मिले।
६. जात से रब की वासिल[४] हो कर, रब का उस को संग मिले।
७. दूई[५] कहां फिर रहती है, जब पानी आए पानी में।
८. दूई कहां फिर रहती है, जब नूर[६] मिले नूरानी[७] में।
९. जून-जनम[८] के चकर टूटें, मिल जाए आराम सकूं[९]।
१०. 'नानक' अपने पाक खुदा पर, मैं हरदम कुरबान रहूं। ८। ११।

---

१. अनंद, सुआद। २. मुड़ के। ३. अविनाशी। ४. लीन। ५. दुजैगी। ६. जोती (जीव)। ७. महां जोती (ब्रह्म)। ८. आवागमन। ९. सुख-शांति।

सलोकु ॥

१. सुखी बसै मसकीनीआ
आपु निवरि तले ॥
२. बड़े बडे अहकारीआ
नानक गरबि गले ॥१ ॥

१. सुख में वह मसकीन[१] है,
जो आजिज कहिलाऐं।
२. 'नानक' जो मगरुर[२] हैं,
मान में वह गल जाऐं। १।

१. नमृता वाला। २. घमण्डी।

असटपदी ॥

१. जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥
२. सो नरक पाती होवत सुआनु ॥
३. जो जानै मै जोबनवंतु ॥
४. सो होवत बिसटा का जंतु ॥
५. आपस कउ करमवंतु कहावै ॥
६. जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥
७. धन भूमि का जो करै गुमानु ॥
८. सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥
९. करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥
१०. नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥ १ ॥

१. जिसको नाज[१] हकूमत पर, जो दौलत पर मगरूर[२] रहे।
२. दोजख में गिर जाएगा, वह कुत्ते की सी मौत मरे।
३. जिसको नाज जवानी पर है, जोबन की खुदबीना[३] है।
४. बंदा उसको गन्दा समझो, वह नापाक[४] यकीनी[५] है।
५. जिसको नाज अमल[६] पर है, वह करमी खुद को कहता है।
६. मरता है फिर जीता है, वह जून बदलता रहता है।
७. जिसको नाज जमीनों पर है, दौलत पर मगरूर है वह।
८. मूर्ख है वह अन्धा है इरफान[७] से बिल्कुल दूर है वह।
९. जिस के मन में मसकीनी[८], रहिमत से आप बसाता है।
१०. 'नानक' मुक्ति पाए यहां भी, आगे भी सुख पाता है। १ ।

---

१. अहंकार। २. घमण्ड। ३. अरंकार। ४. अपवित्र। ५. निश्चय। ६. करम। ७. ज्ञान, आत्म ज्ञान। ८. गरीबी, दीनता।

१. धनवंता होइ करि गरबावै ॥
२. त्रिण समानि कछु संगि न जावै ॥
३. बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥
४. पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥
५. सभ ते आप जानै बलवंतु ॥
६. खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥
७. किसै न बदै आपि अहंकारी ॥
८. धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥
९. गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥
१०. सो जनु नानक दरगाह परवानु ॥ २ ॥

१. धन वाला इन्सान जो, अपनी दौलत पर इतराएगा[१]।
२. इस दुनिया से तिनका सा भी, उस के साथ न जाएगा।
३. जो फौजों और लशकर की, बहुतात पे हरदम आस करे।
४. उस के सर पर मौत जब आए, पल में उसका नास करे।
५. जो खुद को बलवान समझ कर, सब को जोर दिखाता है।
६. उस पर मौत जब आए पल में, वह मिट्टी हो जाता है।
७. औरों को जो हेच[२] समझ ले, वह बंदा पंदारी[३] है।
८. धर्मी राजा आएगा तो, उस के हिस्से ख्वारी[४] है।
९. अपने गुर की रहिमत से, जो मान गरूर मिटाता है।
१०. वह दरगाह में रब की जा कर, 'नानक' इज्जत पाता है। २।

१. अकड़ेगा, अहंकार करेगा। २. तुच्छ। ३. घमंडी। ४. अपमान, जिल्लत।

१. कोटि करम करै हउ धारे॥
२. स्रमु पावै सगले बिरथारे॥
३. अनिक तपसिआ करे अहंकार॥
४. नरक सुरग फिरि फिरि अवतार॥
५. अनिक जतन करि आतम नही द्रवै॥
६. हरि दरगाह कहु कैसे गवै॥
७. आपस कउ जो भला कहावै॥
८. तिसहि भलाई निकटि न आवै॥
९. सरब की रेन जा का मनु होइ॥
१०. कहु नानक ता की निरमल सोइ॥ ३॥

१. जो खुदबीनी[१] करता है, गो लाखों करम कमाता है।
२. वह जोखों[२] पड़ता है, सब काम अकारथ[३] जाता है।
३. जो करता है लाख तपस्या, साथ मगर इतराता[४] है।
४. जनत और दौजख में घूमे, जून बदलता जाता है।
५. लाख यत्न भी करता हो, वह दिल न अगर नरमाएगा।
६. बोलो फिर दरगाह में रब की, क्यों कर इज्जत पाएगा।
७. जो नेकी पर नाज करे, गो नेक बड़ा कहिलाता है।
८. नेकी उस के पास न आए, जैसा हो रह जाता है।
९. खुद को सब के कदमों की, जो खाक[५] समझता रहता है।
१०. असल बड़ाई[६] उस की है, यह 'नानक' सब से कहता है। ३।

१. अहकार। २. खतरा। ३. व्यर्थ। ४. अहकार करता है। ५. धूल। ६. वडिआई।

१. जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥

२. तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥

३. जब इह जानै मै किछु करता ॥

४. तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥

५. जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥

६. तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥

७. जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥

८. तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥

९. प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥

१०. गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥ ४ ॥

१. जब तक बंदा समझे मन में, आप वह सब कुछ करता है।
२. जब तक बंदा समझे मन में, काम मुझी से चलता है।
३. जब तक बंदा समझे मन में, काम मुझी से चलता है।
४. फेर के जीने मरने के वह, जूनें रोज बदलता है।
५. जब तक बंदा समझे मन में, बैरी है ये बीर है वह।
६. उसके मन में चैन न आए, चंचल है दिलगीर है वह।
७. जब तक बन्दा धन दौलत की, मस्ती में गरकाब[३] रहे।
८. उस पर धर्मी राजा[४] का, फिर गुस्सा कहिर[५] अजाब[६] रहे।
९. रब की रहिमत जब भी होगी, सारे बन्धन टूटेंगे।
१०. 'नानक' गुर की कृपा हो तो, मान[७] तकबर[८] छूटेंगे॥ ४॥

---

१. जूनां। २. दुखी। ३. डूबा रहता है। ४. धर्मराज। ५. देवी कोप। ६. प्रकोप। ७. अभिमान। ८. घमण्ड।

१. सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥

२. त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥

३. अनिक भोग बिखिआ के करै ॥

४. नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥

५. बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥

६. सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥

७. नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥

८. बडभागी किसै परापति होइ ॥

९. करन करावन आपे आपि ॥

१०. सदा सदा नानक हरि जापि ॥ ५ ॥

१. जब इन्सान हजार कमाए, लाख के पीछे जायेगा।
२. जितनी माया पाएगा, जी और उसका ललचायेगा।
३. गो शहिवानी-लजत[१] के, वह भोग हजारों करता है।
४. इत्मीनान[२] न हासल हो, वह खपते खपते मरता है।
५. सबर-करार[३] न आए जब तक, राहत[४] कैसे पाएगा।
६. काम हो उसके सुपने जैसे, ख्वाब[५] में मन परचायेगा।
७. नाम खुदा का लेने से, सुख चैन मिले, आराम मिले।
८. धन धन भाग उसी के हैं, यह प्यारा जिस को नाम मिले।
९. हर कारज का करने वाला, सब का है करतार वही।
१०. 'नानक' रब का नाम जपे जा, आली[६] है सरकार वही॥ ५॥

१. भोग विलास का आनन्द। २. तसल्ली। ३. धीरज, संतोख। ४. चैन, शांति। ५. सपना। ६. ऊंचा।

१. करन करावन करनैहारु॥

२. इस कै हाथि कहा बीचारु॥

३. जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ॥

४. आपे आपि आपि प्रभु सोइ॥

५. जो किछु कीनों सु अपनै रंगि॥

६. सभ ते दूरि सभहू कै संगि॥

७. बूझै देखै करै बिबेक॥

८. आपहि ऐक आपहि अनेक॥

९. मरै न बिनसै आवै न जाइ॥

१०. नानक सदा ही रहिआ समाइ॥ ६ ॥

१. हर कारज का कारन है, करतार है वह करतार है वह।
२. बस में किआ है बंदे के नाचार[१] है वह नाचार है वह।
३. जिस पर बखशिश जितनी कर दे, वैसा वह हो जाता है।
४. आप हीं अपने आप है वह, खुद आप खुदा कहिलाता है।
५. जो कुछ नूर[२] जहूर[३] हुआ, वह खालिक को मनजूर हुआ।
६. सब से वह नज़दीक हुआ, और सब से ही वह दूर हुआ।
७. देखे बूझे दुनिया को, वह धिआन लगाए लखकत में।
८. जात उसी की वहिदत में है, शान उसी की कसरत[५] में।
९. पाक जन्म से, पाक मरन से, आए और न जाए वह।
१०. 'नानक' उस की जात है यकमा[६], सब में आप समाए वह।६।

१. लाचार, बेबस। २. प्रकाश। ३. प्रगट। ४. एकता। ५. अनेकता। ६. एक जैसी, इक रस।

१. आपि उपदेसै समझै आपि॥

२. आपे रचिआ सभ कै साथि॥

३. आपि कीनो आपन बिसथारु॥

४. सभु कछु उस का ओहु करनैहारु॥

५. उस ते भिंन कहहु किछु होइ॥

६. थान थनंतरि एकै सोइ॥

७. अपुने चलित आपि करणैहारु॥

८. कउतक करै रंग आपार॥

९. मन महि आपि मन अपुने माहि॥

१०. नानक कीमति कहनु न जाइ॥ ७॥

१. आप ही उस ने समझा है, और आप उस ने समझाइआ है।
२. सब के अंदरि आप रचा है, सब में आप समाइआ है।
३. आप से आप बना कर उस ने, सारा जग फैलाइआ है।
४. हर शै[1] का करतार है वह, संसार उसी की माया है।
५. बोलो आखिर बे[2] उस के भी, कोई किसी से बात हुई।
६. जिस जिस जा[3] पर हम ने देखा, एक उसी की जात हुई।
७. करने वाला आप वही है, काम उसी के सारे हैं।
८. रंग सब उस के प्यारे हैं, और खेल सब उस के न्यारे[4] है।
९. आप समाए मन के अन्दर, मन भी उस में आप समाए।
१०. 'नानक' खुद अनमोल[5] है वह, फिर कीमत उसकी कौन बतलाए।७।

---

१. वस्तु, चीज। २. दूसरा। ३. थां। ४. आश्चर्य। ५. बे-कीमत।

१. सति सति सति प्रभु सुआमी ॥
२. गुर प्रसादि किनै वखिआनी ॥
३. सचु सचु सचु सभु कीना ॥
४. कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥
५. भला भला भला तेरा रुप ॥
६. अति सुंदर अपार अनूप ॥
७. निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥
८. घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥
९. पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥
१०. नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥ ८ ॥ १२ ॥

१. सच्चा सच्चा सच्चा मालक, हरदम उसका ध्यान करे।
२. गुर की कृपा जिन पर होगी, उसकी शान बयान करें।
३. सच्चा सच्चा सच्चा है वह, सब उस का ताना बाना है।
४. लाखों में इक निकलेगा, वह जिसने उसको जाना है।
५. प्यारा प्यारा प्यारा प्यारा, रूप तेरा नूरानी[1] है।
६. सुन्दर है, बे पाइआ है, लासानी[2] है लासानी है।
७. पाक है बानी, पाक है बानी, पाक यह तेरी बानी है।
८. हर-हर दिल में सुन सुन कर, जो कानों कान सुनानी है।
९. पाक पवित्र, पाक पवित्र, पाक वही हो जाता है।
१०. नाम जपे जो मन में 'नानक' रब से प्रीत लगाता है। ८। १२।

---

१. प्रकाशमयी। २. अपार, बेहद, असीम।

सलोकु॥

१. संत सरनि जो जनु परै
सो जनु उधरनहार॥
२. संत की निंदा नानका
बहुरि बहुरि अवतार॥ १ ॥

१. साए[1] में आकर संत के,
सो जन मुक्ति पाए।
२. संत का निंदक 'नानका',
फिर जूनों[2] में जाए॥ १॥

---

१. शरण। २. योनियां

असटपदी।

१. संत कै दूखनि आरजा घटै॥
२. संत कै दूखनि जम ते नही छूटै॥
३. संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ॥
४. संत कै दूखनि नरक महि पाइ॥
५. संत कै दूखनि मति होइ मलीन॥
६. संत कै दूखनि सोभा ते हीन॥
७. संत के हते कउ रखै न कोइ॥
८. संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ॥
९. संत क्रिपाल क्रिपा जे करै॥
१०. नानक संत संगि निंदकु भी तरै॥ १॥

१. संत की निंदा करने से, घट जाए उम्र खसारा[1] हो।
२. संत की निंदा करने से, कब मरने से छुटकारा हो।
३. संत की निंदा करने से, सुख मन का जाता रहता है।
४. संत की निंदा करने से, दोजख[2] की बिपता सहता है।
५. संत की निंदा करने से, खुद अकल पे परदा पड़ता जाए।
६. संत की निंदा करने से, सब इज्जत भागे, जिलत[3] आए।
७. संत की जिस पर लाहनत[4] होगी, उस को कौन बचाएगा।
८. संत की निंदा करने से, घर बार नजिस[5] हो जाएगा।
९.संत हैं रहिमत वाले 'नानक' रहिम वह जब फरमाऐंगे।
१०. निंदा करने वाले भी फिर साथ उस के बच जाऐंगे॥ १॥

---

१. घाटा। २. नरक। ३. बेइजती। ४. फिटकार। ५. अपवित्र।

१. संत कै दूखनि ते मुखु भवै ॥

२. संत कै दूखनि काग जिउ लवै ॥

३. संत कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥

४. संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥

५. संतम कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥

६. संत कै दूखनि सभु को छलै ॥

७. संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥

८. संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥

९. संत दोखी का थाउ को नाहि ॥

१०. नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥ २ ॥

१. संत की निंदा करने से, मुंह टेडा मेडा होता है।
२. करता है जो संत की निंदा, काओं काओं रोता है।
३. करता है जो संत की निंदा, सांप की योनि पाएगा।
४. करता है जो संत की निंदा, कीड़ा सा बन जाएगा।
५. करता है जो संत की निंदा, प्यास के दुःख से जलता है।
६. करता है जो संत की निंदा, सब लोगों को छलता[१] है।
७. करता है जो संत की निंदा, शान गंवा कर रहवा[२] हो।
८. करता है जो संत की निंदा, नीचों से भी नीचा हो।
९. करता है जो संत की निंदा, किउंकर ठौर-ठिकाना[३] पाए।
१०. संत अगर चाहें तो 'नानक', वह भी मुक्ति दुआरे आए। २।

१. ठगता है। २. बदनाम। ३. ठीक थां, टिकाणा।

१. संत का निंदकु महा अतताई॥
२. संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई॥
३. संत का निंदकु महा हतिआरा॥
४. संत का निंदकु परमेसुरि मारा॥
५. संत का निंदकु राज ते हीनु॥
६. संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु॥
७. संत के निंदक कउ सरब रोग॥
८. संत के निंदक कउ सदा बिजोग॥
९. संत के निंदा दोख महि दोखु॥
१०. नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु॥ ३॥

१. करता है जो संत की निंदा, वह पापी हो जाता है।
२. करता है जो संत की निंदा, चैन न पल भर पाता है।
३. करता है जो संत की निंदा, खूनी और खूंखार समझ।
४. करता है जो संत की निंदा, उस पर रब की मार समझ।
५. करता है जो संत की निंदा, अपना राज गंवाएगा।
६. करता है जो संत की निंदा, दुःख और तंगी पाएगा।
७. करता है जो संत की निंदा, रोगी है, रंजूर[1] है वह।
८. करता है जो संत की निंदा, दाइम[2] रब से दूर है वह।
९. करता है जो संत की निंदा, पाप ही पाप कमाते हैं।
१०. 'नानक' चाहे संत अगर तो, पापी मुक्ति पाते हैं। ३।

१. दुखी। २. हमेशा, सदा।

१. संत का दोखी सदा अपवितु ॥

२. संत का दोखी किसै का नही मितु ॥

३. संत के दोखी कउ डानु लागै ॥

४. संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥

५. संत का दोखी महा अहंकारी ॥

६. संत का दोखी सदा बिकारी ॥

७. संत का दोखी जनमै मरै ॥

८. संत की दूखना सुख ते टरै ॥

९. संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥

१०. नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥ ४ ॥

१. करता है जो संत की निंदा, नेक नहीं बदकार[1] है वह।
२. करता है जो संत की निंदा, बोलो किसका यार है वह।
३. करता है जो संत की निंदा, उस पर डंड लगायेंगे।
४. करता है जो संत की निंदा, छोड़ सब उसको जायेंगे।
५. करता है जो संत की निंदा, उस में है पिनदार[2] सदा।
६. करता है जो संत की निंदा, रहता है बदकार[1] सदा।
७. करता है जो संत की निंदा, वह जी जी कर मरता है।
८. करता है जो संत की निंदा, कब सुख हासिल करता है।
९. करता है जो संत की निंदा, कब वह ठौर-ठिकाना[3] पाए।
१०. संत जे चाहे 'नानक' उस को, फिर भी अपने साथ मिलाए।४।

---

१. बुरा। २. अहंकार। ३. असल टिकाना।

१. संत का दोखी अधबीच ते टूटै॥

२. संत का दोखी कितै काजि न पहूचै॥

३. संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ॥

४. संत का दोखी उझड़ि पाईऐ॥

५. संत का दोखी अंतर ते थोथा॥

६. जिउ सास बिना मिरतक की लोथा॥

७. संत के दोखी की जड़ किछु नाहि॥

८. आपन बीजि आपे ही खाहि॥

९. संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु॥

१०. नानक संत भावै त लए उबारि॥ ५॥

१. करता है जो संत की निंदा, बीच अधर[१] में टूटेगा।
२. करता है जो संत की निंदा, हर मकसद[२] में छूटेगा।
३. करता है जो संत की निंदा, उजड़े बन में फिरता है।
४. करता है जो संत की निंदा, वीरानी[३] में घिरता है।
५. करता है जो संत की निंदा, वह अंदर से खाली है।
६. लाश हो जैसे मुरदे की, जो सास न लेने वाली है।
७. उसकी जढ़ कब लगती है, जो संत की निंदा करता है।
८. बोता[४] है, सो खाता है, जो करता है सो भरता है।
९. करते हैं जो संत की निंदा, उन को कौन बचाऐंगे।
१०. संत ही गर[५] चाहे तो 'नानक' बेड़ा पार लगाऐंगे। ५।

---

१. अधविचाले। २. प्रयोजन, इच्छा, मतलब। ३. उजाड़। ४. बीजता है।
५. यदि।

१. संत का दोखी इउ बिललाइ ॥

२. जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥

३. संत का दोखी भूखा नही राजै ॥

४. जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥

५. संत का दोखी छुटै इकेला ॥

६. जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥

७. संत का दोखी धरम ते रहत ॥

८. संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥

९. किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥

१०. नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥ ६ ॥

१. करता है जो संत की निंदा, चीखेगा, चिलाएगा।
२. बेपानी[१] की मछली बन कर, तड़पेगा बल खाएगा।
३. करता है जो संत की निंदा, संगी और न चेला हो।
४. जैसे जलती आग को काफी, कुछ इन्धन[३] का ढेर न हो।
५. करता है जो संत की निंदा, संगी और न चेला हो।
६. तिन का डंफल खेत में खाली, जैसे एक अकेला हो।
७. करता है जो संत की निंदा, धर्म से खाली रहता है।
८. करता है जो संत की निंदा, झूठ हमेशां कहता है।
९. करता है जो संत की निंदा, वह बदकिस्मत रोज अजल[४] का है।
१०. जो चाहे हो जाए 'नानक', रब का हुक्म न टलता है। ६।

---

१. बिना पानी। २. तृप्त। ३. बालन। ४. वह शुरु से ही बदकिस्मत है।

१. संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥
२. संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥
३. संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥
४. संतका दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥
५. संत के दोखी की पूजै न आसा ॥
६. संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥
७. संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥
८. जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥
९. पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥
१०. नानक जानै सचा सोइ ॥ ७ ॥

१. करता है जो संत की निंदा, बिगड़े उसका रूप सदा।
२. करता है जो संत की निंदा, रब के द्वारे पाए सजा।
३. करता है जो संत की निंदा, ऊपर के दम भरता है।
४. करता है जो संत की निंदा, जीता और न मरता है।
५. करता है जो संत की निंदा, आस मुराद न पाएगा।
६. करता है जो संत की निंदा, मायूसी[१] में जाएगा।
७. करता है जो संत की निंदा, छुटकारा कब पाता है।
८. जैसा रब के मन को भाए[२], वैसा ही हो जाता है।
९. कर्मों का जो लिखा है, फिर उसको कौन मिटाएगा।
१०. 'नानक' वह रब सच्चा जाने, भेद न कोई पाएगा। ७।

---

१. ना उमीदी। २. जैसे प्रभु को अच्छा लगता है।

१. सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥
२. सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥
३. प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥
४. तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥
५. सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥
६. जैसा करे तैसा को थीआ ॥
७. अपना खेलु आपि करनैहारु ॥
८. दूसर कउनु कहै बीचारु ॥
९. जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥
१०. बडभागी नानक जन सेइ ॥ ८ ॥ १३ ॥

१. सब के दिल का मालक है, करतार है वह, करतार है वह।
२. उस को प्रणाम[१] हमेशां, किआ आली सरकार है वह।
३. हमद[२] करो दिन रात उसी की, महिमां गाओ आठ पहिर।
४. याद करो हर सांस में उस को, नाम भी लो हर लुकमे[३] पर।
५. दुनिया में जो होता है सब काम उसी का होता है।
६. जैसा जिस को करता है, वह वैसा वैसा होता है।
७. खुद ही खेले खेल वह अपना, खेल भी उस का निआरा[४] है।
८. अैब निकाले काम में उस के, बंदा कौन विचारा है।
९. जिस पर उस की रहिमत हो, वह नाम की निआमत[५] पाएगा।
१०. 'नानक' उस के भाग बड़े हैं, जिसको वह मिल जाएगा।८।१३।

१. नमस्कार।२. स्तुति।३. गराही, बुरकी।४. आश्चर्य।५. उतम वस्तु।

सलोकु ॥

१. तजहु सिआनप सुरिजनहु
   सिमरहु हरि हरि राइ ॥
२. एक आस हरि मनि रखहु
   नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१ ॥

१. छोड़ के सब चतुराईयां,
२. रब की याद मनाऐं।
३. नानक रब की आस रख,
४. डर, शक दुःख मिट जाऐं ॥ १ ॥

असटपदी ॥

१. मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥
२. देवन कउ एकै भगवानु ॥
३. जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥
४. बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥
५. मारै राखै एको आपि ॥
६. मानुख कै किछु नाही हाथि ॥
७. तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥
८. तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥
९. सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥
१०. नानक बिघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥

१. झूठ है तकीआ[1] बंदों पर, कब देता है इन्सान तुझे।
२. देता है भगवान तुझे, बस देता है भगवान तुझे।
३.देन उसी की देन है, जिस से पूरी सारी आस रहे।
४. देन उसी की देन है, जिस से कोई न बाकी प्यास रहे।
५. रखे तो वह आप ही रखे, मारे तो वह मारे आप।
६. बन्दे के कुछ हाथ नहीं, वह काम करे खुद सारे आप।
७. उस का हुक्म समझ लेने से, दुनिया में सुख होता है।
८. क्यों नहीं फिर शाह-रग[2] में अपनी, उस का नाम परोता है।
९. याद कर उसकी, याद कर उसकी याद जब उसकी आएगी।
१०. 'नानक' फिर कब राह में तुझ को कोई रोक सताएगी॥ १॥

---

१. आसरा, सहारा, टेक। २. गले में।

१. उसतति मन महि करि निरंकार ॥

२. करि मन मेरे सति बिउहार ॥

३. निरमल रसना अंम्रितु पीउ ॥

४. सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥

५. नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥

६. साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥

७. चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥

८. मिटाहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥

९. कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥

१०. हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥ २ ॥

१. मन मेरे कर हमद[1] खुदा की, निर-अकार समझ।
२. मन मेरे कर याद उसी की, जो सच्चा व्यापार समझ।
३. कर ले पाक जब अपनी को, नाम का अमृत पीता जा।
४. जी में राहत[2] पाता जा, सुख चैन से हरदम जीता जा।
५. मालक के नैरग[3] हैं सारे, जग की रंगत देख जरा।
६. भूलेगी हर संगत तुझ को, साधू की संगत देख जरा।
७. चलता जा तू राह में हक को, हरदम पाउं बड़ाता जा।
८. नाम खुदा का लेता जा, और सारे पाप मिटाता जा।
९. कान कर उस का बात सुन उस की, मन तेरा मसरुर[4] रहे।
१०. नानक फिर दरगाह में रब की, तेरा रुप[5] पुरनूर[6] रहे। २।

१. स्तुति। २. आराम। ३. माया, तलिस्म। ४. प्रसन्न। ५. चेहरा, मुंह।
६. प्रकाशमान, उजला।

१. बडभागी ते जन जग माहि ॥

२. सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥

३. राम नाम जो करहि बीचार ॥

४. से धनवंत गनी संसार ॥

५. मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥

६. सदा सदा जानहु ते सुखी ॥

७. एको एकु एकु पछानै ॥

८. इत उत की ओहु सोझी जानै ॥

९. नाम संगि जिसका मनु मानिआ ॥

१०. नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥ ३ ॥

१. दुनिया में खुशकिस्मत[१] हैं और अच्छे भाग उनी के हैं।
२. रब के जो गुन गाऐं हरदम, मीठे राग उनीं के हैं।
३. याद करे जो नाम खुदा का, मन में रखे ध्यान वही।
४. दुनिया में धनवान वही है, दुनिया में धनवान वही।
५. तन मन से और मुंह से अपने, नाम जो रब का लेता है।
६. रहता है खुशहाल हमेशां, नाम उसे सुख देता है।
७. एक खुदा को मानेगा, बस एक ही को पहचानेगा।
८. इस दुनिया[२] की जानेगा, वह उस दुनिया[३] की जानेगा।
९. नाम से मन लग जाए जिस का, जिस ने मन से माना है।
१०. 'नानक' उस ने सच्चे दिल से, पाक[४] निरंजन[५] जाना है। ३।

१. भाग्य वाले। २. लोक। ३. परलोक। ४. पवित्र। ५. ईश्वर।

१. गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥
२. तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥
३. साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥
४. सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥
५. अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥
६. ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥
७. ऐक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥
८. तिस की कटीऐ जम की फासा ॥
९. पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
१०. नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४ ॥

१. जिस को गुर की रहिमत[१] से, खुद खोज अपना मिल जाएगा।
२. उस की प्यास बुझेगी सारी, मन की सोरी[२] पाएगा।
३. साधू की संगत पा कर जो, रब नाम को जपता जाता है।
४. सब रोगों से पाक रहे, तन मन की सेहत पाता है।
५. जो बन्दा उस एक खुदा की, हमद सना[३] दिन रात करे।
६. अपने ही घर बार में रहि हर, हासल आप नजात[४] करे।
७. वह बन्दा जो एक खुदा पर, आस लगाए रहता है।
८. मौत का फंदा कट जाएगा, वह कब जहिमत[५] सहता है।
९. पाक खुदा की भूख जिसे है, चैन वह रब से पाएगा।
१०. दुःख उसका मिट जाए 'नानक' दुःख उसका मिट जाएगा।४।

१. कृपा। २. तृप्ति। ३. स्तुति। ४. मुक्ति। ५. दुःख कलेश।

१. जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥

२. सो संतु सुहेला नहीं डुलावै ॥

३. जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥

४. सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥

५. जैसा सा तैसा द्रिसटाइया ॥

६. अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥

७. सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥

८. गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥

९. जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥

१०. नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥ ५ ॥

१. मन में याद करे जो रब को हक[१] में ध्यान लगाए वह।
२. संत वही खुशहाल रहे, मन दुबिधा में कब पाए वह।
३. जिस पर रब की कृपा हो, वह रहिमत उसकी पाएगा।
४. वह बन्दा कब डरता है, और उस को कौन डराएगा।
५. अैन हकीकत[२] के जैसा रब है, वैसा दर्शन पाता है।
६. अपनी मखलूक[३] के अन्दर खालिक[४] आप समाता है।
७. ढूंडा ढूंडा ढूंडा जिस ने, पाई ढूंड रसाई[५] है।
८. उस ने गुर की रहिमत से, सब असल हकीकत[६] पाई है।
९. हर शै की जड़ मूल वही हैं, उस का सारा जलवा[७] है।
१०. जाहिर[८] उसका जलवा 'नानक' बातिन[९] उसका जलवा है।५।

१. सति सरूप। २. परम सति। ३. सृष्टि। ४. परमात्मा। ५. पहुंच। ६. सचाई। ७. प्रकाश रूप। ८. प्रत्यक्ष। ९. छिपा हुआ।

१. नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥

२. आपन चलितु आप ही करै ॥

३. आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥

४. आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि ॥

५. आपे आपि सगल महि आपि ॥

६. अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥

७. अबिनासी नाही किछु खण्ड ॥

८. धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥

९. अलख अभेव पुरख परताप ॥

१०. आपि जपाए त नानक जाप ॥ ६ ॥

१. कौन जहां में आता है, और कौन जहां से मरता है।
२. खालक मालक आप ही अपना, खेल यह सारा करता है।
३. इक जाहिर इक बातिन है, इक आता है इक जाता है।
४. सब उसके फुरमान[१] में हैं, हर शै को आप चलाता है।
५. हर शै में वह आप बसा है, उस के रंग निराले हैं।
६. आप बनाए आप बिगाड़े, उस के ढंग निराले हैं।
७. बाकी[२] है वह बाकी है, लाफानी[३] है लाफानी है।
८. उस से कल चलती है जग की, वह दुनिया का बानी[४] है।
९. आली[५] है वह मखफी[६] है, शान उसी की बाला[७] है।
१०. जिस को आप जपावे 'नानक', नाम की जपता माला है। ६।

१. हुक्म। २. स्थायी। ३. अविनाशी। ४. बनाने वाला। ५. उत्तम। ६. गुप्त। ७. ऊंची।

१. जिन प्रभु जाता सु सोभावंत॥
२. सगल संसारु उधरै तिन मंत॥
३. प्रभ के सेवक सगल उधारन॥
४. प्रभ के सेवक दूख बिसारन॥
५. आपे मेलि लए किरपाल॥
६. गुर का सबदु जपि भए निहाल॥
७. उन की सेवा सोई लागै॥
८. जिस नो क्रिपा करहि बडभागै॥
९. नामु जपत पावहि बिस्रामु॥
१०. नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु॥ ७॥

१. जिस ने रब को जान लिया, शान उसकी न्यारी न्यारी है।
२. हरफ कहे जब एक भी मुंह से, बनती दुनिया सारी है।
३. रब के ऐसे बंदे ही, दुनिया को पार लगाऐंगे।
४. रब के ऐसे बंदे ही, दुनिया का रोग मिटाऐंगे।
५. रजिमत वाला रब उन सब को, अपने साथ मिलाएगा।
६. गुर से सुन कर नाम जपे, सो दुनिया में सुख पाएगा।
७. ऐसे रब के बन्दों की, इन्सान वह सेवा करता है।
८. जिस परं रहिमत रब की है, और जिस का भाग निराल. है।
९. नाम जपे जो नाम जपे, पाता है अमन अमान[२] वही।
१०. 'नानक' सब से अच्छा है, रखता है ऊंची शान वही। ७।

१. अलग-अलग। २. सुख शांति।

१. जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥

२. सदा सदा बसै हरि संगि ॥

३. सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥

४. करणैहार पछाणै सोइ ॥

५. प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥

६. जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥

७. जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥

८. ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥

९. आपस कउ आपि दीनो मानु ॥

१०. नानक प्रभ जनु एको जानु ॥ ८ ॥ १४ ॥

१. रंग मे रब के रंगा है, जो करता है या कहता है।
२. रंग में रब के रंगा है, वह साथ खुदा रहता है।
३. होता है सो होने दे, बेचैन न जी जिनहार[1] करे।
४. समझे जो कुछ होता है, करतार करे, करतार करे।
५. पाक खुदा जो करता है, संतों को मीठा लगता है।
६. जैसा है वह अैन हकीकत[2], उन को वैसा लगता है।
७. जात से जिस की आए हैं, फिर उस में आप समाऐंगे।
८. चैन उसी को हासल है, वह सुख की दौलत पाऐंगे।
९. शान बड़ा कर अपनों की, खुद अपनी शान बड़ाई है।
१०. रब में और रब वालों में, कब 'नानक' फरक[3] जुदाई है। ८। १४।

---

१. त्राहि-त्राहि। २. परम सति सरूप। ३. अडरता, वखेवां।

सलोकु ॥

१. सरब कला भरपूर प्रभ
बिरथा जाननहार ॥
२. जा कै सिमरनि उधरीऐ
नानक तिसु बलिहार ॥ १ ॥

१. रब को सब तौफीक[1] है।
२. उस को सब का ध्यान है।
३. पार हों उस की याद से,
४. 'नानक' में कुरबान। १।

---

१. समर्था, ताकत, शक्ति।

असटपदि ॥

१. टूटी गाढनहार गोपाल ॥
२. सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥
३. सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥
४. तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥
५. रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥
६. अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥
७. आपन कीआ कछू न होइ ॥
८. जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥
९. तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥
१०. गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१ ॥

१. जोड़ेगा सब टूटे बंधन, दुनिया का करतार है वह।
२. मेहर[1] से उस की जिंदा है सब, आप ही पालनहार है वह।
३. उस के मन में सभ की चिंता, वह करता रखवाली है।
४. पाते हैं सब उस के दर से, खाली कौन सवाली[2] है।
५. मन मेरे कर याद उसी को, तेरा रब लाफानी[3] है।
६. आप से आप हुआ वह जाहिर, जात उसकी लासानी[4] है।
७. उस की मेहर न जब तक होगी, आप कोए कुछ कार न हो।
८. सौ सौ जोर लगाए बंदा, काम मगर इक बार न हो।
९. उस के सिवा ओ बंदे तेरे, कुछ भी काम न आएगा।
१०. एक खुदा नाम लीए जा, 'नानक' मुक्ति पाएगा। १।

१. दया। २. मांगने वाला। ३. अविनाशी। ४. अदूती।

१. रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥
२. प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥
३. धनवंता होइ किआ को गरबै ॥
४. जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥
५. अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥
६. प्रभ की कला बिना कह धावै ॥
७. जे को होइ बहै दातारु ॥
८. तिसु देनहार जानै गावारु ॥
९. जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥
१०. नानक सो जनु सदा अरोगु ॥ २ ॥

१. मान[1] न कर मगरुर न हो, गो रुप सुहाना पाया है।
२. रुप खुदा का रुप है यह, जो सब के मन को भाया है।
३. इस पर नाज गरुर[2] न कर, गर पास तेरे कुछ माया है।
४. धन दौलत सब मालिक की है, सारा माल पराया है।
५. बीर बहादर बनना है, बलवान अगर कहलाता है।
६. रब का जोर न हो गर तुझ में, बोल कहाँ फिर जाता है।
७. गर तू खुद को समझा है तू दाता है, या दानी है।
८. सच्चा दाता समझेगा, यह अैन तेरी नादानी[5] है।
९. अपने गुर की रहिमत से, जो अपना मान मिटाएगा।
१०. 'नानक' सिहत[6] पाएगा, वह सारे रोग गंवाएगा। २।

१. अभिमान। २. घमण्डी। ३. सुन्दर, सोहणा। ४. बेगाना। ५. मूर्खता। ६. अरोगता।

१. जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥
२. तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥
३. जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥
४. प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥
५. जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥
६. गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥
७. जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥
८. तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥
९. तिन संतन की बाछउ धूरि ॥
१०. नानक की हरि लोचा पूरि ॥ ३ ॥

१. जैसे एक सतून[१] छत भर का, सर पर बोझ उठाता है।
२. मन भी गुर की बातों से, वैसे ही सहारा[२] पाता है।
३. नाव[३] पे चढ़ कर पत्थर भी, दरिया से पार उतरते हैं।
४. गुर के पाउं में फानी[४] भी, दुनिया से पार उतरते हैं।
५. जैसे दीपक[५] जलने से, सब दूर अन्धेरा होता है।
६. वैसे गुर के दर्शन से, मन रौशन तेरा होता है।
७. जैसे बन के जंगल में, इक राही रसता पाता है।
८. साध की संगत में भी वैसे, नूर[६] हमें मिल जाता है।
९. दाता अैसे संतों की कुछ, बखशिश मुझको धूल[७] करो।
१०. 'नानक' की इस आशा को, मनजूर करो, मकबूल[८] करो। ३।

१. थम्भा। २. आसरा। ३. बेड़ी। ४. नाशवान। ५. दीवा। ६. प्रकाश। ७. चरण-धूल। ८. प्रवान।

१. मन मूरख काहे बिललाईऐ॥

२. पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ॥

३. दूख सूख प्रभ देवनहारु॥

४. अवर तिआगि तू तिसहि चितारु॥

५. जो कछु करै सोई सुखु मानु॥

६. भूला काहे फिरहि अजान॥

७. कउन बसतु आई तेरै संग॥

८. लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग॥

९. राम नाम जपि हिरदे माहि॥

१०. नानक पति सेती घरि जाहि॥ ४॥

१. मूर्ख क्यों चिलाता है, मन मूर्ख किऊ चिलाता है।
२. जो किस्मत का लिखा है, मिल जाता है, मिल जाता है।
३. दुःख भी उस से मिलता है, ते सुख भी उससे मिलता है।
४. अपने रब से ध्यान लगा, क्यों दिल गैरों[1] को देता है।
५. जो कुछ उस से मिलता है, सुख जान उसे, सुख जान उसे।
६. भूला भूला क्यों फिरता है, छोड़ न ओ नादान[2] उसे।
७. तूं दुनिया में आया है, तू साथ अपने क्या लाया है।
८. लिपटा है परवाना[3] बन कर, मन तेरा ललचाया है।
९. मन में जप ले नाम खुदा का, कैसा नाम सुहाना[4] है।
१०. इज्जत शान बड़ा ले 'नानक' आखिर को घर जाना है।४।

---

१. बेगानों को। २. मूर्ख। ३. पतंगा। ४. सुन्दर, शोभनीय।

१. जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ॥
२. राम नामु संतन घरि पाइआ॥
३. तजि अभिमानु लेहु मन मोलि॥
४. राम नामु हिरदे महि तोलि॥
५. लादि खेप संतह संगि चालु॥
६. अवर तिआगि बिखिआ जंजाल॥
७. धंनि धंनि कहै सभु कोइ॥
८. मूख ऊजल हरि दरगाह सोइ॥
९. इहु वापारु विरला वापारै॥
१०. नानक ता कै सद बलिहारै॥ ५॥

१. जिनस[१] खुदा के नाम की है, तू जिस को लेने आया है।
२. संतों के घर मिलती है, यह संतों ही की माया है।
३. शान और शौकत छोड़ के अपनी, रख दे आगे मन का मोल।
४. जिनस खुदा के नाम की ले कर, उस को अपने मन में तोल।
५. लाद के अपनी खेप[२] जरा तू, संतों के हमराह[३] निकल।
६. पाप के जंजालों से तू, आज़ाद हो खातिर ख्वाह[४] निकल।
७. धंन धंन अच्छे भागों का, शुहरा[५] हो, पास और दूर तेरा।
८. इज्जत हो दरगाह में रब की, चेहरा हो पुरनूर[६] तेरा।
९. रब का जो व्यापार कमाए, कम[७] ऐसा व्यापारी है।
१०. रब के ऐसे व्यापारी पर, 'नानक' भी बलिहारी[८] है। ५।

१. सौदा (नाम रूपी सौदा)। २. सौदा। ३. साथ नाल। ४. मनमर्जी के साथ। ५. मशहूरी, प्रसिद्धता। ६. प्रकाशमयी, उज्जवल। ७.घट। ८. कुरबान।

१. चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥

२. अरपि साध कउ अपना जीउ ॥

३. साध की धूरि करहु इसनानु ॥

४. साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥

५. साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥

६. साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥

७. अनिक बिघन ते साधू राखै ॥

८. हरि गुन गाइ अंम्रित रसु चाखै ॥

९. ओट गही संतह दरि आइआ ॥

१०. सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥ ६ ॥

१. साधों के चर्णों को धो कर, उन का धोवन[१] पीते जाओ।
२. जीवन माया साधों पर, कुर्बान करो और जीते जाओ।
३. साधों के चरणों की मिटी, ले ले कर इशनान करो।
४. दिल उन पर कुर्बान करो, तुम जान उन पर कुर्बान करो।
५. साध की सेवा करते हैं, जो भाग खुदा से पाते हैं।
६. साधों की संगत में रह कर, हमद[२] खुदा की गाते हैं।
७. सब जोखों[३] और खतरों से, यह साध बचा कर रखेंगे।
८. रब के जो गुण हैं, वह अमृत का रस चखेंगे।
९. जो संतों का साया[४] लेन, उन के द्वारे आते हैं।
१०. 'नानक' अपने संतों से, सुख चैन वह सारे पाते हैं। ६।

१. चरणामृत। २. उसतती। ३. तकलीफें। ४. आसरा, ओट।

१. मिरतक कउ जीवालनहार ॥
२. भूखे कउ देवत अधार ॥
३. सरब निधान जाकी द्रिसटी माहि ॥
४. पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥
५. सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥
६. तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥
७. जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥
८. सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥
९. करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥
१०. नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥ ७ ॥

१. जिस में जान न बाकी होगी, उस में जान वह डालेगा।
२. भूखों का आधार वही है, कंगालों को पालेगा।
३. उस की एक नज़र में सारे, जग की दौलत माया है।
४. किस्मत में जो लिखा है, हर एक ने उस से पाया है।
५. जो कुछ है सब माल है उस का, वह हर शै का बानी[१] है।
६. वैसा गुजरा, और न होगा, यकता[२] है, लासानी[३] है।
७. ओ बंदे दिन रात हमेशा, बिरद[४] कीए जा नाम यही।
८. नाम लिए जा, नाम लिए जा, काम है ऊंचा काम यही।
९. जिस को अपनी रहिमत से, खुद रब ने नाम सिखाया है।
१०. उसका जीवन पाक[५] है 'नानक', नाम से रुतबा[६] पाया है। ७।

१. आसरा। २. मूल, बनाने वाला। ३. अदूती। ४. जप। ५. पवित्र। ६. ऊंची पदवी।

१. जा कै मनि गुर की परतीति ॥
२. तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
३. भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥
४. जाकै हिरदै एको होइ ॥
५. सचु करणी सचु ता की रहत ॥
६. सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥
७. साची द्रिसटि साचा आकारु ॥
८. सचु वरतै साचा पासारु ॥
९. पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥
१० नानक सो जनु सचि समाता ॥ ८ ॥ १५ ॥

१. सच्चे दिल से मान के जो, ईमान[१] गुरु पर लाता है।
२. याद खुदा की करता है, वह रब में ध्यान लगाता है।
३. जिस के मन में एक बसे, जो एक में ध्यान लगाता है।
४. जग के तीनों तबकों[२] में, फिर भगत वही कहलाता है।
५. काम सब उस के सचे हों, वह सच में जीता रहता है।
६. सच है उस के दिल के अन्दर, सच ही मुंह से कहता है।
७. सच है उस की आँखों में, वह सच की दुनिया पाएगा।
८. सच ही सब में बरतेगा, वह सच ही सच फैलाएगा[३]।
९. जिस ने रब को सच के अन्दर, सच्चे दिल से पाया है।
१०. 'नानक' वह इन्सान है सच्चा, सच में आप समाया है। ८।१५।

१. सिदक, यकीन। २. तीनों लोकों। ३. वह सच का ही प्रचार करेगा।

सलोकु ॥

१. रूपु न रेख न रंगु किछु
त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥
२. तिसहि बुझाए नानका
जिसु होवै सुप्रसंन ॥ १ ॥

१. पाक वह रंग और रुप से,
तीन गुणों[1] से दुर।
२. रब जिन पे खुश 'नानका'
पाऐं उस का नूर[2] ॥ १ ॥

---

१. तीन गुण - सतो गुण, रजो गुण, तमो गुण। २. प्रकाश।

असटपदी ॥

१. अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥
२. मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥
३. तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥
४. सरब निरंतरि एको सोइ ॥
५. आपे बीना आपे दाना ॥
६. गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ॥
७. पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥
८. क्रिपा निधान दइआल बखसंद ॥
९. साध तेरे की चरनी पाउ ॥
१०. नानक कै मनि इहु अनराउ ॥ १ ॥

१. रब की याद बसा ले मन में रब तेरा लाफानी है।
२. उलफत छोड़ इन्सानों की, सब प्यार यह तेरा फानी है।
३. उस से बड़ कर और नहीं कुछ, उस से आली कोई नहीं।
४. हर शै में बेरोक वह है, उस से खाली कोई नहीं।
५. सब कुछ उस पर रौशन है, वह बीना[१] है, वह दाना है।
६. गहरा और अथाह भी है, दानिशमंद[२] सयाना है।
७. पाक खुदा परमेशर है, गोबिंद है, पालनहार है वह।
८. रहिमत[३] का वह मखजन[४] है, रहिमान[५] है वह गुफार[६] है वह।
९. साध जो तेरे प्यारे हैं, सुख पाउं मैं उन के कदमों में।
१०. 'नानक' की यह ख्वाहिश है, लग जाऊं मैं उन के कदमों में।१।

१. देखने वाला (सरब द्रिष्टता)। २. बुध-विवेकमयी। ३. दया। ४. भंडार, खज़ाना। ५. दयावान। ६. श्रमा करने वाला।

१. मनसा पूरन सरना जोग॥

२. जो करि पाइआ सोई होगु॥

३. हरन भरन जा का नेत्र फोरु॥

४. तिस का मंत्रु न जानै होरु॥

५. अनद रूप मंगल सद जा कै॥

६. सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै॥

७. राज महि राजु जोग महि जोगी॥

८. तप महि तपीसरु ग्रिहसत महि भोगी॥

९. धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ॥

१०. नानक तिसु पुरख का किनै अंत न पाइआ॥ २॥

१. सब का मनशा[१] पूरा कर के, सब को आप बचाता है।
२. जो उस ने लिख रखा है, वह पूरा होता जाता है।
३. आए दुनिया, जाए दुनिया, उसके एक इशारे से।
४. वाकिफ[२] और नहीं कोई भी, उसके मन्त्र न्यारे[३] से।
५. रुप आनन्द उसी का है, कुछ उसको रज मलाल[४] नहीं।
६. सुनता मैं घर में उसके, चीज किसी का काल[५] नहीं।
७. राजों में वह राजा है, और जोगी हों तो जोगी है।
८. तप वालों में तप वाला है, घर वालों में भोगी है।
९. भगत जो हरदम ध्यान लगाए, चैन उसे मिल जाएगा।
१०. ऐसी हालत हस्ती का कुछ, 'नानक' अंत न पाएगा। २।

---

१. इच्छा। २. जानकार। ३. अनोखे मन्त्र। ४. गम, फिक्र। ५. घाटा, अभाव।

१. जा की लीला की मति नाहि ॥

२. सगल देव हारे अवगाहि ॥

३. पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥

४. सगल परोई अपुनै सूति ॥

५. सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥

६. जन दास नाम धिआवहि सेइ ॥

७. तिह गुण महि जा कउ भरमाए ॥

८. जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥

९. ऊच नीच तिस के असथान ॥

१०. जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥ ३ ॥

१. उस ने ऐसी लील[1] धारी, जिसका अंत न आया है।
२. देवता सब थक थक कर हारे, भेद कब उसका पाया है।
३. बच्चे को मालूम हो क्यों कर, बाप कहां से आया है।
४. तार में काल संसार परो कर, रब ने हार बनाया है।
५. जिनको उसने होश दिया है, ज्ञान और ध्यान वह पाते हैं।
६. उसके सच्चे दास वही हैं, उस में ध्यान लगाते हैं।
७. सतगुन, रजगुन, तमगुन में[2] वह जिस का मन भरमाता है।
८. जीता है गाहि[3] मरता है, गाहि आता है गाहि जाता है।
९. ऊंचे हो या नीचे हों, सब उसके हैं असथान सदा।
१०. जैसा आह समझाए 'नानक' वैसा उस को जान सदा। ३।

---

१. खेल, रचना। २. तीनों गुणों में। ३. भावें।

१. नाना रूप नाना जा के रंग॥
२. नाना भेख करहि इक रंग॥
३. नानक बिधि कीनो बिसथारु॥
४. प्रभ अबिनासी एकंकारु॥
५. नाना चलित करे खिन माहि॥
६. पूरी रहिओ पूरनु सभ ठाइ॥
७. नाना बिधि करि बनत बनाई॥
८. अपनी कीमति आपे पाई॥
९. सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ॥
१०. जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ॥ ४॥

१. रुप नए और रंग नए, नैरंग[१] नए और ढंग नएं।
२. आप रहे यकरंग[२] मगर बहुरुप है रंगा रंग नएं।
३. गुनागूनी[३] जलवों[४] से फैलाता है संसार वही।
४. जात उस की लाफानी है, यकता है एक ओअंकार वही।
५. चाल नई और ढाल नई पल पल में स्वांग[५] वह करता जाए।
६. कामिल जात उस की है, वह सारे भरन भरता जाए।
७. रंगा रंगी खलक[६] बनाए, खूब दिखाए सनअत[७] वह।
८. आप कपनी कदर वह जाने, आप ही अपनी कीमत वह।
९. हर मन में घर उस का है, हर घर में उस की बसती है।
१०. नाम को जप कर जीता है, बस यह 'नानक' की हसती है॥ ४॥

१. माया। २. इक रंग, इक भेस। ३. रंग बिरंगे। ४. दृश्य। ५. भेस। ६. दुनिया। ७. कारगरी।

१. नाम के धारे सगले जंत ॥

२. नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥

३. नाम के धारे सिम्रति बेद पुरान ॥

४. नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥

५. नाम के धारे आगास पाताल ॥

६. नाम के धारे सगल आकार ॥

७. नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥

८. नाम के संगि उधरे सुनि स्रवन ॥

९. करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥

१०. नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥ ५ ॥

१. नाम के बल पर काइम रह कर खलकत[1] बसती रहती है।
२. नाम के बल पर खितों तबकों, संसारों की हस्ती है।
३. नाम के बल पर हिन्दू को, स्मृतियाँ वेद पुराण मिले।
४. नाम के बल पर ज्ञान मिले, और नाम के बल पर ध्यान मिले।
५. नाम के बल पर काइम यह, आकाश भी है, पाताल भी है।
६. नाम के बल पर हासल सारे, जग को इसतकलाल[2] भी है।
७. नाम के बल पर काइम हो, नगरी में आबादी हो।
८. नाम खुदा का सुन कर हासल, बंदे को आज़ादी हो।
९. जिस को अपनी रहिमत से, वह नाम की उलफत देता है।
१०. 'नानक' चौथे दर्जे[3] में, वह कामल अुकती लेता है। ५।

---

१. सृष्टि। २. ठहिराव। ३. सहिज अवस्था।, ऊंची अवस्था।

१. रूप सति जा की सति असथानु ॥
२. पुरख सति केवल परधानु ॥
३. करतूति सति सति जा की बाणी ॥
४. सत पुरख सभ माहि समाणी ॥
५. सति करम जा की रचना सति ॥
६. मूलु सति सति उतपति ॥
७. सति करणी निरमल निरमली ॥
८. जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥
९. सतिनामु प्रभ का सुखदाई ॥
१०. बिसवासु सति नानक गुर ते पाई ॥ ६ ॥

१. सच्चा उस का रुप भी है, और सच्चा ही असथान भी है।
२. खालक सच्ची उस की हस्ती, जो सब में प्रधान ही है।
३. सच्चे उसके काम भी हैं, और सच्ची उस की बात भी है।
४. सच्ची उसकी जात भी है, पुर[1] जिस से मौजूदात[2] भी है।
५. सच्चे फिअल[3] सब उस के हैं, और सच्चा खूब पसारा[4] है।
६. जड़ भी सच है मूल भी सच है, सच्चा पेड़ भी सारा है।
७. खालस[5] से भी बढ़ कर खालस, सच्चे का काम बनाए वह।
८. जिसकी आप सुझाए वह, हर शै को नेक बनाए वह।
९. सच्चा नाम खुदा का है, जो दुनिया का सुखदाता है।
१०. यह सेवा सच्चा ईमान[6] हमेशा, 'नानक' गुर से पाता है। ६।

---

१. परिपूर्ण। २. सारा जगत दिखाई देना। ३. काम। ४. फैलाव। ५. शुद्ध। ६. यकीन. भरोसा।

१. सति बचन साधू उपदेस ॥
२. सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥
३. सति निरति बूझै जे कोइ ॥
४. नामु जपत ता की गति होइ ॥
५. आपि सति कीआ सभु सति ॥
६. आपे जानै अपनी मिति गति ॥
७. जिस की स्रिसटि सु करणै हारु ॥
८. अवर न बूझि करत बीचारु ॥
९. करते की मिति न जानै कीआ ॥
१०. नानक तो तिसु भावै सो वरतीआ ॥ ७ ॥

१. कौल[1] है सच्चा साधों का, उपदेश वह सच्च फरमाते हैं।
२. सच्चे वह भी जिन के मन में, मंदर साध बनाते हैं।
३. खालस सच्च को जो समझे, यह भेद जिसे मिल जाता है।
४. नाम खुदा का जपता है वह, और छुटकारा पाता है।
५. सच्ची जात खुदा की है, सब सच्चा काम बनाया है।
६. अपनी हद और हालत को, खुद आप उसी ने पाया है।
७. अपनी रचना आप रचे, कर्ता है वह करतार है वह।
८. राइ[3] न पुछै और किसी से, पूरा खुदमुखतार[4] है वह।
९. आप जो खुद मखलूक[5] हुआ, खालक[6] के भेद न पाएगा।
१०. जो उस को मनजूर है 'नानक' वह पूरा हो जायेगा। ७।

१. वचन। २. परम सत्य। ३. सलाह। ४. पूर्ण स्वतन्त्र। ५. पैदा किया हुआ। ६. पैदा करने वाला।

१. बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥

२. जिनि बूझिआ तिस आइआ सवाद ॥

३. प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥

४. गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥

५. ओइ दाते दुख काटनहार ॥

६. जा कै संगि तरै संसार ॥

७. जन का सेवकु सो वडभागी ॥

८. जन कै संगि एक लिव लागी ॥

९. गुन गोबिंदु कीरतनु जनु गावै ॥

१० गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥ ८ ॥ १६ ॥

१. हैरत[१] को भी हैरत[१] है, हैरानी की हैरानी है।
२. जिस ने उस को जाना है, बस लज़त[२] उस ने जानी है।
३. रब का रंग निराला है इस रंग में जो रच जाते हैं।
४. गुर की बातें सुन सुन कर, वह आला मकसद[३] पाते हैं।
५. ऐसे दाता लोगों ही से, दुःख का दूर अजार[४] हुआ।
६. उन की संगत पाने से, दुनिया का बेड़ा पार हुआ।
७. अच्छे भाग उन्हीं के हैं, जो उन की सेवा करते हैं।
८. संगत उस की पा पा कर, रब वाहिद[५] का दम भरते हैं।
९. हमद[६] खुदा की करते हैं, जो मालक के गुण गाते हैं।
१०. 'नानक' गुर की रहिमत[७] से, वह दुनिया में फल पाते हैं। ८। १६।

---

१. आश्चर्य। २. आनंद। ३. उत्तम उपदेश। ४. रोग। ५. इक प्रभु। ६. उस्तति। ७. कृपा।

सलोकु ॥

१. आदि सचु
जुगादि सचु ॥
२. है भि सचु
नानक होसी भि सचु ॥१ ॥

१. सच्चा रोजि अज़ल से पहले
२. सच्चा रोज़ि-अज़ल भी है।
३. आज भी वह सच्चा है,
४. 'नानक' सच्चा होगा कल भी वह१ ॥

१. उस सति स्वरूप परमात्मा की होंद सृष्टि रचना तो पहले, सृष्टि-रचना के समय, आज भी और भविष्य में भी हमेशा कायम रहेगी।

असटपदी ॥

१. चरन सति सति परसनहार ॥
२. पूजा सति सति सेवदार ॥
३. दरसनु सति सति पेखनहार ॥
४. नामु सति सति धिआवनहार ॥
५. आपि सति सति सभ धारी ॥
६. आपे गुण आपे गुणकारी ॥
७. सबदु सति सति प्रभु बकता ॥
८. सुरति सति सति जसु सुनता ॥
९. बुझनहार कउ सति सभु होइ ॥
१०. नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१ ॥

१. पांव भी उसके सच्चे हैं, जो उनको चूमे सच्चा है।
२. पूजा उनकी सच्ची है, जो उसको पूजे सच्चा है।
३. दर्शन उसका सच्चा है और सच्चा है जो दर्शन पाए।
४. नाम भी उसका सच्चा है और सच्चा है जो ध्यान लगाए।
५. जात भी उसकी सच्ची, जिसने सब संसार सम्भाला है।
६. आप ही नेकी, आप ही खुद वह, नेकी देने वाला है।
७. सच्चा पाक कलाम[१] है उसका, सच्चा है जो कहता है।
८. होश[२] भी सच्चा, सच्चा वह, जो उसकी सुनता है।
९. सोच समझ जो रखता है, उस दाता को सब सच्चा है।
१०. कहि 'नानक' रब[३] सच्चा है, रब सच्चा है, रब सच्चा है।१।

---

१. पवित्र बाणी। २. सुरत। ३. प्रभु।

१. सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥

२. करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥

३. जा कै रिदै बिसवासु प्रभ आइआ ॥

४. ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥

५. भै ते निरभउ होइ बसाना ॥

६. जिस ते उपजिया तिसु माहि समाना ॥

७. बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥

८. ता कउ भिंन न कहना जाई ॥

९. बूझै बूझनहारु बिबेक ॥

१०. नाराइन मिले नानक एक ॥ २ ॥

१. सच्च का रूप समझ कर जिस ने, दिल में रब को माना है।
२. करता धरता दुनिया का, उस खालक को पहचाना है।
३. जिस के मन में रब पर अपने, तकीआ[1] है, ईमान
४. उसके मन में ज्ञान है रोशन, हासल सब इरफान भी है।
५. खौफ से वह बेखौफ रहे, कब खौफ को उसने जाना है।
६. जात से जिस की आया उस ने, आखरकार समाना है।
७. जिनस[2] कोई हमजिनस[3] में अपने, जिस दम आन समाई है।
८. हरफ दूई[4] का कौन कहे, दोनों की दूर जुदाई है[5]।
९. बन्दा जिस में सोच समझ है, साफ उस पर यह बात हुई।
१०. नारायण की जात में मिल कर, एक ही 'नानक' जात हुई। २।

१. टेक। २. बसतू (जात)। ३. अपने जैसी वसतु या जात (जीव ब्रह्म में)। ४. द्वैत भाव। ५. बिछोड़ा, अल्प पन।

१. ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥
२. ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥
३. ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥
४. ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥
५. ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥
६. प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥
७. सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥
८. सेवक की राखै निरंकारा ॥
९. सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥
१०. नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥ ३ ॥

१. मालक का जो सेवक है, हर हुक्म वह पूरा करता है।
२. मालक का जो सेवक है, मालक की सेवा करता है।
३. मालक का जो सेवक है, ईमान से मन भरपूर करे।
४. मालक का जो सेवक है, वह सब अच्छे दसतूर[१] करे।
५. मालक का जो सेवक है, खुद मालक उस के संग में है।
६. मालक का जो सेवक है, वह रंगा उस के रंग में है।
७. मालक का जो सेवक है, रब उस को रोज़ी[२] देता है।
८. मालक का जो सेवक है, रब उस की पत[३] रख लेता है।
९. मालक का जो सेवक है, रब मिहर[४] से जिसको शाद[५] करे।
१०. 'नानक' ऐसा सेवक ही, मालक को हरदम याद करे। ३।

---

१. अमल, आचरण। २. रिजक। ३. इज्जत। ४. कृपा। ५. प्रसन्न।

१. अपुने जन का परदा ढाकै॥

२. अपने सेवक की सरपर राखै॥

३. अपने दास कउ देइ वडाई॥

४. अपने सेवक कउ नामु जपाई॥

५. अपने सेवक की आपि पति राखै॥

६. ता की गति मिति कोइ न लाखै॥

७. प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै॥

८. प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे॥

९. जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ॥

१०. नानक सो सेवकु दहदिसि प्रगटाइआ॥ ४॥

१. अपने प्यारे बन्दे का, वह परदा ढाके, अैब छुपाए।
२. इज्जत अपने सेवक की, वह सर पर रख कर हाथ बचाए।
३. शान बढ़ाई[1] देने वाला, दास को इख्जत देता है।
४. अपना नाम जपाने की सेवक को हिम्मत देता है।
५. मालिक अपने सेवक की,खुद शान और इज्जत रखता है।
६. रुतबा[2] उसका कौन भुलाए, ऐसी अजमत[3] रखता है।
७. रब के प्यारे सेवक को, फिर कौन पहूंचने वाला है।
८. ऊंचे से वह ऊंचा है, वह बाला४ से भी बाला[4] है।
९. जिस सेवक को पाक खुदा ने, अपनी खिदमत[5] बख्शी है।
१०. 'नानक' उस सेवक को उसने, हर सू[6] इज्जत बख्शी है।४।

१. बड़ाई। २. पदवी। ३. करामात, बजुर्गी। ४. ऊंचा। ५. सेवा। ६. चारों ओर।

१. नीकी कीरी महि कल राखै ॥

२. भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥

३. जिस का सासु न काढत आपि ॥

४. ता कउ राखत दे करि हाथ ॥

५. मानस जतन करत बहु भाति ॥

६. तिस के करतब बिरथे जाति ॥

७. मारै न राखै अवरु न कोइ ॥

८. सरब जीआ का राखा सोइ ॥

९. काहे सोच करहि रे प्राणी ॥

१०. जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥ ५ ॥

१. एक नन्नी सी[1] चिऊंटी[2] को, जब जोर अता[3] रब पाक[4] करे।
२. लशकर लाख करोड़ों को वह पल के अन्दर खाक करे।
३. जिसकी जान न ले वह मालक जिस को मार न डाले आप।
४. हाथ करम[5] का उस पर रख कर उसकी जान बचा ले आप।
५. बंदा कोशिश लाख करे वह हिम्मत सौ सौ बार करे।
६. करतब उस के जाऐं अकारथ[6] कार वह सब बेकार करे।
७. मारे किस की ताकत है और रखे किस की हिम्मत है।
८. सब की रक्षा करने वाली उस खालक की कुदरत है।
९. ओ फानी[7], किस सोच में है तूं सोच ने तुझ को मारा है।
१०. 'नानक' जप ले नाम उसी का जो बिन-देखा[8] न्यारा है। ५।

१. छोटी सी। २. कीड़ी। ३. प्रदान, बखशदा है। ४. पवित्र प्रभू। ५. कृपा। ६. व्यर्थ। ७. नाशवान। ८. अदृश्य (ना दिखाई देने वाला।

१. बारंबार बार प्रभु जपीऐ ॥
२. पी अंम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥
३. नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥
४. तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥
५. नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥
६. नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥
७. नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥
८. मन तन नामहि नामि समाने ॥
९. ऊठत बैठत सोवत नाम ॥
१०. कहु नानक जन कै सद काम ॥ ६ ॥

१. हरदम नाम उसी का लो, हर बार उसी को याद करो।
२. अमृत है यह पी पी कर तन सीर[1] करो, दिलशाद[2] करो।
३. गुर के मुंह से सुन कर जिस ने, नाम का हीरा पाया है।
४. उसको फिर इस दुनिया में, कुछ और नज़र कब आया है।
५. नाम ही उस की दौलत है हक नाम[3] ही रुप और रंग भी है।
६. नाम ही उस की राहत[4] है, हक नाम ही उसके संग भी है।
७. नाम के रस को प्रेम के लब[5] से, जो खुशकिस्मत पीता है।
८. नाम बसे तन मन में उस के, नाम के बल पर जीता है।
९. जब वह उठे, बैठे, सोए, नाम ही लेता रहता है।
१०. काम यह रब के बंदे का है, सुन जो 'नानक' कहता है॥ ६ ॥

१. ठंडा। २. प्रसन्न। ३. सच्चा नाम, सतिनाम। ४. सुख-शांति। ५. बुल, होंठ।

१. बोलहु जसु जिहबा दिनु राति॥

२. प्रभि अपनै जन कीनी दाति॥

३. करहि भक्ति आतम कै चाइ॥

४. प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ॥

५. जो होआ होवत सो जानै॥

६. प्रभ अपने का हुक्मु पछानै॥

७. तिस की महिमा कउन बखानउ॥

८. तिस का गुनु कहि एक न जानउ॥

९. आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे॥

१०. कहु नानक सेई जन पूरे॥ ७॥

१. जो बंदे दिन रात जबां[१] से, दाता के गुण गाते हैं।
२. निअमत खास खुदा ने दी है, काम में उसको लाते हैं।
३. शौक से भक्ति करते हैं, जो रब से प्रेम लगाते हैं।
४. रब में आप समाते हैं[३], सुख चैन हमेशां पाते हैं।
५. गुजरा[४] है सो जाने वह, जो आयेगा[५] सो जाने वह।
६. हुक्म खुदा का माने वह, उस मालक को पहिचानें वह।
७. उस की क्या तारीफ करूं, वह तारीफों से वाला है।
८. एक सिफत मालूम नहीं, वह लाखों सिफतों वाला है।
९. जिस के मन में आठ पहिर, उस रब की खास हजूरी हो।
१०. 'नानक' कासल[६] बंदे हैं वह, बात उन्हीं की पूरी हो।७।

१. रसना से। २. उत्तम वस्तु। ३. लीन होते हैं। ४. भूत भविष्य का उसको ज्ञान रहता है। ५. ऊंचा। ६. पूर्ण।

१. मन मेरे तिन की ओट लोहि ॥

२. मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥

३. जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥

४. सो जनु सरब थोक का दाता ॥

५. तिस की सरनि सरब सुख पावाहि ॥

६. तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥

७. अवर सिआनप सगली छाडु ॥

८. तिसु जन की तू सेवा लागु ॥

९. आवनु जानु न होवी तेरा ॥

१०. नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥ ८ ॥ १७ ॥

१. अै मन मेरे ओट[१] लिया कर ऐसे कामल[२] बन्दों की।
२. तन मन कर कुरबान उन्हीं पर. छोड़ दे सुहबत[३] गंदो की।
३. जिस ने रब को जाना है, और शान उस की पहिचानी है।
४. दिल वाला फयाज[४] वही है, सब चीज़ों का दानी है।
५. उस की सुहबत[३] पाएगा तू, चैन तुझे मिल जायेगा।
६. उस के दर्शन पाएगा तू, अपने पाप मिटाएगा।
७. छोड़ दे उस चतुराई को, हां छोड़ दे उस चतुराई को।
८. ऐसे कामल बन्दों का, तू सेवा कर शैदाई[५] हो।
९. छूटेगा सब मरना जीना आए और न जाएगा।
१०. पांव[६] उन्हीं के पूज सदा फिर 'नानक' मुक्ति पाएगा। ८। १७।

---

१. आसरा। २. पूरे। ३. संग, साथ, संगत। ४. सखी। दाता। ५. उनमत, मस्ताना। ६. चरण।

सलोकु॥

१. सत पुरखु जिनि जानिआ
   सतगुरु तिस का नाउ॥
२. तिस कै संगि सिख उधरै
   नानक हरि गुण गाउ॥१॥

१. सच्चे रब को जान ले,
   सतिगुर[1] वह कहलाए।
२. 'नानक' हरि गुण गा कर,
   सिख[2] को पार लगाए॥ १॥

१. सच्चा गुरु। २. चेला, सेवक।

असटपदी ॥

१. सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥
२. सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥
३. सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥
४. गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥
५. सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥
६. गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥
७. सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥
८. गुर का सिखु वडभागी हे ॥
९. सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥
१०. नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥ १ ॥

१.सतिगुर[१] अपने सिखों की, खुद आप हिफाजत[२] करता है।
२. सतिगुर अपने सेवक पर, हर आप इनाइत[३] करता है।
३. सतिगुर अपने सिखों का, कुल मैल कपट धो देता है।
४. गुर के मुंह से सुन कर, रब का नाम जबां से लेता है।
५. सतिगुर अपने सिखों के, सब कैद और बंधन तोड़ेगा।
६. सतिगुर का जो चेला है, शहिबानीं-लज़त[४] छोड़ेगा।
७. सतिगुर अपने सिखों को, हक नाम[५] की दौलत देता है।
८. सतिगुर का सिख अपने गुर से, अच्छी किस्मत[६] लेता है।
९. सतिगुर दोनों जग[७] में अपने, सिख को नेकों कार करे।
१०. 'नानक' सतिगुर सिखों की, खुद अपनी जान[८] शुमार करे ॥ १ ॥

---

१. सच्चा गुर। २. रक्षा। ३. बख्शश करता है। ४. इन्द्रियों का सुख। ५. सच्चे नाम दी। ६. उत्तम भाग। ७. लोक-परलोक। ८. आपणे प्राणां वांगू।

१. गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै॥
२. गुर की आगिआ मन महि सहै॥
३. आपस कउ करि कछु न जनावै॥
४. हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै॥
५. मनु बेचै सति गुर कै पासि॥
६. तिसु सेवक के कारज रासि॥
७. सेवा करत होइ निहकामी॥
८. तिस कउ होत परापति सुआमी॥
९. अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ॥
१०. नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ॥ २॥

१. गुर के जब असथान[१] में जाकर, कोई सेवक रहता है।
२. लाजम[२] है सब करता जाए, जो जो सतगुर कहता है।
३. नाम की खातर काम न हो, मत अपना आप जताए वह।
४. हरदम रब का नाम जपे, और उस में ध्यान जमाए वह।
५. सतिगुर को मन अपना देकर, मन का मोल चुकाता जाए।
६. ठीक उसी के काम हों सारे, जो चाहे सो पाता जाए।
७. फल की ख्वाहिश[३] दूर करे, जो काम करे निष्काम[४] करे।
८. आखर उस को रब मिल जाए, रब के जो सब काम करे।
९. रब की कृपा जिस पर होगी, रहिम उस पर फरमाएगा[५]।
१०. 'नानक' अपने गुर से सेवक, आप हिदाइत[६] पाएगा। २।

१. टिकाना। २. जरुरी। ३. इच्छा। ४. निरइच्छत। ५. उस से कृपा करेगा। ६. शिक्षा।

१. बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥
२. सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥
३. सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥
४. अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥
५. सरब निधान जीअ का दाता ॥
६. आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥
७. ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥
८. एकहि आपि नही कछु भरमु ॥
९. सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥
१०. नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥ ३ ॥

१. बीसों बिसवे[1] सतिगुर जिस को, अपना सेवक मानेगा।
२. जाएगा परमेशर को, वह हाल खुदा का जानेगा।
३. सच्चा वह सतिगुर है जिसको, ना[2] का हरदम ध्यान रहे।
४. अैसे गुर के सदके[3] जाउं, जान उस पर कुर्बान रहे।
५. जितने माल खजाने हैं, लोगों को बख्शिश करता है।
६. आठ पहिर वह पाक खुदा की उलफत[4] का दम भरता है।
७. बन्दा रब में, रब बन्दे में, जात से बाहर जात नहीं।
८. गो वाहिद[5] है जात खुदा की, इस में शक की बात नहीं।
९. चालाकी से पाऐं न उस को, चतुराई से हाथ न आए।
१०. ऊंचे अच्छे भाग हों जिस के, 'नानक' अैसा गुर वह पाए। ३।

१. पूर्ण तौर पर। २. प्रभु का नाम। ३. कुर्बान। ४. प्यार। ५. इको इक।

१. सफल दरसनु पेखत पुनीत॥

२. परसत चरन गति निरमल रीति॥

३. भेटत संगि राम गुन रवे॥

४. पारब्रहम की दरगह गवे॥

५. सुनि करि वचन करन आघाने॥

६. मनि संतोखु आतम पतीआने॥

७. पूरा गुरु अखिओ जाका मंत्र॥

८. अंम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत॥

९. गुण बिअंत कीमति नहीं पाइ॥

१०. नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ॥ ४॥

१. गुर का दर्शन फल देता है, मन को पाक[१] बनाता है।
२. छू कर उस के चरणों को, सब चाल चलन धुल जाता है।
३. रहि कर उस की संगत में, जो खालक के गुण गाता है।
४. पाक खुदा की दरगह का, वह बंदा रसता पाता है।
५. उस की बातें सुनने से, कानों को लजत[२] मिलती है।
६. मन को चैन मुयसर हो[३] और रुह[४] को राहत[५] मिलती है।
७. कामिल सतगुर जिसका मंत्र, लाफानी[६] कहलाता है।
८. अमृत उसकी आँखों का, मूर्ख को संत बनाता है।
९. गुण उस के बेअंत हैं, 'नानक' मोल न उनको पाऐंगे।
१०. अपने साथ मिलाए उन को, जो जो उनको भाऐंगे। ४।

---

१. पवित्र। २. आनन्द। ३. मन को शांति मिलती है। ४. आत्मा। ५. शांति। ६. अविनाशी।

१. जिहबा एक उसतति अनेक॥

२. सति पुरख पूरन बिबेक॥

३. काहू बोल न पहुचत प्रानी॥

४. अगम अगोचर प्रभ निरबानी॥

५. निराहार निरवैर सुखदाई॥

६. तां की कीमति किनै न पाई॥

७. अनिक भगत बंदन नित करहि॥

८. चरन कमल हिरदै सिमरहि॥

९. सद बलिहारी सतिगुर अपने॥

१०. नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने॥ ५ ॥

१. मेरे मुंह में एक ज़वाँ, वसफों के उसके अंत नहीं[१]।
२. काबिस[२] आकिल[३] सच्ची हस्ती, उस जैसा भगवंत नहीं।
३. फानी[४] की क्या ताकत है, लाफानी[५] की तारीफ बताए।
४. वह आली[६] वह मखफी[७] हसती, चिंता उसके पास न आए।
५. पाक है खाने पीने से, बेलाग[८] है वह सुखदाई है।
६. वह अनमोल खुदा है, उसकी कीमत किस ने पाई है।
७. संत अनेक उसी के आगे हरदम सीस झुकाते हैं।
८. पाक कंवल चरणों पर, वह दिल से ध्यान जमाते हैं।
९. अैसे प्यारे सतगुर पर, फिर जान न क्यों बलिहारी हो।
१०. मिहर से जिसकी 'नानक' रब का नाम जबां पर जारी हो।५।

१. प्रभु के गुण अनंत हैं, गुण गाने के लिए मेरी जीभ एक है। २. पूर्ण। ३. ज्ञानमयी। ४. नाशवान। ५. अविनाशी। ६. श्रेष्ठ। ७. गुप्त। ८. अभिज।

१. इहु हरि रसु पावै जनु कोइ॥
२. अंम्रितु पीवै अमरु सो होइ॥
३. उसु पुरख का नाही कदे बिनास॥
४. जा कै मनि प्रगटे गुनतास॥
५. आठ पहर हरि का नामु लेइ॥
६. सचु उपदेसु सेवकु कउ देइ॥
७. मोह माइआ कै संगि न लेपु॥
८. मन महि राखै हरि हरि एकु॥
९. अंधकार दीपक परगासे॥
१०. नानक भरम मोह दुख तह ते नासे॥ ६॥

१. कोई कोई बन्दा है जो यह अमृत रस पीता है।
२. जो अमृत रस पीता है लाफानी[1] हो कर जीता है।
३. बाकी[2] है लाफानी है वह कब दुनिया में मरता है।
४. वसफों वाला[3] मालिक जिस के सीने में घर करता है।
५. आठ पहर जो अपने दिल से नाम खुदा का लेता है।
६. सच्ची सच्ची पाक हिदाइत वह सेवक को देता है।
७. माया से कुछ प्यार न रखे और न दिल ललचाए वह।
८. एक खुदा की याद कर बस उस पर ध्यान जमाए वह।
९. जैसे दूर हो सब तारीकी[4] जब दीपक पुरनूर[5] रहे।
१०. वैसे गुर मिलने से 'नानक' मोह भ्रम दुःख दूर रहे। ६।

---

१. अमर। २. सदीवी। ३. सिफतां वाला। ४. अंधेरा। ५. प्रकाशवान।

१. तपति माहि ठाढि वरताई॥
२. अनदु भइआ दुख नाठे भाई॥
३. जनम मरन के मिटे अंदेसे॥
४. साधु के पूरन उपदेसे॥
५. भउ चूका निरभउ होइ बसे॥
६. सगल बिआधि मन ते खै नसे॥
७. जिस का सा तिनि किरपा धारी॥
८. साध संगि जपि नामु मुरारी॥
९. थिति पाई चूके भ्रम गवन॥
१०. सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन॥ ७॥

१. आग लगी हो सीने में, तो ठडंक यह पहुंचाता है।
२. मन को सुख आनंद मिले, दुःख दूर सबी हो जाता है।
३. साधू अपने सेवक से, उपदेश जो परा कहता है।
४. कब फिर जीने मरने का अंदेश[१] बाकी रहता है।
५. मन का सारा खौफ मिटे, बेखौफ[२] हो तो बेबाक[३] रहे।
६. दूर हो सब तकलीफें मन की, मन हर दुःख से पाक रहे।
७. अपना प्यारा करके तुझ को, रहिमत वाला शाद[४] रहे।
८. जब साधों की संगत में, तू नाम खुदा का याद करे।
९. दूर तनासुख[५] होता है, सुख पाता, भ्रम मिटाता है।
१०. 'नानक' बंदा वसफ[६] खुदा का, दिल से जब सुन पाता है। ७।

१. फ्रिक। २. निर्भय, बेडर। ३. बे-भ्रम। ४. प्रसन्न। ५. आवागमन, जन्म मरन। ६. सिफत।

१. निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥

२. कला धारि जिनि सगली मोही ॥

३. अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥

४. अपुनी कीमति आपे पाए ॥

५. हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥

६. सरब निरंतरि एको सोइ ॥

७. ओति पोति रविआ रूप रंग ॥

८. भए प्रगास साध कै संग ॥

९. रचि रचना अपनी कल धारी ॥

१०. अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ८ ॥ १८ ॥

१. हर गुण[१] से वह पाक भी है, और आप वह हरगुण वाला है।
२. उस की न्यारी कुदरत ने, हैरत[२] में सब को डाला है।
३. अपने रंग वह आप ही जाने, अपना खेल बनाए आप।
४. अपना रुतबा[३] आप वह समझे, अपना दाम[४] लगाए आप।
५. वे उस के रब कोई नहीं, वह यकता[५] है लासानी[६] है।
६. रुह[७] वही है सब के अन्दर, सभ जानों की जानी[८] है।
७. शकलें उस की, रंग उसी के, उस का ताना बाना है।
८. साधों की संगत में रह कर, नूर[९] उस का पहचाना है।
९. रचना खूब रचाई उस ने, कुदरत उस को न्यारी है।
१०. सौ सौ बार खुदा अपने पर, खुद 'नानक' बलिहारी है।८।१८।

१. सत, रज, तम-तीनों गुणों से। २. हैरानी। ३. पदवी। ४. मूल्य, कीमत। ५. अनोखा। ६. अदुती। ७. आत्मा। ८. प्राणों के प्राण। ९. तेज़, प्रकाश।

सलोकु॥

१. साथि न चालै बिनु भजन
बिखिआ सगली छारु॥
२. हरि हरि नामु कमावना
नानक इहु धनु सारु॥ १ ॥

१. साथ चलेगी बंदगी[1],
दुनिया मिट्टी धूल।
२. हरदम याद खुदाई की,
'नानक' धन का मूल[2]। १।

---

१. ईश्वर भक्ति। २. धनों का धन।

असटपदी॥

१. संत जना मिलि करहु बीचारु॥
२. एकु सिमरि नाम आधारु॥
३. अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु॥
४. चरन कमल रिद महि उरि धारहु॥
५. करन कारन सो प्रभु समरथु॥
६. द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु॥
७. इहु धनु संचहु होवहु भगवंत॥
८. संत जना का निरमल मंत॥
९. ऐक आस राखहु मन माहि॥
१०. सरब रोग नानक मिटि जाहि॥ १॥

१. संतों की संगत में मिल कर, रब का सच विचार करो।
२. एक खुदा को याद करो, हक नाम[१] का तुम आधार[२] करो।
३. और जतन सब छोड़ों बाबा, झूठे हैं सब और उपाओ[३]।
४. पाक कंवल से चरणों को, तुम दिल में खूब बसाते जाओ।
५. वह दुनिया का क़र्त्ता धर्त्ता, खालक है, करतार भी है।
६. नाम पे उसके काइम रहिना, सब से अच्छा कार[४] भी है।
७. उस धन के अंबार[५] लगा लो, धंन धंन भाग तुमारे हों।
८. साफ है यह संतों का कहना, जिस से वारे न्यारे हों।
९. अपने मन में आस करो, तो एक खुदा की आस करो।
१०. रोग मिटें सारे 'नानक', सब रोगों का नाश करो॥ १॥

१. सच्चा नाम। २. आसरा। ३. यतन। ४. कंम। ५. ढेर।

१. जिसु धन कउ चारि कुन्ट उठि धावहि ॥
२. सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥
३. जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥
४. सो सुखु साधु संगि परीति ॥
५. जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥
६. सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥
७. अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥
८. रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥
९. सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥
१०. जपि नानक दरगहि परवानु ॥ २ ॥

१. चार तरफ जिस धन की खातर, उठ कर भागे जाता है।
२. रब की सेवा करने से, वह धन तेरे हाथ आता है।
३. तू जिस सुख की ख्वाहिश दिल में, हरदम मेरे मीत करे।
४. वह सुख सारा मिल जाएगा, जब संतों से प्रीत करे।
५. जिस इज्जत की खातिर हरदम तू करता है काम भले।
६. वह इज्जत मिल जाएगी, जब दौड़ के रब के पास चले।
७. लाख दुआएं[1] करता जा तू दूर न होगा रोग तेरा।
८. नाम के दारु दरमल से, मिट जाए रोग और सोग[2] तेरा।
९. रब का नाम खजाना आला, सारे माल खजानों में।
१०. नाम को जपकर 'नानक' मिल जा तू मकबूल[3] इन्सानों में। २।

---

१. इलाज, बेनती। २. शोक। ३. प्रवान होए। कबूल होए।

१. मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥

२. दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥

३. ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥

४. जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥

५. कलि ताती ठांढा हरि नाउ ॥

६. सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥

७. भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥

८. भगति भाइ आतम परगास ॥

९. तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥

१०. कहु नानक काटी जम फासी ॥ ३ ॥

१. नूर खुदा के नाम का लेकर, मन को जब पुरनूर[1] करे।
२. हासल हो तसकीन[2] तुझे, हक नाम ही दुविधा दूर करे।
३. रोक रुकावट दूर रहे, रसते में मुशकल कोई न आए।
४. जिस के दिल में नाम बसे, हक-नाम से वह सुख पाता जाए।
५. जलती है कलयुग की दुनिया, नाम से ठंडक आएगी।
६. सिमरन कर लो, सिमरन कर लो, फिर राहत[3] मिल जाएगी।
७. खौफ खतर सब जाते हैं, हर आशा पूरी होती है।
८. भक्ति भी हो, प्रेम भी हो, फिर रुह[4] भी नूरी[5] होती है।
९. वह घर जो लाफानी[6] है, इन्सान वहां जा रहता है।
१०. मौत की फांसी कट जाती है, सुन जो 'नानक' कहता है। ३।

---

१. प्रकाशमयी रोशन। २. तसल्ली। ३. शांति। ४. आत्मा। ५. प्रकाशवान। ६. अमर।

१. ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥

२. जनमि मरै सो काचो काचा ॥

३. आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥

४. आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥

५. इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥

६. हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥

७. अनिक उपाव न छूटनहारे ॥

८. सिंम्रिति सासत बेद बीचारे ॥

९. हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥

१०. मनि बंछत नानक फल पाइ ॥ ४ ॥

१. असल हकीकत[1] वह सोचेगा, जो सच्चों का सच्चा है।
२. जीता है और मरता है, जो झूठा है और कच्चा है।
३. रब की सेवा करने से, सब दूर तनासुख[2] होता है।
४. जिस पर हो गुरदेव का साया, मान खुदी[3] सब होता है।
५. हीरे जैसी जान है तेरी, जान तेरी बच जायेगी।
६. याद खुदा की कर ले, उस से रुह[4] सहारा पाएगी।
७. कब छुटकारा होता है, तुम करते जाओ लाख उपाए।
८. गो[5] सब वेदों शास्त्रों, और स्मृतियों को पढ़ते जाओ।
९. अपने रब की भक्ति में, जब मन को खूब लगाओगे।
१०. 'नानक' फल मिल जाएगा, तुम मन की आशा पाओगे।४।

१. सच्चाई। २. जन्म मरण। ३. अहंकार। ४. आत्मा। ५. चाहे।

१. संगि न चालसि तेरै धना॥

२. तूं किआ लपटावहि मूरख मना॥

३. सुत मीत कुटंब अरु बनिता॥

४. इन ते कहहु तुम कवन सनाथा॥

५. राज रंग माइआ बिसथार॥

६. इन ते कहहु कवन छुटकार॥

७. असु हसती रथ असवारी॥

८. झूठा डंफु झूठु पासारी॥

९. जिनि दीऐ तिसु बुझै न बिगाना॥

१०. नामु बिसारि नानक पछुताना॥ ५॥

१. जब दुनिया से जाएगा, धन दौलत साथ न जाएगी।
२. जिस से लिपटा फिरता है, मन मूर्ख काम न आएगी।
३. कुनबा[१] है, या बीवी[२] है, या बेटा है या साथी है।
४. क्यों बनता हैं मालक उन का, कोई न तेरा नाती[३] है।
५. राज भी हो और रंग भी हो धन दौलत का पुशतारा[४] हो।
६. अैश जब इतने मिलते हों, कब दुनिया से छुटकारा हो।
७. हाथी है या घोड़ा है, रथ गाड़ी शुतर[५] सवारी है।
८. झूठा ढंग रचाया है, यह झूठ नुमाइश सारी है।
९. जो मूर्ख उस बख्शिश वाले, दाता को बिसराएगा।
१०. भूल के उसके नाम को 'नानक', आखिर को पछताएगा।५।

१. टबर, परिवार। २. पत्नी। ३. रिश्तेदार। ४. ढर, बोझ। ५. ऊंठ।

१. गुर की मति तूं लेहि इआने ॥
२. भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥
३. हरि की भगति करहु मन मीत ॥
४. निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥
५. चरन कमल राखहु मन माहि ॥
६. जनम जनम के किलबिख जाहि ॥
७. आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥
८. सुनत कहत रहत गति पावहु ॥
९. सार भूत सति हरि को नाउ ॥
१०. सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥ ६ ॥

१. सुन नादान[1] नसीहत[2] गुर की, यूं तुझ से फरमाते हैं।
२. दाना[3] भी जब छोड़ें भक्ति, सौ सौ गोते खाते है।
३. यारो! रब की भक्ति कर लो, भक्ति ही से फल पाउगे।
४. साफ तुमारा सीना[4] होगा, मन को पाक बनाओगे।
५. पाक कंवल से चरणों का, जब मन में प्रेम बसाओगे।
६. पिछले सारे जन्मों को तुम, पाप मिटाते जाओगे।
७.नाम का सिमरन आप करो, और औरों को भी नाम जपाओ।
८. नाम को सुन कर, नाम सुनाकर, नाम पर रहि कर मुक्ति पाओ।
९. नाम ही असली सची शै[5] है, नाम यह लेते जाओ तुम।
१०. मन के इतमीनान[6] से 'नानक', मालक के गुण गाओ तुम। ६।

१. मूर्ख। २. शिक्षा। ३. सयाना। ४. हृदय। ५. वस्तु। ६. टिकाउ।

१. गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥

२. बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥

३. होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥

४. सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥

५. छाड़ि सिआनप सगली मना ॥

६. साध संगि पावहि सचु धना ॥

७. हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥

८. ईहा सुखु दरगाह जैकारु ॥

९. सरब निरंतरि एको देखु ॥

१०. कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥ ७ ॥

१. गुण गाने से तेरे मन का, मैल सभी छुट जायेगा।
२. जहिर गरुर[१] तकबर[१] का, जो फैला है मिट जायेगे।
३. मन से चिंता दूर रहे, सुख पाएगा, सुख पाएगा।
४. हरदम नाम खुदा के, दुःख जाएगा, दुःख जाएगा।
५. छोड़ दे ऐ दिल सब चतुराई, चतुराई कुछ काम न आए।
६. साध की संगत मिल जाए, सच्ची सुच्ची दौलत पाए।
७. सच्चे रब को कर सरमाया[२] फिर सच्चा व्यवहार भी हो।
८. दुनिया में सुख हासल हो, दरगाह[३] में जै जै कार भी हो।
९. एक का जलवा[४] देखे हरसू[५] सब में रब को पाए वह।
१०. भाग हो 'नानक' माथे पर फिर खुशकिस्मत कहिलाए वह।७।

---

१. हउमै अहंकार। २.पूजा। ३. परमात्मा के दरबार में। ४. तेज। ५. हर तरफ।

१. एको जपि ऐको सालाहि ॥

२. एकु सिमरि ऐको मन आहि ॥

३. एकस के गुन गाउ अनंत ॥

४. मनि तनि जापि एक भगवंत ॥

५. ऐको एकु एकु हरि आपि ॥

६. पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥

७. अनिक बिसथार एक ते भए ॥

८. एकु अराधि पराछत गए ॥

९. मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥

१०. गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥ ८ ॥ १९ ॥

१. एक खुदा का नाम लिए जा, हमद[१] उसी की गाए जा।
२. एक खुदा की याद किए जा, मन में नाम बसाए जा।
३. गाए जा गुण गाए जा, रब वाहद[२] है, बेअंत भी है।
४. तन मन से जप नाम उसी का, वह मालक है, भगवंत भी है।
५. एक वही है, एक वही है, एक अकेला आया है।
६. हर सू[३] उस का जलवा है, हर शै में आप समाया है।
७. वहदत[४] ही से कसरत[५] निकली, एक से ही सब आते हैं।
८. रब वाहद[२] की पूजा कर ले, पाप सभी मिट जाते है।
९. एक खुदा के प्रेम में जिस ने, तन मन रंगे सयाना है।
१०. 'नानक' गुर की रहिमत से, इक रब को उस ने जाना है। ८।

१. उसतती। २. इक। ३. हर जगह। ४. एकता। ५. अनेकता।

सलोकु ॥

१. फिरत फिरत प्रभ आइआ
परिआ तउ सरनाइ ॥
२. नानक की प्रभ बेनती
अपनी भगती लाइ ॥ १ ॥

१. फिरता फिरता आ गया,
रब के पाक दवार[1]।
२. भगती की तौफीक हो[2],
'नानक' को सरकार ॥ १ ॥

१. दवितर-घर। २. ईशवर-भक्ति करने की समर्था हो।

असटपदि ॥

१. जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥
२. करि किरपा देवहु हरि नामु ॥
३. साध जना की मांगउ धूरि ॥
४. पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥
५. सदा सदा प्रभु के गुन गावउ ॥
६. सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥
७. चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥
८. भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥
९. एक ओट एको आधारु ॥
१०. नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥ १ ॥

१. तू दाता मैं एक भिखारी, लेने आया दान तेरा।
२. नाम तेरे का दान मिले, उस दान से हो अहिसान तेरा।
३. साध तेरे प्यारे हैं उन के दे चरणों की खाक[१] मुझे।
४. पाक खुदा, अै पाक खुदा, दे खाक दी चुटकी पाक मुझे।
५. गाउं मैं, गुण गाउं मैं, हर वक्त तेरे गुण गाउं मैं।
६. नाम तेरा हर सांस मैं लूं, बस तुझ पर ध्यान जमाउं मैं।
७. पाक कंवल से चरणों से, अै दाता प्रीत लगाउं मैं।
८. तेरी भक्ति का दर मेरा हो, भगत तेरा बन जाउं मैं।
९. ओट[२] मैं तेरी लेता हूं, है तू ही पुशतीबान[३] मेरा।
१०. पाक युकदस[४] नाम का या रब, 'नानक' पाए दान तेरा।१।

---

१. चरण धूल। २. आसरा, शरण। ३. रक्षक। ४. पवित्र

१. प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥
२. हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥
३. जिन चाखिआ से जन त्रिपताने ॥
४. पूरन पुरख नहीं डोलाने ॥
५. सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥
६. उपजै चाउ साध कै संगि ॥
७. परे सरनि आन सभ तिआगि ॥
८. अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥
९. बड़भागी जपिआ प्रभु सोइ ॥
१०. नानक नामि रते सुखु होइ ॥ २ ॥

१. जिस पर रब की रहिमत होगी, खूब उन्हें सुख आएगा।
२. लेकिन कोई कोई होगा, जो रब रस[१] को पाएगा।
३. जिस जिस ने यह रस चखा है, उसको इर्तमनान[२] हुआ।
४. जम कर पांव न उखड़ें, उसके वह काबिल[३] इन्सान हुआ।
५. प्रेम के रस और रंग से उनका, जो दाइम[४] भरपूर रहे।
६. संतों की संगत में ऊंचा, उनको शौक जरुर रहे।
७. सब का तकीआ[५] छोड़ के जो, बस एक सहारा पाते हैं।
८. मन उनका नूरानी हो, वह हरदम ध्यान जमाते हैं।
९. नाम खुदा का जपने वाले, खुशकिस्मत कहलाएंगे।
१०. नाम से जो रंगीन हुए हैं[६], 'नानक' वह सुख पाएंगे। २।

१. परम आनंद। २. तसल्ली, टिकाव। ३. पूरा। ४. हमेशां। ५. आसरा। ६. नाम रंग में जो रंगे गए हैं।

१. सेवक की मनसा पूरी भई ॥

२. सतिगुर ते निरमल मति लई ॥

३. जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥

४. सेवकु कीनो सदा निहालु ॥

५. बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥

६. जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥

७. इछ पुनी शरधा सभ पूरी ॥

८. रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥

९. जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥

१०. नानक भगती नामि समाइ ॥३ ॥

१. जो जो ख्वाहिश[1] सेवक की हो, रब पूरी कर देता है।
२. अपने प्यारे सतगुर से, वह पाक नसीहत[2] लेता है।
३. जिन पर रब की रहिमत होगी, काम उनके हो जाएंगे।
४. रब के सेवक खुश रहते हैं, राहत[3] हरदम पाएंगे।
५. सेवक के सब बन्धन टूटें, दुनिया से छुटकारा हो।
६. जीना मरना छूटेगा, दुःख दूर भ्रम का सारा हो।
७. जो चाहे सो हो जाए, हर ख्वाहिश दिल की पूरी हो।
८. वासिल[4] हो वह जात से रब की, हासल खास हजूरी[5] हो।
९. जिस का वह कहलाता था, उस मालिक से मिल जायेगा।
१०. भक्ति से वह नाम खुदा में, 'नानक' आप समाएगा।

---

१. इच्छा। २. शुभ शिक्षा। ३. सुख, आराम, शांति। ४. लीन। ५. प्रभु की नजदीकता प्राप्त होती है।

१. सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥

२. सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥

३. सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥

४. सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥

५. सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥

६. गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥

७. सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥

८. जनम जनम का टूटा गाढै ॥

९. गुरि पूरे ततु इहै बुझाइआ ॥

१०. प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४ ॥

१. उस को क्यों कर भूलें हम, जो मेहनत का फल भूल न जाए।
२. उस को क्यों कर भूलें हम, जो काम कीए पर फूल चड़ाए।
३. उस को क्यों कर भूले हम, हर चीज़ का जिस से दान मिले।
४. उस को क्यों कर भूले हम, जिंदों को जिस से जान मिले।
५. उस को क्यों कर भूलें हम, जो आग के अंदर जान बचावे।
६. गुर की जिस पर रहिमत हो, वह कोई उस के दर्शन आए।
७. उस को क्यों कर भूलें हम जो सब के पाप मिटाता है।
८. जन्मों के सब टुटे फुटे[1], अपने साथ मिलाता है।
९. मुरशिद[2] कासल[3] मेरा है यह गुर[4] उस ने समझाया है।
१०. 'नानक' मैंने अपने रब पर अपना ध्यान जमाया है। ४।

---

१. जन्म जन्मात्रों के पतितों को। २. गुरू। ३. पूरा। ४. तरीका। मन्त्र सापन।

१. साजन संत करहु इहु कामु ॥

२. आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥

३. सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥

४. आपि जपहु अवरहु नामु जपावहु ॥

५. भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥

६. बिनु भगती तनु होसी छारु ॥

७. सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥

८. बूडत जात पाऐ बिस्रामु ॥

९. सगल दूख का होवत नासु ॥

१०. नानक नामु जपहु गुनतासु ॥ ५ ॥

१. यार सन्तों काम करो, इक सब से अच्छा काम करो।
२. सब को छोड़ो, सब को छोड़ो, याद खुदा का नाम करो।
३. सिमरन कर लो, सिमरन कर लो, सिमरन से सुख पाते जाओ।
४. नाम जपो, खुद नाम जपो औरों को उस का नाम जपाओ।
५. भक्ति प्रेम की नईआ[१] पर, संसार का सागर पार करो।
६. छोड़ के भक्ति दाता की, मत अपनी मिटी ख्वार[२] करो।
७. रब का नाम खजाना है, सुख राहत[३] जो पहुंचाएगा।
८. डूबे जाने वालों को, नाम उस का पार लगाएगा।
९. नाम जपो हक नाम[४] जपो, दुःख दूर करो, दुःख दूर करो।
१०. नाम खजान वसफों[५] का है, 'नानक' जाप जरूर करो॥ ५॥

१. बेड़ी। २. आपने आप दुर्दशा ना करो। ३. सुख शांति। ४. सच्चा नाम। ५. गुणों, सिफतां का खजाता है नाम।

१. उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥

२. मन तन अंतरि इही सुआउ ॥

३. नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥

४. मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥

५. भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥

६. बिरला कोऊ पावै संगु ॥

७. एक बसतु दीजै करि मइआ ॥

८. गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥

९. ता की उपमा कही न जाइ ॥

१०. नानक रहिआ सरब समाइ ॥ ६ ॥

१. प्रीत उगी और प्रेम का रस भी, दिल में आया शौक यही।
२. मन के अन्दर चाह यही है, तन के अन्दर जोज[१] यही।
३. आँखों से दीदार करूं, दीदार किए सुख पाऊं मैं।
४. साधों के चरणों को धो कर, सुख आनन्द मनाऊं मैं।
५. मन जिन के रंगीन हुए हैं, रब की पाक मुहब्बत में
६. कोई किस्मत वाला पहुंचे, उन भगतों की मुहब्बत[२] में।
७. बख्शिश कर इक निअमत मुझ पर, इक ही शै का तालिब[३] हूं।
८. अपने गुर की रहिमत से, हक नाम जपूं, हक नाम जपूं।
९. उसकी महिमा क्यों कर हो, वह फहिम[४] में किसके आया है।
१०. हाजर[५] नाजर[६] है रब 'नानक', सब में आप समाया है। ६।

१. चाह, इच्छा। २. संगत। ३. चाहवान। ४. समझ। ५. सब जगह मौजूद। ६. सब कुछ देखने वाला।

१. प्रभ बखमंद दीन दइआल॥

२. भगति वछल सदा किरपाल॥

३. अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल॥

४. सरब घटा करत प्रतिपाल॥

५. आदि पुरख कारण करतार॥

६. भगत जना के प्रान अधार॥

७. जो जो जपै सु होइ पुनीत॥

८. भगति भाइ लावै मन हीत॥

९. हम निरगुनीआर नीच अजान॥

१०. नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान॥ ७॥

१. सब पर बखशिश करने वाला, आप गरीब निवाज[1] खुदा।
२. भगतों पर है रहिमत[2] उसको, सब पर उसका लुत्फ सदा।
३. बेवाली[3] का वाली[4] है गोबिंद, है गोपाल है वह।
४. सब का पालनहार वही है देता रिजक[5] और माल है वह।
५. सब में अवल हसती उस की, खालक है करतार है वह।
६. भगतों के मन काइम उससे, रुहों[6] का आधार है वह।
७. जो जो उसको जपता जाए, पाक वह होता जाता है।
८. भक्ति प्रेम उसी के रखे, मन से प्रीत लगाता है।
९. गुण तो पास नहीं कुछ मेरे, नीच हूं मैं अनजान हूं मैं।
१०. तेरे साए[7] और अमां[8] में आया अब भगवान हूं मैं।

---

१. गरीब रक्षक, दीन दयाल। २. दया। ३. अनाथ। ४. साथ। ५. रोजी। ६. आत्माएं। ७. छाया। ८. शरण।

१. सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए॥

२. एक निमख हरि के गुन गाए॥

३. अनिक राज भोग बडिआई॥

४. हरि के नाम की कथा मनि भाई॥

५. बहु भोजन कापर संगीत॥

६. रसना जपती हरि हरि नीत॥

७. भली सु करनी सोभा धनवंत॥

८. हिरदै बसे पूरन गुर मंत॥

९. साध संग प्रभ देहु निवास॥

१०. सरब सूख नानक परगास॥ ८॥ २०॥

१. जन्नत[१] पा कर, मुक्ति पा कर वह छुटकारा पाएगा।
२. पल भर भी जो अपने मन में, मालक के गुण गाएगा।
३. शाही[३] तू ने पाई है, और तेरी शान बड़ाई है।
४. प्यारे रब के नाम की बानी, गर[२] तेरे मन भाई है।
५. भोजन है, पोशाक है यह, और मीठा मीठा गाना है।
६. यह जो तेरे लब[४] पर हरदम, नाम खुदा का आना है।
७. काम सब उस के अच्छे हैं, जीशान[५] है वह धन वाला है।
८. जिस के अपने मन के अन्दर, गुर का मन्त्र डाला है।
९. देह संतों की संगत या रब, उन के साथ बसेरा हो।
१०. नानक को सुख हासल हो और गम का दूर अंधेरा हो। ८। २०।

---

१. स्वर्ग। २. यदि। ३. पातशाही। ४. होंठ (जबान)। ५. शान वाला।

सलोकु ॥

१. सरगुन निरगुन निरंकार
सुंन समाधि आपि ॥
२. आपन कीआ नानका
आपे ही फिरि जापि ॥१ ॥

१. गुण वाला बेगुण है वह, जिसका रूप न रंग।
आप समाध लगाए वह, बे-साथी, बे-संग।
२. 'नानक' अपनी आप हो, रचना आपि रचाए।
सब में खुद महिसूस[1] हो, सब में आप समाए ॥ १ ॥

---

१. प्रतीत।

असटपदी ॥

१. जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥
२. पाप पुंन तब कह ते होता ॥
३. जब धारी आपन सुंन समाधि ॥
४. तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥
५. जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥
६. तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥
७. जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥
८. तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥
९. आपन खेलु आपि वरतीजा ॥
१०. नानक करनैहारु न दूजा ॥ १ ॥

१. दुनिया जाहिर[१] जब न हुई थी, सारा आलम[२] सोता था।
२. पुण्य फिर कौन कमाता था, और पाप कहां से होता था।
३. जब वह आप समाधी में, बैठा खुद ध्यान जमाता था।
४. कौन लड़ाई करता था, और किस से बैर कमाता था।
५. वर्णों[३] की तकसीम[४] कहां थी, रिश्ता और न नाता था।
६. खुशियां कौन मनाता था, मत कौन जहां में खाता था।
७. यह दुनिया मोजूद न थी, बस एक वही रब आली था।
८. माया का कुछ मोह न था, संसार भ्रम से खाली था।
९. खेल उसी का है यह दुनिया उस में आप समाया है।
१०. नानक पैदा करने वाला, गैर[५] कहां से आया है। १।

---

१. प्रगट। २. दुनिया, ब्रह्मण्ड। ३. चार वर्ण-ब्राह्मण, खत्री, वैश्य और शूद्र। ४. बटवारा। ५. और कोई, ओपरा, दूसरा।

१. जब होवत प्रभ केवल धनी ॥
२. तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥
३. जब एकहि हरि अगम अपार ॥
४. तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥
५. जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥
६. तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥
७. जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥
८. तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥
९. आपन चलित आपि करनैहार ॥
१०. नानक ठाकुर अगम अपार ॥ २ ॥

१. वाहद[१] जात खुदाई थी, जब शान उसकी यकताई[२] थी।
२. किस को बंदश[३] हासल थी, तब किस ने मुक्ति पाई थी।
३. बे-गायत[४], बे-वाह[५] खुदा, जब एक अकेला छाया था।
४. जन्नत में कौन आया था, और दोजख किस ने पाया था।
५. सब वसफों से बाला रब की, एक सकून[६] में हस्ती थी।
६. 'शिव' किस घर में रहता था, तब शक्ति किस जा[७] बसती थी।
७. आप ही अपनी आँखों में, जब अपना नूर[८] दिखाता था।
८. कौन किसी से डरता था, और कौन निडर कहलाता था।
९. आप चलाए, आप चले, और कोई करतार नहीं।
१०. 'नानक' रब की थाह नहीं, कुछ वार नहीं, कुछ पार नहीं।२।

---

१. एक-मात्र। २. अनुपम। ३. बंधन। ४. अनन्त। ५. अथाह। ६. सुन्न। ७. जगह। ८. प्रकाश।

१. अबिनासी सुख आपन आसन॥

२. तह जनम मरन कहु कहा बिनासन॥

३. जब पूरन करता प्रभु सोइ॥

४. तब जम की त्रास कहहु किसु होइ॥

५. जब अबिगत अगोचर प्रभ एका॥

६. तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा॥

७. जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे॥

८. तब कउन छूटे कउन बंधन बाधें॥

९. आपन आप आप ही अचरजा॥

१०. नानक आपन रूप आप ही उपरजा॥ ३ ॥

१. सुख के आसन पर जब काइम, वह हस्ती लाफानी[1] थी।
२. मरना जीना कैसा था, कब दुनिया आनी जानी थी।
३. कामि[2] जात खुदा की थी, बस खालिक एक अकेला था।
४. मौत का जिसको खटका था, मरने का दूर झमेला था।
५. फहिम[3] से बाला[4] बातिन[5] रब, वह आप अकेला रहता था।
६. चित्र[6] हिसाब न करता था, और लेखा गुप्त[6] न रखता था।
७. तनहाई[7] में वाहिद[8] मालक, पाक निरंजन[9] प्यारा था।
८. किस को कौन जकड़ता था, और किसको कब छुटकारा था।
९. आप ही आप अचंभा है, हैरानी पर हैरानी है।
१०. अपना रूप वह आप ही धर, 'नानक' वह लासानी[10] है। ३।

१. अविनाशी। २. पूर्ण। ३. बुध-बिबेक। ४. ऊंचा, अतंर्यामी। ६. चित्र-गुप्त। ७. अकेला। ८. एकमात्र। १०. माया से रहित। १०. अदुती।

१. जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥

२. तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥

३. जह निरंजन निरंकार निरबान ॥

४. तह कउन कर मान काउन अभिमान ॥

५. जह सरूप केवल जगदीस ॥

६. तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥

७. जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥

८. तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै ॥

९. करन करावन करनैहारु ॥

१०. नानक करते का नाहि सुमारु ॥ ४ ॥

१. पाक खुदा, बेलाग[1] खुदा, जब आप अकेला होता था।
२. पाप कपट का मैल न था, कौन उनको मल मल धोता था।
३. जब बलौस[2] निरंजन की, बेसूरत सूरत होती थी।
४. किस की इज्जत होती थी, तब किस की जिल्लत[3] होती थी।
५. इक मालक की हस्ती थी, मौजूद ही कोई गैर न था।
६. कोन किसी को छलता था, दम झांसा धोखा बैर न था।
७. नूर[4] था गुम नूरानी में, कुछ मेरी और न तेरी थी।
८. भूख किसे फिर लगती थी, और किस को होती सेरी[5] थी।
९. जो कुछ होता रहता है, सब करता है करतार वही।
१०. करता है करतार ही 'नानक', है बेअंत शुमार वही। ४।

१. निरपक्ष, निरवैर। २. पवित्र। ३. बेइज्जती। ४. ज्योति ज्योति-पुंज में, जीव ईश्वर में ही लीन थी। ५. तृप्ति।

१. जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई॥
२. तब कउन माइ बाप मित्र सुत भाई॥
३. जह सरब कला आपहि परबीन॥
४. तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन॥
५. जब आपन आपु आपि उरि धारै॥
६. तउ सगन अपसगन कहा बीचारै॥
७. जह आपन ऊच आपन आपि नेरा॥
८. तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा॥
९. बिसमन बिसम रहे बिसमाद॥
१०. नानक अपनी गति जानहु आपि॥ ५॥

१. मखफी[1] शान खुदाई थी, सब जात में जात समाई थी।
२. कौन था उस दिन खदेश[2] बरादर[3], बेटा बाप न माई थी।
३. हर फन[4] में वह कामिल[5] था, मुहताज न था वह गैरों का।
४. बेद भी किस ने वाचे थे, और कौन किताबें पड़ता था।
५. आप छिपाए रखता था, तदबीरों के मज़मूनों को।
६. कौन बिचारा करता था, फिर नेक और नहिश[6] शुगूनों[7] को।
७. दूर भी था, वह पास न था, और पास भी था, वह दूर न था।
८. कौन था आका[8], कौन था चाकर[9], रुतबों[10] का दस्तूर न था।
९. दुनिया की नैरंगी[11] से, हैरानी ही हैरानी है।
१०. 'नानक' अपनी आप ही जाने, शान बड़ी रबानी[12] है।

१. गुप्त। २. सजण। ३. भाई। ४. कारज। ५. पूरा। ६. बुरे। ७. शगन। ८. मालक। ९. नौकर, गुलाम। १०. पदवियां। ११. माया-जाल। १२. ईश्वरी।

१. जह अछल अछेद अभेद समाइआ॥

२. ऊहा किसहि बिआपत माइआ॥

३. आपस कउ आपहि आदेसु॥

४. तिहु गुण का नाही परवेसु॥

५. जह ऐकहि एक एक भगवंता॥

६. तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता॥

७. जह आपन आपु आपि पतीआरा॥

८. तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा॥

९. बहु बेअंत ऊच ते ऊचा॥

१०. नानक आपस कउ आपहि पहूचा॥ ६॥

१. भेदों छेदों छल से बाला, आप में आप समाया था।
२. तब माया के धोखे में, कौन आया था, कौन आया था।
३. आप उसे आदेश थी अपनी, गैरों का फरमान[१] न था।
४. सतगुण, रजगुण, तमगुण का, इस दुनिया में कुछ काम न था।
५. आप ही था भगवान अकेला, गैरों का कुछ जिक्र न था।
६. किसकी चिंता लगती थी, और कौन था जिसको फिक्र न था।
७. अपने आप तसली थी, और खुद से इत्मीनान[२] भी था।
८. कौन कथाऐं करता था, और करता कौन ब्यान भी था।
९. हर दर्जा बेअंत है वह, ऊंचों से ऊंची बात उसी की।
१०. अपनी आप नज़ीर[३] वह नानक, बेहमता[४] जात उसकी। ६।

१. हुक्म। २. तसल्ली। ३. उदाहरण, मिसाल। ४. अनुपम, बेमिसाल।

१. जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥
२. तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥
३. पापु पुंनु तह भई कहावत ॥
४. कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥
५. आल जाल माइआ जंजाल ॥
६. हउमै मोह भरम भै भार ॥
७. दूख सूख मान अपमान ॥
८. अनिक प्रकार कीओ बखान ॥
९. आपन खेलु आपि करि देखै ॥
१०. खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥ ७ ॥

१. यह रचना जो उस ने रचाई, झूठम झूठ पसारा है।
२. सतगुण, रजगुण, तमगुण से, फैलाया आनम[१] सारा है।
३. गुण फैले तो पाप और पुण्य की, बातों का मजकूर[२] हुआ।
४. जिक्र करे इक दोजक का, इक जन्नत से मसरुर[३] हुआ।
५. जाल बिछाया माया ने, धोखे के फैले तार कहीं।
६. मोह कहीं है, दुनिया का डर, खौफ कहीं, पिनदार[४] कहीं।
७. दुःख भी आया, सुख भी आया, जिलत[५] आई, शान हुई।
८. लाख तरह की हिकमत[६] आई, सौ सौ बात ब्यान हुई।
९. आप ही नानक खेल को देखे, आप ही उस से खेला है।
१०. जब वह खेल समेटे अपना, रहता आप अकेला है। ७।

१. दुनिया। २. जिक्र। चर्चा। ३. प्रसन्न। ४. अहंकार। ५. बेइज्जती, खवारी। ६. सियानप।

१. जहं अबिगतु भगतु तह आपि ॥
२. जह पसरै पासारु संत परतापि ॥
३. दुहू पाख का आपहि धनी ॥
४. उन की सोभा उनहू बनी ॥
५. आपहि कउतक करै अनद चोज ॥
६. आपहि रस भोगन निरजोग ॥
७. जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥
८. जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥
९. बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥
१०. जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥ ८ ॥ २१ ॥

१. मखफी[१] रब के भगत जहाँ[२] में, आप वह उनमें प्यारा है।
२. संतों के प्रताप की खातिर, फैला आलम[२] सारा है।
३. दोनों३ का है आप ही मालिक, दोनों का है आप धनी[४]।
४. उन की शोभा होती है तो, समझें मेरी शान बनी।
५. आप ही खेले खेल तमाशे, खुशियां आप मनाए वह।
६. आप मगर बेलाग[५] रहे, गो सारे लुत्फ उठाए वह।
७. जिन को चाहे नाम से अपने, उन का प्रेम लगाए वह।
८. हुक्म जिन्हें फरमाए वह, दुनिया का खेल खिलाए वह।
९. उसकी थाह शुमार न कोई, कौन गिने या तोलेगा।
१०. जैसे आप बुलाए 'नानक' दास भी वैसे बोलेगा। ८। २१।

१. छिपे हुए गुप्त। २. दुनिया, संसार। ३. दो पख-असती। और नेसती। ४. मालक। ५. निरपख अलेप।

सलोकु ॥

१. जीअ जंत के ठाकरा
आपे वरतणहार ॥
२. नानक एको पसरिया
दूजा कह द्रिसटार ॥१ ॥

१. मालक कुल मखलूक[१] का,
सब में तेरा नूर[२]।
२. 'नानक' दूई[३] न देखीए,
फैला इक का नूर ॥ १ ॥

१. सृष्टि। २. प्रकाश। ३. द्वैत-भाव।

असटपदी ॥

१. आपि कथै आपि सुननैहारु ॥
२. आपहि ऐकु आपि बिसथारु ॥
३. जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥
४. आपनै भाणै लए समाए ॥
५. तुमते भिंन नहीं किछु होइ ॥
६. आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥
७. जाकउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥
८. सचु नामु सोई जनु पाए ॥
९. सो समदरसी तत का बेता ॥
१०. नानक सगल स्रिसटि का जेता ॥ १ ॥

१. आप कहे और आप सुने, तू अपनी आप हिकाइत[१] है।
२. वहिदत२ में तूं वहिदत[२] है, और कसरत[३] में कसरत है।
३. दुनिया तू ने पैदा की है, जब खुद तुझ को भाया है।
४. फिर जब तुझ को भाया है, जग तुझ में आन समाया है।
५. बे[४] तेरे क्या होता है, तू सब कुछ करने वाला है।
६. जग की तू ने तार में, अपने, आप परोई माला[५] है।
७. जिस को रब ने खुद समझाया, सच से रखे काम वही।
८. पाए सचा नाम वही, हां, पाए सच्चा नाम वही।
९. सब को इक नज़र जो देखे, असल हकीकत[६] पाता है।
१०. सब दुनिया को जीते 'नानक' फातह[७] वह कहलाता है। १।

१. कहानी। २. एकता। ३. अनेकता। ४. बगैर, बिना। ५. हार। ६. परम सति। ७. विजेता, जीतने वाला जेतू।

१. जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ॥

२. दीन दइआल अनाथ को नाथु॥

३. जिसु राखै तिसु कोइ न मारै॥

४. से मूआ जिसु मनहु बिसारै॥

५. तिसु तजि अवर कहा को जाइ॥

६. सभ सिरि एकु निरंजन राइ॥

७. जीअ की जुगति जाकै सभ हाथि॥

८. अंतरि बाहरि जानहु साथि॥

९. गुन निधान बेअंत अपार॥

१०. नानक दास सदा बलिहार॥ २॥

१. हाथ में उसकी सारी खलकत[१], मालक सब जांदारों[२] का।
२. बेवाली[३] का वाली[४] है वह, चारा है बेचारों का।
३. मालक जिसको रखना चाहे, कोई न उसको मारेगा।
४. मौत के मुंह में जा पहुंचेगा, जिसको आप बिसारेगा।
५. उस का दामन[५] छोड़ के हम गैरों के पीछे जाएं क्यों।
६. सब के सर पर एक निरंजन, गैर का साया पाए क्यों।
७. सब की चाबी हाथ में उसके, जीता रखे मारे वह।
८. अन्दर बाहर जाहर बातन[६], हरदम साथ हमारे वह।
९. सब वसफों का खाजीना[७] अंत न कोई पाएगा।
१०. 'नानक' दास उसी का है वह, उस के वारी[८] जाएगा।

---

१. दुनिया। २. जीव। ३. निआसरा। ४. मालक। ५. पला। ६. प्रगट, गुप्त। ७. खजाना। ८. बलिहारी।

१. पूरन पूरि रहे दइआल॥

२. सभ ऊपरि होवत किरपाल॥

३. अपने करतव जानै आपि॥

४. अंतरजामी रहिओ बिआपि॥

५. प्रतिपालै जीअन बहु भाति॥

६. जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति॥

७. जिसु भावै तिसु लए मिलाइ॥

८. भगति करहि हरि के गुण गाइ॥

९. मन अंतरि बिसवासु करि मानिआ॥

१०. करनहारु नानक इकु जानिआ॥ ३ ॥

१. रहिमत[1] वाला बखशिश वाला, हरजा[2] उसकी हस्ती है।
२. बारश उसकी रहिमत की, हम सब पर खूब बरसती है।
३. अपने काम वह आप ही जाने, कुछ कहना खुदकामी है।
४. सब भेदों, से वाकिफ है वह, आप ही अन्तर्यामी है।
५. पालनहार वह सब का है, हर रंग वह रोजी देता है।
६. जो जो पैदा होता है, वह नाम उसी का लेता है।
७. जिस को वह मनजूर करे, खुद अपने साथ मिलाता है।
८. रब की भक्ति करता है वह, मालक के गुण गाता है।
९. मन जिसका इमान के पुर[3] है, खास यकीं[4] से मानेगा।
१०. 'नानक' कर्त्ता धर्त्ता सब का, एक खुदा को जानेगा।

१. मिहर। २. हर जगह। ३. पूर्ण। ४. विश्वास।

१. जनु लागा हरि एकै नाइ॥
२. तिस की आस न बिरथी जाइ॥
३. सेवक कउ सेवा बनि आई॥
४. हुकमु बूझि परम पदु पाई॥
५. इस ते ऊपरि नही बीचारु॥
६. जा कै मनि बसिआ निरंकारु॥
७. बंधन तोरि भए निरवैर॥
८. अनदिनु पूजहि गुर के पैर॥
९. इह लोक सुखीए परलोक सुहेले॥
१०. नानक हरि प्रभि आपहि मेले॥ ४॥

१. रब का बंदा याद जिसे, हर वक्त खुदा का नाम रहे।
२. पूरी हों उमीदें उस की, जग में कब नाकाम[१] रहे।
३. खादम[२] पर खिदमत[३] है लाज़म[४], सेवक करता सेवा है।
४. हुक्म जो माने रुतबा[५] पाए, सेवा ही से मेवा है।
५. सब से ऊंची अकल है उस की, आली[६] उस का रुतबा है।
६. बेसूरत की सूरत वाला, जिस के मन में बसता है।
७. सारे बंधन तोड़ेगा वह, वैर न रखे गैरों से।
८. रात हो, दिन हो प्रेम उसे है, अपने गुर के पैरों से।
९. इस दुनिया में सुख पाए और आगे भी आराम मिले।
१०. 'नानक' वही मिल जाए रब से वसल[७] का उसको जाम[८] मिले। ४।

---

१. असफल। २. सेवक। ३. सेवा। ४. जरुरी। ५. ऊंची पदवी। ६. उंचा। ७. मिलाप। ८. प्याला।

१. साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥

२. गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥

३. रांम नाम ततु करहु बीचारु ॥

४. दुर्लभ देह का करहु उधारु ॥

५. अंम्रित बचन हरि के गुन गाउ ॥

६. प्रान तरन का इहै सुआउ ॥

७. आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥

८. मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥

९. सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥

१०. मन इछे नानक फल पावहु ॥ ५ ॥

१. संतों की संगत में मिल कर, जी[1] अपना खुरसंद करो।
२. मालक परमा नंद तुमारा गुण गाओ आनंद[2] करो।
३. नाम खुदा का हक है उस को, सोचो और बिचारो तुम।
४. किस्मत से मिलता है जीना, जीवन खूब संवारो तुम।
५. जिक्र खुदा का अमृत है गुण गाना काम तुमारा है।
६. रुह[3] किनारे लग जाएगी, उस से पार उतारा है।
७. देखो पास खुदा को हरदम, दिल पुरनूर[4] तुमारा है।
८. मिट जाए अज्ञान तुम्हारा, दूर अंधेरा सारा है।
९. उपदेशों को सुन सुन कर, जब मन में नाम बसाओगे।
१०. 'नानक' जैसा दिल चाहेगा, वैसा ही फल पाओगे॥ ५॥

१. मन। २. प्रसंन। ३. आत्मा। ४. प्रकाशवान।

१. हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥
२. राम नामु अंतरि उरि धारि ॥
३. पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥
४. जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥
५. मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥
६. दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥
७. सचु वापारु करहु वापारी ॥
८. दरगह निबहै खेप तुमारी ॥
९. ऐका टेक रखहु मन माहि ॥
१०. नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥ ६ ॥

१. यह दुनिया भी खूब संवारो, अगली दुनिया आप बसाओ।
२. नाम खुदा का मन में लेकर, मन की दुनिया आप बसाओ।
३. गुर कामल[१] तालीम[२] भी कामल[३], पक्का उसका रसता है।
४. यह तालीम[२] जो हासल हो, फिर ह्रदय में रब बसता है।
५. नाम जपो हक नाम जपो, तन मन में इससे प्रेम लगाओ।
६. नाम जपो हक नाम जपो, सभ खौफ कटे दुःख दर्द मिटाओ।
७. सच्च ही का बिओहार करो, गर[४] सतुम सच्चे व्यापारी हो।
८. फिर दरगह में रब के प्यारे, सारी खेप[५] तुम्हारी हो।
९. मन को टेकन[६] दो इक रब की एक सहारा पाओ तुम।
१०. मरना जीना खत्म हो सारा, 'नानक' आओ न जाओ तुम। ६।

१. पूरा। २. शिक्षा। ३. पूरी। ४. अगर। ५. पूंजी। ६. आसरा।

१. तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥
२. उबरै राखनहारु धिआइ ॥
३. निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥
४. प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥
५. जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥
६. नामु जपत मनि होवत सूख ॥
७. चिंता जाइ मिटै अहंकार ॥
८. तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥
९. सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥
१०. नानक ता के कारज पूरा ॥ ७ ॥

१. तोड़ के उस से जोड़ो किस से, दूर किधर हो जाओगे।
२. उस वाली[1] पर ध्यान जमाओ, नाम से मुक्ति पाओगे।
३. नाम जपो बेखौफ[2] खुदा का, डर सब दूर तुम्हारा हो।
४. तुम पर लुतफ[3] खुदा का हो, सब रोग मिटे छुटकारा हो।
५. जिसको मालक आप बचाए, वह क्यों कर दुःख पाता है।
६. नाम जपो हक नाम जपो, दुःख जाता है सुख आता है।
७. उस की चिंता दूर हो सारी, खौफ न तुछ पंदार[4] रहे।
८. रुतबा उसका किसने पाया, वह सब का सरदार रहे।
९. सर पर वीर बहादर गुर, जब अपना साया डालेगा।
१०. काम हों फिर सब पूरे 'नानक' हर मकसद[5] को पालेगा। ७।

१. मालक। २. निडर। ३. आनंद। ४. हउमै। ५. उद्देश्य, इच्छा।

१. मति पूरी अंम्रितु जा की द्रिसटि॥
२. दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि॥
३. चरन कमल जा के अनूप॥
४. सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥
५. धंनु सेवा सेवकु परवानु॥
६. अंतरजामी पुरखु प्रधानु॥
७. जिसु मनि बसै सु होत निहालु॥
८. ताकै निकटि न आवत कालु॥
९. अमर भए अमरा पदु पाइआ॥
१०. साध संगि नानक हरि धिआइआ॥ ८॥ २२॥

१. आकल[१] कामल[२] जात है उसकी नैन में अमृत न्यारा है।
२. जिस का दर्शन करने से, दुनिया का पार उतारा है।
३. जात उस की लासानी[३] है, और पांव कमल से प्यारे हैं।
४. सुन्दर उस का दर्शन है, दर्शन ने काम संवारे हैं।
५. सेवा भी बा-बरकत[४] है, सब उस की खास गुलामी है।
६. सब में वह प्रधान भी है, वह सब का अंतरजामी है।
७. जिस के मन में रब बसता है, वह आनंद मनाएगा।
८. मौत भी उस के पास न फबके, जुग जुग जीता जाएगा।
९. लाफानी[५] हो जाता है लाफानी-रुतबा[६] पाता है।
१०. साध की संगत में जो 'नानक' रब में ध्यान लगाता है। ८। २२।

---

१. दानशमंद। २. पूर्ण। ३. बेमिसाल। ४. बरकतां वाली, भाग्य वाली। ५. अविनाशी। ६. अविनासी पदवी।

सलोकु ॥

१. गिआन अंजनु गुरि दीआ
अगिआन अंधेर बिनासु ॥
२. हरि किरपा ते संत भेटिआ
नानक मनि परगासु ॥ १ ॥

१. गुर ने बखशा ज्ञान का, वह सुरमा पुरनूर[१]।
२. जिस से सब आज्ञान का, हुआ अंधेरा दूर।
३. रब का जिस पर लुतफ[२] हो, संत की सुहबत[३] पाए।
४. 'नानक' मन में नूर[४] हो, दिल रोशन[४] हो जाए॥ १॥

१. प्रकाशमयी। २. कृपा। ३. संगत। ४. प्रकाश वाला।

असटपदी ॥

१. संत संगि अंतरि प्रभु डीठा ॥
२. नामु प्रभू का लागा मीठा ॥
३. सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥
४. अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥
५. नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु ॥
६. देही महि इस का बिस्रामु ॥
७. सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥
८. कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥
९. तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥
१०. नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१ ॥

१. संतों की संगत में रह कर, रब को मन में पाया है।
२. मीठा मीठा नाम खुदा का, उस से लुत्फ[१] उठाया है।
३. रंग बिरंगी दुनिया जिस की, सूरत न्यारी न्यारी है।
४. एक खुदा बस एक खुदा के, मन में देखो सारी है।
५. नाम खुदा का नौ गंजीने[२],खालस अमृत रब का नाम।
६. उस के तन में नाम बसेरा, उसके मन में हो आराम।
७. उस खामोश समाधि में, अनहद झंकार समाती है।
८. वह कैफीअत[३] कौन बताए, खुद हैरत[४] गुम हो जाती है।
९. उस के दर्शन पाएगा वह, जिसको आप दिखाएगा।
१०. जिसको खुद समझाए 'नानक' सूझ वही कुछ पाएगा॥ १॥

---

१. आनन्द। २. खजाने, नौ निधियां। ३. समाचार, वेरवा। ४. हैरानी।

१. सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥
२. घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥
३. धरनि माहि आकास पइआल ॥
४. सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥
५. बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥
६. जैसी आगिआ तैसा करमु ॥
७. पउण पाणी बैसंतर माहि ॥
८. चारि कुंट दहदिसे समाहि ॥
९. तिसते भिंन नही को ठाउ ॥
१०. गुरप्रसादि नानक सुखु पाउ ॥ २ ॥

१. अन्दर भी बेअंत वही है, बाहर भी बेअन्त वही।
२. सब के दिल में आप समाया, मन में है भगवंत वही।
३. उसका जलवा[1] धरती में, आकाश में है पाताल में है।
४. सारे जग को पाल रहा है, जो जो जिस जिस हाल में है।
५. बन में वह पर्वत में वह, तिनके में वह रब आली है।
६. जो जो होता रहता है, कब हुक्म से उनके खाली है।
७. पानी, आग, हवा इस सब में, अपना आप रचाता है।
८. चारों कूंट[2] में उसका जलवा[1], हर सू[3] आप समाता है।
९. हर जा[3] है वह हाजर नाजर उस को सब में पाओगे।
१०. 'नानक' गुर की रहिमत हो, तब आप सुखी हो जाओगे। २।

---

१. तेज, क्रांति। २. चारों ओर। ३. हर जगह।

१. बेद पुरान सिंम्रिति महि देखु ॥

२. ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥

३. बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥

४. आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥

५. सरब कला करि खेलै खेल ॥

६. मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥

७. सरब जोति महि जा की जोति ॥

८. धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥

९. गुर परसादि भरम का नासु ॥

१०. नानक तिन महि एहु बिसासु ॥ ३ ॥

१. बेद, पुरान स्मृतियों को, हम ने देखा भाला है।
२. सूरज, चांद, सितारों में, उस रब का नूर उजाला है।
३. दुनिया में जो बोलेगा, सो उस की बोली बोलेगा।
४. कायम है, वह दाइम है, ना डोला है, ना डोलेगा।
५. खेल वह खेले हर सूरत में, खेल भी उस का न्यारा है।
६. उसके गुण अनमोल हैं सारे, मोल का किस को यारा[१] है।
७. नूर उस को हर नूर में है, वह आप है नूर जमाने का।
८. ताना उस का, बाना उस का, मालक ताने बाने का।
९. गुर की रहिमत जिस दम होगी, शक जाए, ईकान[२] मिले।
१०. गुर की रहिमत जिस दम होगी 'नानक' येह ईमान[३] मिले। ३।

---

१. समर्था। २. दृढ़ विश्वास। ३. यकीन।

१. संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥
२. संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥
३. संत जना सुनहि सुभ बचन ॥
४. सरब बिआपी राम संगि रचन ॥
५. जिनि जाता तिस की इह रहत ॥
६. सति बचन साधु सभि कहत ॥
७. जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥
८. करन करावनहारु प्रभु जानै ॥
९. अंतरि बसै बाहरि भी ओही ॥
१०. नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥ ४ ॥

१. संतों की आँखों से देखो, सब में रब का नूर मिले।
२. संतों के हृदय में देखो, धर्म का नूर जहूर[१] मिले।
३. संतों के कानों में हरफ, जो आया अच्छा आया है।
४. संत रचे हैं रब में जो, सब जग में आप समाया है।
५. जिस ने रब को पहचाना, यह सच में रहिता सहता है।
६. सच्चे बोल सब उस के हैं, जो कहता है सच्च कहता है।
७. दुनिया में जो होता है, वह उस को अच्छा जानेगा।
८. हर कारज का करने वाला अपने रब को मानेगा।
९. अन्दर जलवा, बाहर जलवा, उस के सब नजारे[२] हैं।
१०. मनमोहन का दर्शन पा कर, 'नानक' सब मन हारे हैं॥ ४॥

१. प्रत्यक्ष। २. दृश्य। ३. बलिहारे गए हैं।

१. आपि सति कीआ सभु सति॥
२. तिसु प्रभ ते सगली उतपति॥
३. तिसु भावै ता करे बिसथारु॥
४. तिसु भावै ता ऐकंकारु॥
५. अनिक कला लखी नही जाइ॥
६. जिसु भावै तिसु लए मिलाइ॥
७. कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि॥
८. आपे आपि आप भरपूरि॥
९. अंतरगति जिसु आपि जनाए॥
१०. नानक तिसु जन आपि बुझाए॥ ५॥

१. सच्चा है रब सच्चा है, जो करता है सब सच्चा है।
२. दुनिया पैदा करने वाला आप वही रब सच्चा है।
३. जब तक उसकी मर्जी हो, फैला यह संसार रहे।
४. फिर जब उसकी मर्जी होगी, बस खाली एक ओंकार रहे।
५. ताकत लामहिदूद[1] है उस की कब लिखने में आए वह।
६. जिसको उसका मन चाहे खुद अपने साथ मिलाए वह।
७. किसको समझे पास है यह, और किस को जाने दूर है वह।
८. अपने में वह आप समाया, हर शै में भरपूर है वह।
९. जिसको मन के अंदर अपनी, हस्ती[2] आप जताएगा।
१०. राज[3] वही समझेगा 'नानक' भेद वही कुछ पाएगा। ५।

१. बे-हद, असीम। २. होंद। ३. भेद।

१. सरब भूत आपि वरतारा॥

२. सरब नैन आपि पेखनहारा॥

३. सगल समग्री जा का तना॥

४. आपन जसु आप ही सुना॥

५. आवन जानु इकु खेलु बनाइआ॥

६. आगिआकारी कीनी माइआ॥

७. सभ कै मधि अलिपतो रहै॥

८. जो किछु कहणा सु आपे कहै॥

९. आगिआ आवै आगिआ जाइ॥

१०. नानक जा भावै ता लए समाइ॥ ६॥

१. जो फितरत[१] के अनसर[२] हैं, हर अनसर में वह आप समाए।
२. सब को वह आँखों से झांके, आप ही देखे, आप दिखाए।
३. सारी दुनिया उस का तन[३] है, उस का रूप निराला है।
४. आप करे तारीफ वह अपनी, आप ही सुनने वाला है।
५. जग में आना, जग से जाना, उस ने खेल बनाया है।
६. उस के एक इशारे पर, यह चलती सारी माया है।
७. सब में वह मौजूद भी है, और दूर भी सब से रहता है।
८. जो कुछ हम तुम कहते हैं, खुद कहता है, खुद कहता है।
९. आऐं उस की मर्जी से हम, जाऐं उस की मर्जी से।
१०. ज़ात में उस की 'नानक', आन समाए उसकी मर्जी से। ६।

---

१. कुदरत, प्रकृति। २. तत्व (पांच महाभूत)। ३. शरीर।

१. इसते होइ सु नाही बुरा ॥
२. ओरै कहहु किनै कछु करा ॥
३. आपि भला करतूति अति नीकी ॥
४. आपे जानै अपने जी की ॥
५. आपि साचु धारी सभ साचु ॥
६. ओति पोति आपन संगि राचु ॥
७. ताकी गति मिति कही न जाइ ॥
८. दूसर होइ त सोझी पाइ ॥
९. तिस का कीआ सभु परवानु ॥
१०. गुरप्रसादि नानक इहु जानु ॥ ७ ॥

१. जो कुछ उस से होता है, वह काम बुरा कब होता है।
२. बोलो और क्या है किस ने, आप करे तब होता है।
३. अच्छा है रब अच्छा है, काम अच्छे हैं जो करता है।
४. अपने मन की आप ही जाने जो चाहे सो करता है।
५. सच्चा आप वह सच्चा सब कुछ देता आप सहारा है।
६. जात में अपनी आप रचाया, ताना बाना सारा है।
७. उस की हालत कौन बताए, उस का अंत न सूझेगा।
८. उस से बाहर कोई अगर हो, फिर वह उस की बूझेगा।
९. जो कुछ भी वह करता है, मनजूर[१] समझ मकबूल[१] समझ।
१०. 'नानक' गुर की रहिमत से, तू बात यही माकूल[२] समझ। ७।

---

१. प्रवान २. ठीक।

१. जो जानै तिसु सदा सुखु होइ॥
२. आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ॥
३. ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु॥
४. जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु॥
५. धंनु धंनु धंनु जनु आइया॥
६. जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ॥
७. जन आवन का इहै सुआउ॥
८. जन कै संगि चिति आवै नाउ॥
९. आपि मुकतु मुकतु करै संसारु॥
१०. नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु।८।२३।

१. जिस ने उस को जाना है, सुख चैन उसी ने पाया है।
२. आप खुदा ने उस प्यारे को, अपने साथ मिलाया है।
३. ऊंचे घर का धन वाला हो, इज्जत शान बड़ाई[1] पाए।
४. जिस दिल में भगवान बसे, बस जीते जी वह मुक्ति पाए।
५. धंन धंन भाग[2] वह आया है, लो धंन भाग वह आया है।
६. जिसकी बखशिश रहिमत ने, कुल जग को पार लगाया है।
७. नाम खुदा को रोशन करने, इस दुनिया में आया है।
८. जिस ने उस की संगत पाई, दिल में नाम बसाया है।
९. मुक्त है खुद भी, मुक्ति पाऐं, उस से खास और आम सदा।
१०. 'नानक' उस रब वाले को, प्रणाम[3] सदा, प्रणाम[3] सदा।८।२३।

---

१. वडिआई। २. खुशकिस्मत। ३. नमस्कार।

सलोकु ॥

१. पूरा प्रभु आराधिआ
पूरा जाका नाउ ॥
२. नानक पूरा पाइआ
पूरे के गुन गाउ ॥१ ॥

१. 'कामल'[1] रब का नाम है,
२. उस को सीस[2] झुकाऊं।
३. 'नानक' 'कामल'[1] मिल गया।
४. 'कामल' के गुण गाऊं ॥ १ ॥

१. पूरा। २. सिर।

असटपदि ॥

१. पुरे गुर का सुनि उपदेसु ॥
२. पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥
३. सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥
४. मन अंतर की उतरै चिंद ॥
५. आस अनित तिआगहु तरंग ॥
६. संत जना की धूरि मन मंग ॥
७. आपु छोडि बेनती करहु ॥
८. साध संगि अगनि सागरु तरहु ॥
९. हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥
१०. नानक गुर पूरे नमसकार ॥ १ ॥

१. कामल[१] गुर की बात सुनो, उपदेश वह तुम से कहता है।
२. पाक खुदा परमेश्वर हरदम, पास तुमारे रहता है।
३. हरदम रब को, याद करो, हक नाम से दिल मसरुर[२] करो।
४. मन की चिंता दूर करो, यूं मन की चिंता दूर करो।
५. मौजें तेज़ हवस[३] की छोड़ो, करती हैं दिलगीर[४] यही।
६. संतों के कदमों की मांगो धूल, कि है अकसीर[५] यही।
७. रब से अपनी हाजत[६] मांगो, दूर अपना पिंदार[७] करो।
८. साधों की संगत में तैरो, आग का दरिया पार करो।
९. ले ले कर रुहानी दौलत[८], माल खजाने भरते जाओ।
१०. 'नानक' कामल गुर को तुम, प्रणाम हमेशां करते जाओ। १।

---

१. पूरा, पूर्ण। २. प्रफुल्लित। ३. लालसा। ४. उदास, दुखी। ५. महां औषधि। ६. कामना। ७. अहंकार। ८. आत्मिक-धन।

१. खेम कुसल सहज आनंद ॥

२. साध संगि भजु परमानंद ॥

३. नरक निवारि उधारहु जीउ ॥

४. गुन गोबिंद अंम्रित रसु पीउ ॥

५. चिति चितवहु नाराइण एक ॥

६. एक रूप जाके रंग अनेक ॥

७. गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥

८. दुख भंजन पूरन किरपाल ॥

९. सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥

१०. नानक जीअ का इहै अधार ॥ २ ॥

१. चैन करो तुम अैश मनाओ, सुख पाओ आनंद रहो।
२. संतों की संगत में रब का, नाम जपो खुरसंद[१] रहो।
३. मुक्ति पाए रुह[२] तुमारी, दोज़ख[३] के नज़दीक न आओ।
४. अमृत रस है हमद[४] खुदा की, यह अमृत तुम पीते जाओ।
५. दिल से उस की याद करो, नारायण एक तुमारा है।
६. रुप है उस का एक फकत[५], जो रंगा रंग पसारा[६] है।
७. उस की मेहर[७] गरीबों पर दमोदर वह, गोपाल है वह।
८. सब के दुःख वह दूर करे, रहिमत में अन कमाल है वह।
९. सिमरन कर लो, सिमरन कर लो, नाम जपो हर बार यही।
१०. जो[८] का है अधार यह 'नानक' जी का है अधार यही ॥ २ ॥

१. खुश। २. आत्मा। ३. नरक। ४. उसतती। ५. एक मात्र। ६. फैलाव। ७. दया। ८.मन।

१. उतम सलोक साध के बचन ॥

२. अमुलीक लाल एहि रतन ॥

३. सुनत कमावत होत उधार ॥

४. आपि तरै लोकह निसतार ॥

५. सफल जीवनु सफलु ताका संगु ॥

६. जाकै मनि लागा हरि रंगु ॥

७. जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥

८. सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥

९. प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥

१०. नानक उधरे तिन कै साथे ॥ ३ ॥

१. पाक श्लोकों जैसे मंत्र, तू साधों के बोल समझ।
२. बेश बहा, यह हीरे हैं, तू लाल उन्हें अनमोल[१] समझ।
३. सुन सुन कर जो लाएं अमल में, आखर मुक्ति पाएगा।
४. पार वह खुद भी जाएगा, औरों को पार लगाएगा।
५. अच्छा उस का जीना है, और अच्छा उस की संगत है।
६. जे यकरंग[२] हो ऐसा जिस के मन पर रब की रंगत है।
७. जै जै की आवाज़ हो गैबी[३], नगमे[४] सुनता जाए वह।
८. सुन सुन कर खुश हो कर, उस दाता के गुण गाए वह।
९. ज़ाहिर[५] जिस के माथे रब का, नूरानी चमकारा हो।
१०. उस का साथी हो जा 'नानक', फिर तेरा छुटकारा हो। ३।

१. अमूल्य। २. एक रंग। ३. गुप्त। ४. मधुर संगीत। ५. प्रगट।

१. सरनि जोगु सुनि सरनी आए॥

२. करि किरपा प्रभ आप मिलाए॥

३. मिटि गए बैर भए सभ रेन॥

४. अंम्रित नाम साध संगि लैन॥

५. सुप्रसंन भए गुरदेव॥

६. पूरन होई सेवक की सेव॥

७. आल जंजाल बिकार ते रहते॥

८. राम नाम सुनि रसना कहते॥

९. करि प्रसादु उइआ प्रभि धारी॥

१०. नानक निबही खेप हमारी॥ ४॥

१. सुन कर पुशतीवान[१] खुदा को, पुशतीवान[१] बनाया है।
२. उस ने फज़ल[२] किया है ऐसा, अपने साथ मिलाया है।
३. बैर अदावत[३] छूटे सारे, खाक में हो कर जीता हूं।
४. संतों की संगत में रह कर नाम का अमुत पीता हूं।
५. देख के मेरी सेवा को, गुरदेव मेरे खुरसंद[४] हुए।
६. सेवा मेरी पूरी उतरी, सेवक को आनंद हुए।
७. छूटे सब जंजालों से और पाप कष्ट में रहने से।
८. नाम खुदा का सुनने से और नाम खुदा का कहने से।
९. अपने गुर की रहिमत से यह बखशिश खास ज़रूर हुई।
१०. 'नानक' खेप[५] हमारी सारी पहुंची और मनज़ूर हुई।४।

---

१. आसरा, दाता, सहारा। २. कृपा। ३. दुश्मनी। ४. प्रसन्न। ५. करनी, पूंजी।

१. प्रभ की उसतति करहु संत मीत॥

२. सावधान एकागर चीत॥

३. सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम॥

४. जिसु मनि बसै सु होत निधान॥

५. सरब इछा ताकी पूरन होइ॥

६. प्रधान पुरख प्रगटु सभ लोइ॥

७. सभ ते ऊच पाए असथानु॥

८. बहुरि न होवै आवन जानु॥

९. हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ॥

१०. नानक जिसहि परापति होइ॥ ५॥

१. आओ प्यारे संतों आओ, मालक के गुण गाएं हम।
२. एक खुदा को याद करें, और उस पर ध्यान जमाए हम।
३. 'सुखमनी' जिस में धीर्ज हमद और नाम खुदा का आया है।
४. जिस के मन में बस जाए, गंजीना[१] उस ने पाया है।
५. जो जो मन की ख्वाहिश है, वह हासल करता जाता है।
६. बनता है प्रधान वही, और जग में शुहरत[२] पाता है।
७. सब से आली, सब से ऊंचा, ऐसा रुतबा[३] पाता है।
८. जिस में कायम रहता है, वह आता और न जाता है।
९. 'सुखमनी' ऐसी निआमत[४] है, जो 'नानक' उसको पाएगा।
१०. दौलत रब के नाम की लेकर, वह दुनिया से जायेगा। ५।

१. खजाना (नाम का खज़ाना)। २. कीर्ति, प्रसिद्धता। ३. पदवी। ४ उत्तम वस्तु।

१. खेम सांति रिधि नवनिधि ॥

२. बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥

३. बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥

४. गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥

५. चार पदारथ कमल प्रगास ॥

६. सभ कै मधि सगल ते उदास ॥

७. सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥

८. समदरसी एक द्रिसटेता ॥

९. इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥

१०. गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥ ६ ॥

१. उसको सुख आनन्द मिले, नौ गंजीने[1] दौलत भी।
२. अकल[2] बड़े और इलम[3] बड़े, वह पाए जोर करामत[4] भी।
३. ज्ञान मिले, और जुहद[5] कमाए योग भी रब का ध्यान भी हो।
४. हासल हो इरफान[3] भी उस को पाकीजा इशनान[6] भी हो।
५. चार मुरादें[7], हासल हों, और नूर से मन भरपूर रहे।
६. सब के अन्दर रह कर भी वह लाग लपट से दूर रहे।
७. हुस्न मिले चतुराई भी, और असल हकीकत जाने वह।
८. सब को एक नजर से देखे, सब को यकसां[8] माने वह।
९. 'सुखमनी' दिल से पढ़ने वाला, यह सारे फल पाएगा।
१०. गुर 'नानक' से नाम की महिमा, सुन कर ध्यान जमाएगा। ६।

१. नौ निधा। २. बुधी। ३. ज्ञान। ४. चमत्कार। ५. संजम। ६. पवित्र इश्नान। ७. चार पदार्थ। ८. एक सामान।

१. इह निधानु जपै मनि कोइ ॥

२. सभ जुग महि ताकी गति होइ ॥

३. गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥

४. सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥

५. सगल मतांत केवल हरि नाम ॥

६. गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥

७. कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥

८. संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥

९. जाकै मसतकि करम प्रभि पाए ॥

१०. साध सरणि नानक ते आए ॥ ७ ॥

१. सुखमनी एक खजाना है, जो हाथ में उसको लाएगा।
२. जिस जुग में भी जायेगा, संसार से मुक्ति पाएगा।
३. उस में नाम खुदा का है, तुम हमद[1] उसी का गाओगे।
४. शास्त्रों, स्मृतियों, वेदों सब में नाम यह पाओगे।
५. असल हकीकत[2] नाम है रब का, हर मजहब यह कहता है।
६. सब भगतों के मन अन्दर, नाम खुदा का रहता है।
७. पाप करोड़ों लाखों हों, सब साध की संगत दूर हटाए।
८. संतों की जब कृपा होगी, मौत से भी छुटकारा पाए।
९. भाग हैं जिनके माथे पर, वह खुशकिस्मत कहलाते हैं।
१०. साधों की कृपा से 'नानक' उनके साए[3] में आते हैं। ७।

---

१. उसतति। २. असल सिद्धांत। ३. शरण।

१. जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति॥
२. तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति॥
३. जनम मरन ताका दूखु निवारै॥
४. दुलभ देह ततकाल उधारै॥
५. निरमल सोभा अंम्रित ताकी बानी॥
६. एकु नामु मन माहि समानी॥
७. दूख रोग बिनसे भै भरम॥
८. साध नाम निरमल ताके करम॥
९. सभ ते ऊच ताकी सोभा बनी॥
१०. नानक इह गुणि नामु सुखमनी॥ ८॥ २४॥

१. प्रेम से उन को सुन सुन कर, ज़ो मन उससे आबाद करे।
२. मन में रब को याद करे, वह मन में रब को याद करे।
३. मरने का मन दूर हो उससे, जन्मों का दुःख जायेगा।
४. यह जीवन नायाब[1] है उस का, पल में मुक्ति पाएगा।
५. उस की बोली अमृत है, वह खालस सोभा पाता है।
६. जिसके मन में एक खुदा का, प्यारा नाम समाता है।
७. दुःख जाएं, सब रोग मिटें, शक दूर हों, खुद बेबाक[2] रहे।
८. उस को साधु नाम पढ़े, हर काम में साफ और पाक रहे।
९. सब से ऊंची शान है उसकी, रुतबा उसका आली है।
१०. 'सुखमनी' उसका नाम है 'नानक' यह ऐसी गुणवाली है।८।२४।

-इति-

१. दुर्लभ। २. अल्ग।